

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180582

UNIVERSAL
LIBRARY

“पहाड़ी के उसपार”



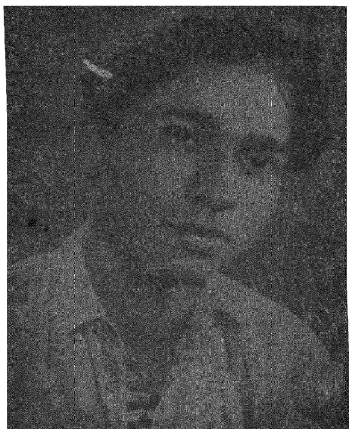
सर्वोदय साहित्य मन्दिर.
हुसैनी अलम रोड, हैदराबाद (५०) में

ओम प्रकाश

प्रकाशक,
हिन्दी प्रकाशन मन्दिर
बनारस [उत्तर प्रदेश]

मूल्य २॥)

मुद्रक—
कला प्रेस,
हीरापुरा [कबीरचौरा] बनारस ।



कथाकार

“इक दिन ऐसा वक्त आयेगा/
जब राजाओं के महलों में
तख्त न होंगे ताज न होंगे
खून कि जिन में बू आती है
वे नीलम पुखराज न होंगे...॥

सर्वजन हिताय ! बहुजन सुखाय !

हिन्दी प्रकाशन मन्दिर ! बनारस

द्वारा प्रकाशित साहित्य

बदनाम गली—श्री गोविन्द सिंह

अधूरी तमन्ना—श्री सोमनाथ

सुवह हो गई— ”

जिन्दगी के मोड़पर— ”

थपेड़े— ”

नीतरागी—श्रीसिद्धविनायक द्विवेदी

धरती रोती है— ”

इन्सान एक पहेली—श्री हरीश

भूखा इन्सान—श्री ओम प्रकाश

फरियादी— ”

उलझन—श्री कमलावति प्रधान

पहाड़ी के उस पार ”

“अगर इन पहाड़ियों पर पाँव फिसल गया, तो जानते हो क्या दशा होगी ?”

“जो दशा तूफान में घिरे हुए एक मल्लाह की होती है ।”

“घिरा हुआ मल्लाह तूफान से निकल सकता है । किन्तु फिसला हुआ पग कभी नहीं सँभल सकता सायलस !—अब भी समय है । रास्ता भयानक है, और तुम—! तुम दो दिन के मेहमान हो—।”

“परन्तु मनुष्य का बड़ा हुआ पग भी तो वापस नहीं जाता ।—लड़ाई का सैनिक मरता है अथवा सफल होता है ।”

“तुम भूल रहे हो !”

“यह मुझे मालूम है ।”

“फिर ?”

“मनुष्य हूँ ।”

“तो ?”

“मानवता का पुजारी हूँ। प्यार करना कोई पाप नहीं... गुनाह नहीं—।
तो फिर मैं क्यों न प्यार करूँ ?”

“दोस्त बनना आसान है सायलस ! किन्तु दोस्ती को निभाना आसान नहीं ।”

“अरूप ! दूध और पानी की दोस्ती तुमने देखी है ? जब दूध से पानी भाप बनकर उड़ जाता है, ता दूध उबलकर आग में जा गिरता है ! जानते हो नदियों और लहरों में भँवर क्यों बनते हैं ?”

“नाव को डुबोने के लिये ।”

“नहीं ! दो प्रेमियों को मिलाने के लिये ।” सायलस ने पहाड़ियों में उतड़ते हुए कहा ।

“शमा और परवाना मिल सकते हैं सायलस ! लेकिन चाँद और चकोर कभी नहीं मिल सकते ।” अरूप के एक एक शब्द में जोर था । जैसे वह अपनी बात का दावा करता हो ।

वह नहीं चाहता था कि सायलस चार हजार फुट ऊँची पहाड़ियों से उतरे और फिर पाँच हजार फुट ऊँची पहाड़ियों पर चढ़कर उस पहाड़ी लड़की से मिले, जिसे वह कभी नहीं पा सकता ।—वह जानता था कि मुहब्बत के पथ पर चलना आसान है किन्तु मुहब्बत की मांजल तक पहुँचना बहुत कठिन है ।—उसने भी मुहब्बत की थी, प्यार किया था, ठोकरें खाई थीं, किन्तु सफल न हो पाया । जीवन की बाजी लगाकर भी वह अपनी प्रेमिका को पा न सका । बादल की भाँति पहाड़ों से टकराकर बरस पड़ा । और अब ? और अब तक वह तड़प रहा है । आँसू बहा रहा है । रो-रो कर चिल्लाता है । लेकिन सब व्यर्थ, बेकार..... उसकी आवाज किसी के कानों तक भी नहीं पहुँच सकती, और वह केवल छुटपटा कर गूँज जाता है । यद्यपि वह यह भी जानता था कि मुहब्बत की नहीं, हो जाती है लेकिन फिर भी वह नहीं चाहता था कि उसका दोस्त भी उसकी ही भाँति जीवन भर

तड़पना रहे ! और अन्त में घुट घुट कर मर जाये ।—वह पेड़ होने से पहले ही पौड़े को उखाड़ देना चाहता था ।

सायलस ने फूल तोड़ते हुये कहा—! “तुम अब बेगम में जाओ अरूप !”

“और तुम लैंसडाउन की हवा खाओ । क्यों यही ना—? लेकिन याद रखो सायलस ! मैं तुम्हारे रास्ते से कांटे हटाऊँगा, कांटे बोऊँगा नहीं ।”

“तुम तो जान का बतंगड़ बना देते हो दोस्त !” सायलस ने हँसते हुये कहा ।

“चाहे जो हो सायलस ! परवाने को जलने में पहले ही शमा को भुझा दो.....”

“तो महफिल में अन्धेरा हो जायेगा—”

“लेकिन किसी की जान तो बच जायेगी !”

“और चाहे वह जीवन भर तड़पता रहे ।” चिल्ला उठा वह ।
“.....!”

अरूप कुछ न बोला । वह जानता था कि सायलस कितना भावुक है । उसे मालूम था कि अगर वह भावनाओं में वह चलेगा तो घंटों पागलों की तरह चिल्लाता रहेगा । समाज को धिक्कारेगा, पूँजीपतियों को गालियाँ निकालेगा और उस समय उसे रोकना उसके बस के बाहर होगा ।

“बोलो ! जीवन भर तड़पना अच्छा है अरूप ! अथवा मरना ?”

“मरना—!”

“तो फिर क्यों तुम एक को भुझाकर दूसरे को तड़पाना चाहते हो—?”

“इसमें दोनों की भलाई है ।”

“क्योंकि दोनों का गन्ता जो घोंटा जा रहा है ।—अरूप ! शायद तुमने कर्मा मुहब्बत नहीं की ।”

“अगर मुहब्बत न की होती तो तुम्हें गैकता न !”

“अगर तुमने की होती अरूप ! तो मुझे जाने देते, जोंक की भाँति मुझसे चिपके न रहते । अगर तुमने कभी प्यार किया होता, तो तुम मेरे दिल को जान सकते । और मुझे सहारा देकर इन आकाश से चूमती पहाड़ियों से नीचे उतारते, न कि मेरे अरमानों का खून करके मेरी हसरतों का गला घोटने की कोशिश करते ।—जीवन में पहली बार मैंने मुहब्बत के पथ पर कदम रखा है अरूप ! और.....”

“और इमीलिये मैं तुम्हें रोक रहा हूँ ।” बाच ही में बोल उठा अरूप ।

“जानेवाले को कोई नहीं रोक सकता ।”

‘किन्तु समझा सकता है ।’

“कर्त्तव्य के आगे नहीं ।”

“.....।”

“चुप क्यों हो गये अरूप ?”

‘इसका जवाब फिर कभी दूँगा ।’

“अच्छा ! तुम जाओ और मे थोड़ी देर में लौटकर आता हूँ ।”

सायलस धीरे धीरे पहाड़ियों से उतरने लगा और अरूप खड़ा देखता रहा ।

वह जा रहा था चार हजार फुट नीचे खाई की ओर, और उमकी मंजिल अभी पाँच हजार फुट ऊँची थी— वह वहाँ जा रहा था ।

उसे नहीं मालूम था कि वह वहाँ ठहर भी सकेगा या लहर की तरह टकरा कर वापस लौट आयेगा ।

अरूप ने एक बार चारों ओर ऊँची ऊँची भयानक पहाड़ियों को देखा और फिर लौट पड़ा अपने बेरक की ओर—!!!



“आह.....!”

“फिन्दा.....! फिन्दा.....!”

“क्या हुआ आमी-?”

“अरे इधर तो आ फिन्दा-! जल्दी दौड़.....! दौड़ फिन्दा!”

“क्या हो गया-? जो इतना चिल्ला रही है!” फिन्दा ने आते हुये कहा।

“वह.....वह देख फिन्दा ! कौन गिरा है-?...जल्दी आ-!”

“कैसे गिर गया-?” उसने पाम आते हुये पूछा।

“चढ़ रहा था बेचारा !—पाँव फिसल गया होगा.....जल्दी चल नीचे।”

“जाने दो ! हमें क्या पड़ी है-?”

“फिन्दा !” चीख उठी आमी ! “तेरे सीने में दिल नहीं पत्थर है।

“.....देख तो सही, वह लुढ़कता हुआ नीचे जा रहा है, और तू कह रही है हम क्या पड़ी है—?”

“हम लड़कियाँ हैं आमी ! किसी अपरिचित मनुष्य के पास कैसे जा सकती हैं ?”

“तुम्हें चलना ही होगा फिन्दा ! नहीं तो शायद वह यहीं मर जाये !” आमी ने उसका हाथ पकड़ते हुये कहा—! “चल तुम्हें मेरी कसम है फिन्दा ! ऐसी बेरहम न बन.....! अगर दिल साफ़ है तो दुनिया हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती.....! और फिर वह पहाड़ों के दामन में गिरा है !”

“अच्छा चल आमी ! लेकिन अगर किसीने कुछ कहा तो मैं तेरा ही नाम लगा दूँगी—!”

“अच्छा”

दोनों पहाड़ी अलटु जवानियाँ, पहाड़ों के पत्थरों पर पग रखती हुई नीची उतरने लगीं ।.....युवक चार हजार फुट नीचे गहराई में गिरा कराह रहा था—माथा फूट चुका था और अब जिसमें से गरम गरम खून निकल कर नीचे बहते सोते के पानी में मिल रहा था ।

युवक की दशा देखते ही फिन्दा के अधरों से धीरे से फूट पड़ा—!

“ओफ—!”

जा बैठी उसके पासवह पहाड़ी लड़की ! जिस के हृदय में कोई कपट न था.....बेइमानी न थी.....बेवफाई और धोखेबाजी न थी । जिसका दिल प्यार करना जानता था, किन्तु पवित्र ।—पहाड़ की निर्मल वायु में पनी जवानी, जिस पर शहर की गन्दगी की छाया मात्र न पड़ी थी । जो जवान थी परन्तु जवानी का नाजायज लाभ न उठाना जानती थी । जिसके दिल में उलफत का तूफान हिचकोले खाता था मगर फिर भी वह उसमें डूबना न जानती थी.....!

युवक का माथा सीधा करते ही चौंक पड़ी वह—!

“अरे ! यह तो बेहोश है आमी ! जल्दी से किसी चीज में पानी ला !”

आमी ने सांते के ठंढे पानी से उसके मुँह पर छींटे देने शुरू किये, और फिन्दा ने उसके जख्मों को धोकर डुपट्टे से उसके माथे को बाँध दिया ।

थोड़ी देर के बाद युवक का शरीर हिला और साथ ही फिन्दा के होंठों पर मुस्कान नाच उठी । आमी आश्चर्य से देख रही थी फिन्दा की आँखों को, जिसका दूध पियल कर आँसूओं के रूप में बाहर आ चुका था ।— पत्थर दिल लड़की मोम भी हो सकती है, यह आमी को आज मालूम हुआ था ।

वह चंचल जरूर थी किन्तु उसका मन चंचल न था ।—पहाड़ी लड़कियों में वह रानी गिनो जाती थी । प्रत्येक बूढ़ा व्यक्ति उसे प्यार की दृष्टि से देखता था । और हर जवान उसे अपनी आगोश में सुलाना चाहता था ।—उसका बाप पहाड़ी इलाके का सरदार था, और भाई माना हुआ गुन्डा, जिसके खंजर से सारा इलाका काँपता था—! उसकी बहन एक अनजान व्यक्ति के सिरहाने बैठी उसके जख्मों को सुखाने की कोशिश कर रही थी ।

क्यों ?

क्योंकि वह पहाड़ों के दामन में गिरा था । समथर मैदान अथवा जंगल में नहीं—! वह गरीबों की बस्ती में गिरा था, अमीरों की इमारतों के नीचे नहीं—! क्योंकि वह समाज की नींव कहलाने वाले ब्राह्मणों के समक्ष पड़ा था, समाज के ठेकेदारों के सामने नहीं ।

फिन्दा ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, किन्तु कुछ कह न सकी । उसके गुलाबी कपोल मदहोश शब्द उगल न सके । वह सोचने लगी—! “किस नाम में बुलाये —? क्या कहे —? कैसे कहे —!” उसके सामने

प्रश्नों का अन्धरा सा लगा जा रहा था। परन्तु उत्तर किसी का भी नहीं मिल रहा था।

फिन्दा सोच ही रही थी कि युवक ने धीरे से एक करवट ली, और दूसरे ही क्षण उमका जख्मी सिर जा पड़ा फिन्दा के मुलायम जाघों पर.....। एक बिजली सी दौड़ पड़ी फिन्दा के शरीर में और साथ ही युवक भी चौंक पड़ा।

धीरे से आँखें खोली। फिन्दा और आमी को देख आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले कि वह कुछ कहता, फिन्दा के मुँह से निकल पड़ा—!

“आ.....प—!”

“.....!”

वह एक टक दोनों की ओर देख रहा था। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

“आप.....यहाँ.....!” फिन्दा की आवाज गले में ही फँसी जा रही थी।

“मैं.....मैं.....यह.....हाँ.....आ.....प.....!” युवक ने लड़खड़ाती आवाज से कहा—! “आप.....कौ.....कौन.....है.....आह.....!” पीड़ा से कराह उठा युवक।

“आप !.....पहाड़ी से गिर पड़े थे—!”

“आह—!” युवक ने उठने की कोशिश की किन्तु उठ न सका। फिर गिर गया उसकी गोद में।

“आपको चोट ज्यादा लगी है.....उठिये नहीं।”

“मुझे.....मुझे जाना.....है।” युवक ने सिर को पकड़े एक बार पुनः उठने की कोशिश की।

“अभी आप लेटे रहे।”

“आह.....आह.....!” युवक तड़प उठा पीड़ा में।

आमी ने देखा फिन्दा की आँखों से दो बूँद आँसू गिर पड़े और साथ ही चौंककर युवक ने आँखें खोल दी।

फिन्दा ने दूसरी ओर मुँह फेर लिया। ताकि युवक देख न ले।

“आ.....आप.....!”

“जी.....! आप ज्यादा न बोलिये!” बीच ही में फिन्दा ने बात को काटते हुए कहा— “आपका घाव बहुत गहरा.....”

तभी ऊपर से आवाज आई—!

“फिन्दा—! ओ फिन्दा—!”

“यह तो बापू की आवाज है—! अब क्या होगा आमी—? बोल—! अगर बापू ने पूछा तो क्या जवाब दूँगी—?”

“फिन—दा—!” एक लम्बी आवाज फिर आई।

“आई बापू—!” फिन्दा ने भी लम्बी आवाज लगाई।

“नीचे क्या कर रही है—?”

“कुछ.....कुछ नहीं बापू—! अभी आई।”

ऊपर बापू लाल लाल आँखें निकाले खड़ा था। फिन्दा को देखते ही गरज उठा।

“इस समय नीचे क्या करने गई थी—?”

“कुछ.....कुछ नहीं.....बापू.....कुछ.....वह..... वह.....!” फिन्दा बुरी तरह काँप रही थी। डर से उसकी आवाज फँसी जा रही थी। वह उसके क्रोध को जानती थी, कि अगर उसे गुस्सा आ गया तो वह उसे इस चार हजार फुट नीचे फेंकने से भी गुरेज न करेगा।

“वह क्या कमीनी—? देखती नहीं, सूरज डूबने को आया है, और तू इतने नीचे अकेली गई है।—और यह तेरे पाँव क्यों काँप रहे हैं—? तेरा ड्रपेट्टा कहाँ है—? सच बता फिन्दा! नहीं तो तुझे भी शामी की तरह इन पहाड़ियों से नीचे फेंक दूँगा।”

“बापू—!” बिलख उठी फिन्दा ।

शामी का नाम सुनते ही सिहर उठी वह ।

—शामी उसकी बड़ी बहन थी । बिल्कुल उसीकी तरह हसीन नाजनीन ।—बापू उसे अपनी जान से भी अधिक प्यार करता था । किन्तु उसी बाप ने अपने सीने पर पत्थर रखकर उसे उल्लास दिया इन चार हजार फुट ऊँची पहाड़ियों से नीचे ।—क्यों—? क्योंकि वह प्यार करती थी..... मोहब्बत करती थी । एक पहाड़ी से नहीं बल्कि एक शहरी युवक से । उनकी यह मोहब्बत कब से चली आ रही थी, किसी को खबर तक न थी—वे कितनों दिनों से एक दूसरे से शिकवा-शिकायत करते चले आ रहे थे, इसका किसी को पता तक न था—किन्तु

किन्तु एक दिन—?

जब कि शामी युवक की आगोश में पड़ी उसके गले में बाहें डालें मुकुरा रही थी..... जब कि दोनों एक दूसरे को अपने दिल के दरवाजे खोल के दिखा रहे थे—तो—बापू ने उन्हें देख लिया ।—वह किसी काम से नीचे जा रहे थे कि उनके कान में किसी के खिलखिलाने की आवाज आई । आवाजें दो थीं । एक मर्द की और दूसरी औरत की ।—उन्हें शक हुआ । और उनके कदम उस आवाज की ओर बढ़ गये । अभी वह थोड़ी दूर ही गये होंगे कि उनकी नजर शामी पर पड़ी जो युवक से बुरी तरह चिपकी हँस रही थी ।—बापू पर जैसे सैकड़ों पहाड़ एक साथ गिर पड़े हों । उनका जी चाहा कि वह दोनों की गरदन एक साथ काट दे और इसी जमीन में दफना दे ।—लेकिन फिर यह सोचकर कि पहले अपने घर में निराग जलाना चाहिये, उन्हीं पाँव वापस आ गये ।—और उस समय भी उन्होंने इसी तरह प्यार से पुकारा था, जिस तरह आज फिन्दा को पुकारा है ।

शामी यह कहते हुए ऊपर दौड़ी—!

“आप यहीं रहिये । मैं अभी बापू की आवाज सुनकर आई ।”

मगर जब ऊपर आई तो बापू की लाल-लाल आँखों को देखकर सहम गई। बापू का शरीर क्रोध से काँप रहा था और उसकी आवाज कह रही थी—!

“शायद तू भूल गई थी शामी ! कि तू एक सरदार की बेटी है, जिसके नाम से हजारों मील का इलाका थरथर काँपता है ।—जिसके खानदान की ओर कोई आँख तक भी उठाकर देखने का साहस नहीं कर सकता—! और आज उसी खानदान की लड़की एक शहरी की आगोश.....

“बापू !” चीखती हुई जा लिपटी शामी बापू के पैरों से ।

“हट जा बेशर्म !” बापू ने ठोकर से उसे हटाते हुए कहा—! “मैं इस इलाके का सरदार हूँ शामी ! जो अपनी रियाया के साथ इन्साफ करता है । मेरे लिये सब एक बराबर हैं ।—चाहे मेरी स्वयं की ही औताद क्यों न हो, अगर वह भी गलत रास्ते पर चलती है तो मैं उसे भी सजा देने से गुरेज न करूँगा ।—क्या भूल गई गहरू की बेटी को—? जो शादी से पहले ही माँ बन गई थी । और जब इसका इन्साफ मुझसे कराया गया तो मैंने उसे जिन्दा गड़वा देने की सजा दी थी ।”

“बापू !”

लेकिन वह कहे जा रहा था—!

“और आज तूने भी अपना कदम गलत रास्ते की ओर उठाया है । लेकिन याद रख मैं इन पैरों को रास्ते पर पड़ने से पहले ही काटकर अलग कर दूँगा—! आज तू ने भी वही काम किया है । और तू भी आज नहीं तो कल एक पाप की गठड़ी को उठाती फिरेगी ।—मैं नहीं चाहता कि कोई इस भोंपड़ी की ओर उँगली उठाकर थूके ।”

“मुझे माफ कर दो बापू ।”

“माफ—? पापी को माफ करना सबसे बड़ा पाप है शामी ! जिसका दाग आजीवन नहीं छुट सकता ।

“तुम्हें...मालूम नहीं था बापू।”

“और अब तुम्हें मालूम हो जायेगा-!” और दूसरे ही क्षण शामी का शरीर सरदार की हथेली पर नाच उठा।

“बा—पू-!” चोख उठी शामी।

किन्तु उसकी जलती आवाज कह रही थी।

“आज दुनिया को मालूम हो जायेगा कि सरदार का इन्साफ, इन्साफ होता है—वह मोहब्बत के पौछे इन्मानियत को नहीं बेचता!”

बापू के दोनों हाथ ऊपर उठे—

शामी चोख उठी—

किन्तु उठा हाथ रुका नहीं—

और...?

और दूसरे ही क्षण शामी का शरीर लुढ़कने लगा भयानक चट्टानों पर।

सरदार ने अपनी संतान की खून से न्याय की वेदी बनाई।

फिर बापू नीचे की ओर लपका। वह उस युवक को भी जिन्दा जला दना चाहता था, जिसने उसके घर को जलाकर राख कर दिया था—पर—जब वह नीचे पहुँचा तो देखा कि शामी गायब थी। मुड़कर देखा कि युवक शामी की लाश को उठाये भागा चला जा रहा था। ॥४॥

सिर चकराने लगा फिन्दा का यह शोचकर।

“धोलती क्यों नहीं फिन्दा-?” बापू ने उसकी गरदन पकड़ ली।

“वह...वह...गिर गये...थे बापू।” फिन्दा का साँस रुका जा रहा था।

नोट—“शामी को अहानी हर दिल को रुला देने वाली कहानी है.....उस युवक का जिन्दगी आप का अपनी जिन्दगी लगेगी—जिस आप “नया मोड़” में पढ़िये।”

“कौन—?”

“कोई...राही—!”

“कोई राही—?” बापू ने गरदन छोड़ दी—! “कैसे गिर गया—? कहाँ है?”

“नीचे बेहोश पड़ा है। आमी भी वहीं हैं।”

“चल मैं भी देखूँ?” बापू ने नीचे उतरते हुए कहा—“तूने पहले ही क्यों न बताया बेटी—!”

“मुझे डर.....”

“पगली कहीं की—! हम पहाड़ी हैं बेटी! हमारा धर्म ही लोगों की सेवा करना है। अगर हमारा दुश्मन भी इन पहाड़ों के दामन में गिरता है, तो हमें उसे भी बचाना चाहिये!”

फिन्दा के अधरों पर मुस्कान नाच उठी।

युवक के पास पहुँचकर बापूने धीरे से पुकारा—! “राही—!”

युवक ने आँखें खोली—! “आप...आप कौन हैं—?”

“मैं यहाँ का सरदार हूँ राही। चलो हमारी भोंपड़ी में।”

“कहाँ—?”

“ऊपर—।”

युवक ने उठने की चेष्टा की किन्तु उठ न सका कमर पर काफी चोट आई थी।

“आह—!...आप...जाइये...।”

“यह नहीं हो सकता राही!” सरदार की आवाज थी—! “हम लोग गरीब जरूर हैं लेकिन मानवताहीन नहीं हैं।—यह कैसे हो सकता है कि कोई मुसाफिर नीचे पड़ा कराह रहा हो और उस इलाके का सरदार चैन से सोये?—अगर तुम नहीं उठ सकते तो आओ मैं तुम्हें उठाकर ले चलता हूँ—!”

सरदार ने उसे अपनी पीठ पर लाद लिया और चल दिया अपनी भोंपड़ी की ओर।

छोटी सी भोंपड़ी पहाड़ों की चट्टानों पर सोई पड़ी थी। कोने में एक दिया जाने किस जमाने में जलता चला आ रहा था, जिसकी रोशनी में अपने मरदार के साथ ही साथ बूढ़ी होती जा रही थी। जिसकी लौ बहुत पहले बुझ चुकी थी किन्तु फिर जल उठी—। घर की मालकिन के जाते ही वहाँ घटायेप अधेरा हो गया था। परन्तु फिन्दा की जवानी के साथ ही धीरे धीरे वह अन्धकार हटने लगा। और अब वहाँ उजाला था, रोशनी थी, मादकता थी।

युवक चारपाई पर लेटा था और फिन्दा उसके सिरहाने बैठी भगवानसं दुआ कर रही थी।

शाम की लालिमा धीमे-धीमे रात की कालिमा में परिवर्तित होती जा रही थी—। गगन पर पूनम का चाँद मुस्कुरा उठा, सितारे नाच उठे, और वायु पायलो की भुंकार के साथ बढ़ चली।

पहाड़ी इलाका शान्त मुद्रा में सो रहा था—चारों ओर पूर्ण खामोशी थी। रजनी अपने खेमों को फैलाये चली जा रही थी।

युवक रह रह कर उसकी ओर देखता, और जब कभी फिन्दा की आँखें उसकी आँखों को चूम लेती, तो पलकें अपना दामन उनपर फैला देतीं।—दो दिल पास रहकर भी खामोश थे।—महफिल में शमा थी—परवाना था, मगर—उन दोनों के बीच लाज की दीवार थी—शर्म का परदा था, जिसे न तो युवक ही उठा सकता था और न वह मासूम पहाड़ी लड़की ही।

अन्त में शान्ति को भंग करते हुए धीरेसे युवक ने कहा—
“पानी—!”

फिन्दा उठी और गिलास में पानी ले आई—“लीजिये—!”

युवक ने बड़ी मुश्किल से उठकर उसके हाथ से गिलाम थामा, और अनायास ही उसकी उँगलियाँ फिन्दा की उँगलियों से मिस कर गईं—

दोनों की आँखें मिलीं—

दिल धधक उठा—

और.....

फिर वही लाज...शर्म...

पलकें पुनः झुक गईं ।

युवक ने लेटते हुये कहा—! “मेरे लिये आप लोगो को कितना कष्ट उठाना पड़ा—!”

“कैसा कष्ट—?” मीठी आवाज उठी । युवक को लगा जैसे किसी ने उसके कानों में मीठा शर्बत उडेल दिया हो और जो उसके गले में होना हुआ उसके सीने में चला गया हो ।

“आप लोगोंके अहसान को मैं कभी नहीं भूल सकता ।”

“यह तो इन्सान का फर्ज है । इसमें अहसान की कौन सी बात—!”

“अगर आप न आते तो शायद...मैं इन्हीं पत्थरों पर ही पड़ा रह जाता ।”

“अगर नाव को कोई डुबोने आता है तो उसे बचाने वाला भी कोई आही जाता है ।” एक मधुर मुस्कान नाच उठी उसके अधरो पर ।

“.....”

युवक देखता रहा उसकी ओर ।

“अब आप सो जाइये । देखिए कितनी रात बीत चुकी है ।”

“.....”

“आप मेरी ओर क्या देख रहे हैं—?” उसने शर्माते हुए कहा ।

“जी—!” चौंक पड़ा युवक । जाने क्या सोच रहा था ।

“अब आप सो जाइये—।”

“जी...अच्छा।” युवक कहना तो चाहता था कि नींद नहीं आती।
पर कह न सका। और कह सका तो केवल “अच्छा।”

युवक लेटा ही लेटा जाने कब नींद की आगोश में चला गया।

फिन्दा भी जमीन पर बैठी दीवार का सहारा लिये सो गई।

दिया वैसे ही जल रहा था।

सब सो रहे थे।



“क्यों, क्या सोच रहे हो—?”

“ऐ—?” चौक पड़ा वह।

“अरे मैंने कहा ! बड़ी मनहूस सी सूरत बना रखी है।”

“क्या बताऊँ अरूप !” एक ठंडी साँस लेते हुए कहा उसने—
“तुम तो जानते ही हो।”

“हाँ ! जानता हूँ कि तुम्हें चोट बहुत गहरी लगी है।—इतनी गहरी कि जिसका घाव जिन्दगी भर नहीं भर सकता।”

“लेकिन फिर भी वह मीठी चोट थी अरूप !”

“जिसके अन्दर जहर भरा है।” अरूप ने जलते हुये दिल से कहा—! “जिस चोट को आज तुम मीठी चोट कह रहे हो सायलस !

न उसीको तुम कड़वी और जहरीली कहोगे—। जिसे आज तुमने शर्वत जानकर पिया है, वह धीरे धीरे तुम्हारे पेट में जहर बनता जा रहा है और उसी जहर की पीड़ा से एक दिन तुम तड़पोगे..... चिल्लाओगे, मगर वह जहर तुम्हारे पेट से निकल न पायेगा—! हसीन वादियों के बाद

भयानक खाइयाँ भी होती हैं सायलस !—बरखी ऊपर जाने के बाद उतनी ही तेजी से नीचे भी उतरती है !”

“मगर प्यार की पतंग ऊपर ही उड़ती जाती है ।”

“मानव यही सोचता है । किन्तु संसार मानव के मस्तिष्क से कहीं बड़ा है । जिसकी कल्पना माध्र करना मनुष्य के बस के बाहर की बात है ।—द्वितिज देखने को बहुत पास लगता है, लेकिन ज्यों ज्यों उसकी ओर बढ़ते जाओ वह और भी दूर भागता जाता है । जानते हो ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि व्यक्ति देखना जानता है, समझना नहीं ।”

“तुम भी कभी कभी कैसी बातें करने लगते हो अरूप ! आखिर ठहरे तो आधे पागल ही—! लेखक आधे पागल नहीं तो और क्या होते हैं—! जरा सी किसी ने बात छेड़ दी बस—! लगे भावनाओं का पुल बाँधने । अरे इन पहाड़ियों पर मौज ही तो उड़ाने आये हैं हम लोग ।”

“मजाक ही कभी कभी हकीकत हो जाती है सायलस !”

“मैं उस रास्ते पर जाही नहीं सकता, जिसकी मंजिल हकीकत में हो ।”

“आकाश में उड़ने वाला आजाद पंछी, जमीन के गन्दे नाले में रेंगने वाले कीड़े के दर्द को नहीं जान सकता ।—कोयल की कूक और पपिहे की पी-पी तो वे ही जान सकते हैं, जो दिन रात बिरहा की आग में जलते रहते हैं । जो रात की कालिमा में पूनम के चाँद को निहारते हुये सबेरा कर देते हैं ।”

“अरूप ! क्या तुम बता सकते हो कि परवाना जलना नहीं चाहता, लेकिन जल क्यों जाता है—?”

“क्योंकि मोहब्बत की नहीं जाती हो जाती है ।”

“खैर छोड़ो भी इन सब बातों को । चलो कहीं घूमने चलें ।”
सायलस ने अन्त में खिजलाते हुए कहा ।

लेकिन अरूप कब मानने वाला ! उसने एक और बोली कसतेहुये

कहा—! “पहली चोट का दर्द तो अभी गया ही नहीं, फिर दूसरी चोट खाना चाहते हो—?”

“चोट खाकर ही इन्सान कामयाब होता है।”

“वैर ! चलो—!”

दोनों चल दिये ऊँचे नीचे पहाड़ों पर पाँव रखते हुये।

×

×

×

वह अपनी भोपड़ी के सामने रोज की तरह खड़ी थी। चोली और लहंगा पहने अपने हुस्न का दावा कर रही थी। लाल रंग का खूनी दुपट्टा उसके वस्त्रों से बुरी तरह चिपका पड़ा था।

दोनों की आँखें मिली।

दिल मिले।

पलकें झुकीं।

और साथ ही उसके अधरों पर मुस्कान नाच उठी।

मायलस वहीं एक पेड़ के सहारे खड़ा हो गया। उसके कदम जम कर रह गये। एकटक उसकी सुन्दरता को निहारता रहा.....देखती रही वह भी और मुस्कुराते रहे दोनों के होंठ—!

“कितने भोले होते हैं पहाड़ के लोग—?” वह सोच रहा था—।
“जिन्हें शहर की गन्दगी छूती तक नहीं। जो प्यार करते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि प्यार कहते किसे है—? मोहब्बत का दूसरा नाम क्या है—? वे सबको एक समान समझते हैं। चाहे कोई उनका सब कुछ लूट कर ही क्यों न ले जाये किन्तु वे ओफ तक नहीं करते.....उनकी अज्ञान से आद तक नहीं निकलती।”

वह उम समय चौंका जब कि वह नीचे की ओर बढ़ी।

वह देगता रहा—

वह उतरती रही—।

और उसकी पलकें उस समय झुकीं जब वह आँखों से ओभल हो गई ।

एक तूफान सा उठ खड़ा हुआ उसके सीने में । जैसे वह हकीकत नहीं, कोई सपना देख रहा हो—! उसका भविष्य उसे अंधकार में दिखाई देने लगा—! उसे लगा जैसे एक दिन सचमुच वह उससे बहुत दूर चली जायेगी । इतनी दूर कि जहाँ से वह उसे कभी देख भी नहीं सकता । और उसके बाद—!

उसके बाद वह मोहब्बत की आग में जलता रहेगा.....तड़पता रहेगा.....और अपनी मोहब्बत के खँड़हर पर आँसू बहाता रहेगा ।

“अरूप !” उसके मुँह से एक हल्की चीख निकल पड़ी—! “तुम सच कहते.....ऐं.....! अरूप—!” सायलस ने मुड़कर देखा अरूप जा चुका था और अब उस वीरान इलाके में अकेला वहीं खड़ा था—केवल वह था और उसकी तनहाई ।

“क्या कभी ऐसा भी हो सकता है, जब कि वह इस दुनिया में अकेला रह जाये—? उसकी आवाज को कोई सुनने वाला न हो—।..... नहीं.....नहीं वह ऐसा कभी नहीं होने देगा.....। वह अकेला कभी इस दुनिया में नहीं रह सकता.....उसे किसी को अपना साथी बनाना ही होगा, जो उसकी जीवन नौका को किनारे तक ले जा सके ।... वह उसे अपना बनाकर ही रहेगा.....अगर समाज उसके खिलाफ तूफान बनकर आयेगा तो वह उसे अपनी आगोश में छुपाकर भाग जायेगा..... दूर—बहुत दूर चला जायेगा, जहाँ समाज की छ़ाया तक भी न पहुँच सके ।

और वह तेजी से उसके पीछे दौड़ पड़ा ।

उसे आते देख वह एक पेड़ के पीछे छुप गई । और जब सायलस

ने वहाँ किसी को न पाया तो चकपका सा गया—! “जरूर कोई सपना ही था—!” फिर स्वयं ही बड़बड़ा उठा—! “लेकिन वह मेरे सामने ही तो अभी अभी इधर आई थी..... मेरी आँखें कभी धोखा नहीं खा सकती.....!”

वह आश्चर्य से इधर उधर देख ही रहा था, कि तभी पीछे से किसी की मीठी आवाज ने उसे चौंका दिया—!

“आप..... किसे खोज रहे हैं?”

“जो.....?” सायलस धवड़ा गया एकाएक आवाज सुनकर—! “जी..... किसी को..... नहीं!” बड़ी मुश्किल से कह पाया। उसका जी चाहा कि वह दौड़ कर दोनों हाथ से उसका गला दबाकर पूछे कि वह हकीकत है या सपना—? अगर हकीकत है तो क्या वह रह-रह कर छुप जाती है—?” लेकिन वह कुछ भी न कह सका।

“आप धवड़ाये हुये से क्यों हैं—?” उसने सामने आते हुये पूछा।

“जी..... नहीं तो.....”

“आपका कुछ खो गया है क्या यहाँ—?” उसने हँसी को दबाते हुये फिर पूछा।

“जी हाँ!” उसमें कुछ साहस हुआ—! “बहुत कीमती चीज खो गई है!”

“पहाड़ी इलाका बहुत खराब होता है। अपनी चीजों को संभाल कर चला करिये!” वह बैठ गई पास ही पड़े एक पत्थर पर।

“.....!”

सायलस ने कोई जवाब न दिया। एकटक देखता रहा उसे।

“बैठ जाइये।” नयनों का तीर चलाती हुई बोली वह।

और सायलस उस तीर से घायल हो उसके पास ही बैठ गया।

“अब आपकी दर्द कैसी है—?” मुस्कुगते हुये पूछा उसने

“इस समय तो बिल्कुल ठीक है।” सायलस ने उस की आँखों में आँखें डालते हुये कहा।

“आपने अपना नाम तो बताया ही नहीं!” भोली सूरत बनाते हुये कहः उसने।

“मुझे सायलस कहते हैं।”

“सायलस—?” उसने दोहराया—! “कितना सुन्दर नाम है—?”

“और.....आ.....पका—?”

“फिन्दा।”

“फिन्दा—? कितना प्यारा नाम है?”

एक बार फिर दोनों की पुतलियाँ मिली और अघर मुस्कुरा उठे।

“जाने आपमें कौन सा जादू है कि जी चाहता है कि हमेशा आपसे इसी तरह बातें करती ही रहूँ।”

“यही तो मैं, आपसे पूछना चाहता हूँ।”

“आप तो मजाक करते हैं।”

“बिल्कुल नहीं!” सायलस और पास खिसक गया।

“आप रहते कहाँ हैं—?” उसने बात को बदलते हुये कहा।

“बहुत दूर! शहर में!”

“आपका शहर हमारे इलाके से अच्छा है—?”

“बहुत अच्छा! लम्बी चौड़ी सड़कें..... ऊँची उँची इमारतें.....

सिनेमा हाउस..... थियेटर घर..... मोटर गाड़ी..... और.....

“और ऐसे ऐसे पहाड़ भी.....? ऐसे हरे हरे लहलहाते पेड़ भी—?”

“नहीं—?”

“तब तो मुझे भी अपना शहर दिखला दीजिये। क्यों ले चलियेगा न अपने शहर में—?”

“नहीं.....!”

“नहीं—?” बिजली सी गिर पड़ी उस पर—? “क्यों—?”

“क्योंकि वहाँ पर जा कर हर वस्तु बदल जाती है।—शहर में कभी न जाना फिन्दा ! वहाँ के लोग बड़े खराब होते हैं.....वहाँ मानवता ठाकरें खाती है.....मोहब्बत दरवाजे-दरवाजे भीख माँगती हैं—! शहर से कहीं अच्छा तुम्हारा यह इलाका है फिन्दा ! उन ऊँची ऊँची इमारतों से कहीं अच्छे ये लहलहाते पेड़ हैं । जहाँ दो दिल आजादी से मिल तो सकते हैं.....जहाँ समाज की हथकड़ियाँ दोनों को जकड़ तो नहीं लेती..... और जहाँ गरीबी और अमीरी का कोई कानून तो नहीं होता—!”

“आप ही तो कह रहे थे कि शहर बहुत अच्छा है।” उसने ललचाई आँखों से देखते हुये कहा ।

“मैं भूल गया था फिन्दा !—शहर की रेंगीनियाँ हैवानियत को पैदा करती हैं.....वहाँ प्यार नहीं होता हवश होती है.....वहाँ इन्सान नहीं, इन्सान की दौलत से प्रेम करते हैं—! भूल कर भी वहाँ मत जाना फिन्दा ! तुम्हें मेरी कसम है, वहाँ मनुष्य अपना सब कुछ खो बैठता है !—वहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं तुम्हारे हुस्न की जरूरत है । वहाँ मोहब्बत बेची और खरीदी जाती है.....उलफत का नंगा ढाँचा सरेआज़ार में बिकता है.....!”

“इतना खराब होता है शहर—?”

“नहीं ! इससे भी खराब । वहाँ बनावटी प्रेम होता है.....बनावटी खूबसूरती होती है.....सब कुछ वहाँ बनावटी होता है !—वहाँ मानवता का खून होता है.....अपने पेट के लिये दूसरे का पेट चीरते हैं—! समाज के ठेकेदार अपने बंगलों की नींव हमारे और तुम्हारे खून से बनाते हैं वहाँ के गरीब रोते रोते मर जाते हैं । उनके नंगे बच्चे भूख और बिमारी से तड़प तड़प कर जान दे देते हैं.....और यहाँ तक कि उनके माँ बाप के पास इतना पैसा तक नहीं होता कि वे अपनी मरी संतानों के लिये कफन तक खरीद सकें । लेकिन पंखों के नीचे सोने वालों के कानों

में जूँ तक नहीं रेंगती.....वे उनकी चीखों को सुनते हुये भी बहरे से हो जाते हैं.....क्या तुम ऐसी जगह जाना पसंद करोगी —?

“.....!”

“बोलो फिन्दा ! क्या तुम यह सब देख सकोगी—?”

“नहीं—!” उसके अंधरों से अनायास ही निकल पड़ा ।

धीरे धीरे सूर्य की किरणें पहाड़ों की चोटियों के पीछे छुपती जा रही थी । घाटियों में अँधेरा होता जा रहा था । दोनों चुपचाप विचारों में डूबे बैठे थे ।

एकाएक फिन्दा चौंक पड़ी बढ़ते हुये अँधेरे को देखकर । शान्त वातावरण को तोड़ते हुये उसने कहा—!

“अच्छा ! अब मैं चलती हूँ—!”

“जाने को कैसे कह दूँ—?”

“जी तो नहीं चाहता, किन्तु देखिये अँधेरा होता जा रहा है, अगर बापू आगये तो.....अच्छा.....!” फिन्दा के पैर ऊपर की ओर बढ़ चले ।

“अब कब मिलियेगा ?”

“कल इसी समय.....यही !”

फिन्दा तेजी से भागी चली जा रही थी । सायलस खड़ा देखता रहा—सोचता रहा.....और अँधेरा बढ़ता ही रहा !



उने इसी काम में मजा आता था।

दिन भर जूआ खेलना और रात को शराब के अड्डे पर जाकर बोटलों को खाली करना। यह मनुष्य होते हुए भी मानवता को गँवाकर दानवता को अपना रहा था। उसका बाप इलाके का सरदार था, पंचायत का सर-पंच माना जाता था। और उसका बेग एक शराबी, नशेवाज।

इलाके की कोई ऐसी हसीन लड़की न थी, जिसने रात भर उसके पहलुओं को गरम न किया हो...हर नई रात आते ही नई युवती उसकी गोद में जा बैठती, और सुबह होते ही वह उसे फूल की तरह मसल कर फेंक देता...। जैसे एक ही रात में उसकी तमाम सुन्दरता नष्ट हो गई हो— उसकी ब्रवानी समाप्त हो गई हो, उसके होंठों का रस जहर में परिवर्तित हो गया हो, अब केवल वह मुर्झाये हुये फूल की भान्ति रह गई हो...। जाने उसने कितनों के मुलायम होठों को चूस कर निरसमय कर दिया होगा...। कितनों को शादी से पहले ही माँ बनने पर मजबूर किया होगा। किन्तु किसी ने उसके खिलाफ आवाज तक न उठाई। क्योंकि जिसका बाप

इलाके का सरदार और पंचायत का सरपंच था। फिर किसके समक्ष अपनी दर्दनाक फरियाद को रखते—? परन्तु किसी को यह ज्ञान न था कि उसका बेटा माना हुआ गुण्डा, आवारा, और बदमाश हो सकता है, उसका बाप बहुत बड़ा शरीफ रहमदिल भी हो सकता है।—वे तो यही समझते थे कि आवारा और बदमाश घर की औलाद ही आवारा और बदमाश ही होती है। शरीफ घर की औलाद भी बदमाश निकल सकती है, इस बात का उन्हें ज्ञान न था।

वह लोगों पर अत्याचार करता रहा और लोग केवल सिसकियाँ ही भरते रहे।—उसे जब भी रुपये की आवश्यकता होती, देखते किसी भी मकान में घुस जाता, और उसकी तिजोड़ी को खाली कर बाहर लोट आता। अगर कोई उसे रोकने की चेष्टा करता तो तुरन्त उसका खंजर उस बेगुनाह के खून से भर आता—!

और—!

आज भी वह जूये के अड्डे में बैठा, ताश की पत्तियाँ चॉट रहा था। इलाके के आवारा, बदमाश, चोर और डाकू सभी वहाँ थे। जो कि लोगों से छीने हुये रुपये यहाँ दाव पर लगा रहे थे। हराम की कमाई हराम की खैदक में जा रही थी।

सभी लोगों के सामने नोटों के ढेड़ लगे हुये थे। गुरदू काफी रकम हार चुका था लेकिन अब भी दाव पर दाव चलाये जा रहा था।

“अब उठ जाओ उस्ताद ! वरन् ये रकम भी गायब हो जायेगी।”

“चुप रह गिरजेश के बच्चे ! नहीं तो घूसा मार कर मुँह तोड़ दूँगा !” गुट्टूने आँखें निकालते हुये कहा।

“वह तो तुम्हारे भले की ही कह रहा है !” तभी पीछे से गफफार ने एक और आवाज कसी।

“और साथ में तू भी !” हारा हुआ गुरदू क्रोध से लाल हो उठा।

ताश को जमीन पर फेंकते हुये कहा उसने—! “ताश तो पीछे बाँटूंगा, पहले तुझे मजा चखा दूँ !”

दोनों उठ खड़े हुए महायुद्ध करने के लिये । दोनों ही अपनी अपनी पार्टी के उस्ताद माने जाते थे । उनमें जाने कबसे आपस में दुश्मनी चली आरही थी । और फिर आज वह गुरदू के हजारों रुपये जीत कर उसके घाव पर नमक छिड़क रहा था ।

गुरदू ने जाते ही भरपूर घूँसा उसकी कनपटी पर जमाया । फिर दूसरा भी । नशे में मस्त गप्फार जा गिरा मुँह के बल । फिर क्या था, घूँसे पर घूँसा बरसने लगा । सब लोग खड़े तमाशा देखते रहे । मगर किसी में हिम्मत न थी कि आगे बढ़कर उन्हें रोके ।

“साले ने मखौल समझ रखा है !” गुरदू ने अपने कपड़ों को भाड़ते हुये कहा—! “बोटी-बोटी काट के न फेंक दूँ तो गुरदू नाम नहीं !”

“जाने दो अब उस्ताद ! बहुत मरम्मत हो गई बदमाश की !”

“हरामजादे ने खेल चौपट कर दिया—!” फिर ताश को बँटोरते हुये कहा—! “आओ दो-चार बाजो फिर जम जाये !”

“यह भी रहा—!”

खेल पुनः जम गया

पत्तियाँ बँटी

और साथ ही गुरदू ने जोर से कहा—! यारों ! अब की बन्द पर दाओ खेलो !

“चलो यह भी करके देख लो !” गिरजेश ने चैलेंज देते हुये कहा ।

“मेरा पाँच रुपये से बन्द !” अहमक ने आवाज दी ।

“मेरा भी पाँच से बन्द !” गिरजेश ने कहा ।

“मेरा भी—!” पास बैठा तीसरा भी बोला

“और मैं क्यों पीछे हटूँ—?”

“और यह लो मेरा भी बन्द !” गुरदू ने पाँच का नोट फेंकते हुये कहा ।

चार फेरों में नोटों की ढेड़ी सी लग गई । एक एक को पूरे सौ नोट पड़े थे सामने । और सभी देख रहे थे ।

“अब चाल होने दो—!” अहमक ने अपनी पत्तियों को उठाते हुये कहा—! “मार डाला तुमने यार !” और ताश गड्डी में फेंक दी ।

गिरजेश ने बिना देखे कहा—! “मेरा फिर बन्द !”

“मेरा भी बन्द !” जग्गू ने हाथ पटका ।

“मेरी तो किस्मत ही फूटी है !” चौथे ने ताश को गड्डी में डालते हुए कहा ।

“मेरा भी बन्द !” गुरदू ने पुनः झनझनाते हुए पाँच सिक्के फेंके ।

जग्गू ने भी ताश फेंक दी । और अब केवल गिरजेश और गुरदू रह गये थे ।

“बन्द पर ही खेलो तो मानू गिरजेश !” गुरदू ने आवाज कसते हुए कहा ।

“तो यहाँ कौन पीछे हटता है—? लो बीस रुपये से बन्द !”

“चालिस से बन्द !”

“पचास से ।”

“सौ से ।” दस दस के दस नोट बिलख गये ।

“दो सौ से !” गिरजेश अब पीछे हटनेवाला था । सब लोग खड़े तमाशा देख रहे थे ।

“पाँच सौ से बन्द गिरजेश !” गुरदू ने तमाम बचे हुए रुपये दाव पर लगा दिये ।

नोटों और सिक्कों का आवाज सा लग गया ।

“एक हजार से !” चीख उठा गिरजेश ।

“मेरा भी एक हजार से !” गुरदू भी चीख उठा ।”

“नकद निकालो गुरदू । नकद ! जूये मे उधार का काम नहीं ।” गिरजेश ने श्रीसर का लाभ उठाने की चेष्टा की ।

गुरदू के पास अब एक पैसा भी न था । इस समय अब शोकराने के लिए भी दो हजार रुपये चाहिये । और फिर उसकी तकदीर जीते भी या.....

दो चार लोगों से रुपये माँगे लेकिन किसी ने न दिये । और देता भी कौन—? ऐसे लोगों का क्या इतबार—?

“निकालते हो, या उठाऊँ सब रुपये—?” गिरजेश ने रोव सते ए कहा ।

“उधार सही !” गुरदू ने धीरे से कहा ।

“यह किसी और को रास्ता दिखाना गुरदू ! आज गिरजेश के पाले पड़े हो । ऐसा मजा चिलाऊंगा कि फिर कभी इधर आने का नाम न लोगे ।”

“यकीन मानो गिरजेश ! मैं तुम्हारा एक एक पैसा चुका दूँगा ।”

“मुझे तुम्हारा कोई यकीन नहीं !”

“याद रखो गिरजेश !” गुरदू ने दाँत पीसते हुए गुम जेब से हीरे की एक माला निकालते हुये कहा—! “यह लो—! शो करो !”

माला देखते ही सबकी आँखें चकाचौंद हो गईं । बीस हजार से कम कीमत का न था वह हार ।

“.....”

गिरजेश सन्न हो गया । वह तो कुछ और ही सोच रहा था । वह तो जान रहा था कि आज वह गुरदू को नीचा दिखा कर ही रहेगा । लेकिन अब तो उसे शो करना ही होगा । अगर हार गया तो—?” वह सोच रहा था—! “नहीं—! ऐसा कभी नहीं हो सकता—! आज तक वह कभी नहीं हारा । और फिर हारना जीतना तो काम है लगा है !”

“एक बार फिर सोच लो गुरदू ! तुम मुझसे कभी नहीं जीत सकते ।”

“पहले शो तो करो—!”

“अच्छा ! यह लो—!” गिरजेश ने पहला पत्ता उलटते हुए कहा—
“बादशाह निकला ।”

“यह तो मेरे पास भी है ।” गुरदू ने मुस्कराते हुए अपना पहला पत्ता उलट दिया ।

“और यह लो दूसरा पत्ता !” उसने दूसरा पत्ता भी उलट दिया—
यह बेगम हैं गुरदू बेगम !—और अब अगर गुलाम निकल आये तो जानते हो—? यह तुम्हारा हीरों का हार मेरी उँगलियों में नाचता दिखाई देगा !” गिरजेश खुशी से झूम उठा ।

गुरदू ने धीरे से अपने दूसरे पत्ते को उलटा और साथ ही चिल्ला पड़ा—
“यह लो बेगम !”

गिरजेश एक बार पुनः सन्न हो गया ।

दोनों की तकदीर अपने अपने दाव पर खेल रही थी । एक की किस्मत जिन्दगी का नया सवेरा देगी, और दूसरे की किस्मत मौत का भयानक अँधेरा । दोनों की पत्तियाँ अभी तक बराबर की थी । अब मंजिल की केवल अन्तिम सीढ़ी रह गई थी । देखना यह था कि किसके कदम उस डगमगानी सीढ़ी को पार करके नोटों को दोनों हाथों से बटोरता है ।

गिरजेश ने फीकी हँसी हँसते हुए कहा—! “पहले तुम खोलो गुरदू ।”

“यह किसी और को सिखाना !”

“इसमें सिखाने की कौन सी बात है ? पत्ते तो वही रहेंगे ?”

लेकिन गुरदू भी खेला हुआ शिकारी था । न जाने कितने ही अड़ुआ को उराने आवाद करके बरवाद कर दिया था— “कितनी ही बार अपनी तक-

दीर को दाव पर रख कर जिन्दगी और मौत का सौदा किया था । फिर भला अब वह क्यों कच्ची मिट्टी पर पत्थर का महल बनाने लगा ?

उसने गरजती आवाज में कहा—! “खोलते हो या बंदोखें !”

गिरजेश ने एक बार आकाश की ओर देखा और फिर आँखें बन्द करके तीसरा पत्ता भी उलट दिया ।

किस्मत का अन्तिम पत्ता उलटा गया ।

किन्तु . . .

पत्ता बिल्कुल उलटा हो गया ।

गुलाम के स्थान पर दहला निकला ।

उसका सिर चक्करा उठा । हीरे की माला उसकी आँखों में नाच उठी । उसे ऐसा लगा जैसे वही माला उसके गले में फाँसी का फंदा बन कर पड़ी है । जो अब धीरे-धीरे उसके गले को दबाये चले जा रही है । और थोड़ी देर के बाद ही वह फंदा उसे हमेशा के लिये समाप्त कर देगा ।

“हार मानते हो ना—?” गुरदू ने दोनों बाँह फैला दी नोयों को बंदोरने के लिये ।

“खबरदार !” गिरजेश के हाथ में चमकता हुआ छुरा था—? “पहले अपना तीसरा पत्ता उलटो गुरदू ?”

“अगर उसमें भी जीत गया—?”

“तो हम दोनों की किस्मत का आखिरी फेंसला होगा—!” उसने छुरे को उछालते हुये कहा ! “एक भ्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती !”

“ओ ! अब समझा ! ताश से न जीत सके तो खंजर से जीतना चाहते हो—?”

“हाँ ! अब इस अड्डे में मैं ही रहूँगा अथवा तुम ही—!”

“अच्छा ! यह देखो, खोल रहा हूँ !” गुरदू ने आकारा की ओर देखते हुये कहा—! “या मालिक !”

पत्ता खुला

और साथ ही वह चीख उठा

“वह मारा !”

गुरद्व के सामने बादशाह, बेगम और गुलाम के पत्ते थे ! जिन्दगी के नये सचरे की नई किरणें चमक उठीं ।

भट रूपयों को बटोरने के लिये दोनों बाँहें फैला दीं ।

लेकिन तभी गिरजेश ने छुरे से उसका रास्ता रोकते हुये कहा—!
“यह गिरजेश के रूपये हैं गुरद्व ! आज तक इस अड़्डे में मुझे कोई न हरा सका । आज तुम मेरी तमाम पूँजी को जीतना चाहते हो—!
—लेकिन याद रखो ! इतनी आसानी से तुम्हें यह रूपये मिलने वाले नहीं गुरद्व ! इन्हें पाने के लिये कुछ बलिदान भी करना होगा—!”

गुरद्व क्रोध से लाल हो उठा ।

“आ जाओ सामने—!” और साथ ही उसके हाथ में भी पहाड़ी खुखड़ी चमक उठी ।

दोनों आमने सामने आ खड़े हुए । दोनों की आँखों से घंगारे निकल रहे थे । एक अगर इलाके का माना हुआ गुण्डा था तो दूसरा माना हुआ डाकू था । एक बेरहम और जालिम था तो दूसरा कातिल और खूनी था । दोनों के हाथ में भयानक छुरे चमक रहे थे, जिनकी सफेदी इन्सानियत के खून की महक दे रही थी ।

“यह तो पहला बार है ।”

गिरजेश ने दाँत पीसते हुये गुरद्व की ओर अपना छुरा फेंका ।

निशाना ठीक था

मगर.....

निशाना चूक गया

छुरा दिवार में धस गया

और गुरद्व बाल-बाल बच गया ।

“और अब यह लो ! मेरा वार संभालो !”

गुरदू ने ग्योच्च कर छुरे की नोक उसकी ओर मारी—और साथ ही कमरे में एक भयानक चीख गूँज उठी—!

“आह !”

छुरा गिरदेश के मीने में धुस चुका था ।

तड़पा... ..छुरपछुरा और फिर... ..

ठंडा हो गया

हमेशा हमेशा के लिये उड़ा हो गया ।

मनुष्य भर चुका—

मानवत भर गई

गुरदू ने नोरों को जेबों में धरना शुरू किया । आज वह जीत चुका था—! उसकी किस्मत जिन्गी के नये मोड़ पर धूम चुकी थी । जहाँ वह था और उसका अत्याचार था । अब कोई न था उसकी राह में रोड़े की तरह आने वाला ।

कुल रूपये अपने साथियों का दे दिये ।

और फिर—!

शराब आई—

गोस्त की प्लेटें टकराई—

शीशे के गिलास ग्वनग्वनाये और

फिर—!

बोतलें खाली होने लगीं ।

एक के बाद दूसरी बोतल सिसक उठी ।

लोग नशे में भूम उठे । सबकी आँखें लाल हो उठीं—! कदम डगमगाने लगे ।

यह था पहाड़ी इलाका—!

जहाँ एक ओर मासूस लोग रहते थे। सीधे-सादे व्यक्तियों की बस्ती थी। और दूसरी ओर गुण्डे और बदमाश रहते थे।

एक और बहादुर लोग रहते थे जो अपनी इज्जत...आबरू...और अपने देश के लिए अपना बलिदान कर देते थे। और दूसरी ओर वे बहादुर थे जो जूए के लिये एक दूसरे का खून करते थे। चन्द रूपयों को जीतने के लिए मानवता का लहू बहाते थे।

रात काफी हो चुकी थी। आकाश पर बादलों का जमवट लगा हुआ था—

गुरदू भूमते कदमों से उठा, और यह कहते हुये ठहाका मार कर हँस पड़ा—! “एक भयान मे दो तलवारें...कभी नहीं रह सकती— हा हा हा...हा हा...हा हा हा...!”

और फिर बाहर का दरवाजा खोला और रात के उस भयानक अंधेरे में चल दिया एक ओर को—!!!

×

×

×

रात की कालिमा भयानक होती जा रही थी—

पापी और गुनहगारों का परदा फैलता जा रहा था। चोर और डाकू ऐसी ही गतों में अपना काम करते हैं। इसीलिए तो रात होती है—अंधियारी रात ! जिसमें हाथ को हाथ तक न सूझ सके।

पहाड़ी रात—!

जहाँ रात होने से पहले ही लोग भोंपड़ियों में घुस जाते हैं। और दिन होने से पहले ही बाहर निकल आते हैं। उन्हें अपनी से और अपने से काम है। दिन और दुनिया की उन्हें खबर नहीं होती। वे मेहनत और मुश्कत की जिन्दगी व्यतीत करना जानते हैं। आराम

और भोगविलास का जीवन नहीं। उनकी रग-रग से खून, पसीना बनकर निकलता है।

आकाश पर न चाँद था, न मितारें—! केवल शून्य!—अंधकार.....
बस !

गुरु लड़खड़ाता हुआ आठिका भोंपड़ी के दरवाजे से।

“कौन—?” भोंपड़ी के अन्दर से एक महीन आवाज आई। जैसे किसी ने चौकसर पूछा हो।

“म...मे—!”

“भय्या—!”

दरवाजे पर फिन्दा लड़ी आश्चर्य से गुरु की ओर देख रही था।

“हाँ!.....किन.....दा.....मे.....हूँ!” झूमता हुआ अन्दर आ गया वह।

छोटा सा दिया जल रहा था, जिसकी धीमी रोशनी भोंपड़ी की कच्ची दीवारों से टकरा रही थी। भोंपड़ी में इस समय फिन्दा थी और उसका भाई गुरु ! बापू हवेली में सोया करता था, जहाँ गाये भैसे बँधो थी। गुरु भी अकसर बाहर हो रहता था। “किन्तु आज वह भोंपड़ी में कैसे आ गया—? और वह भी नशे को हालत में !” फिन्दा सोच रही थी।

“आज फिर तुमने पी न भय्या !” उसने दरवाजा बन्द करते हुए कहा।

‘क्या—?’

“शराब—!”

“शराब—? हाहाहा.....हाहा.....हा.....हा.....हा ?” वह ठहाका मारकर हाँस पड़ा !—“कौन कहता है कि मैंने...श...श...शराब...पी है। नहीं...नहीं फिन्दा ! मैंने शराब नहीं...पी...तेरी कसम.....मेरी फिन्दा मैं.....मैं.....ने.....शराब.....नहीं....

पी !” वह दोनो आँखे फाड़ फाड़ कर उसे घूर रहा था—! “इ.....
 घर.....आ !” उसने पुनःकारते हुये कहा ।

“होश मे आओ भइया !” फिन्दा सहम गई उसकी आवाज सुनकर ।

“मैं.....बिल.....बिल्कुल होश.....में.....हूँ ।.....तुम मेरे
 सा.....मने होना—? फिन्दा ।.....तुम बड़ी.....अच्छी हो.....
 तुम.....कितनी सुन्दर हो—?.....इ.....घर आओ.....
 एकबार.....!”

उसके डगमगाते कदम फिन्दा की ओर बढ़े । मारा शरीर पेड़ के पत्ते की तरह झूम रहा था । लाल लाल आँखो से मानो लहू टपक रहा हो ।

फिन्दा डर के मारे पीछे हटनी जा रही थी । अर वह दिवार का सहारा लेना हुआ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था ।

आज पहली बार गुरट्ट इस तरह उसे परेशान कर रहा था । अकम्ब कभी कभी वह शराब पी कर भोंपड़ी में आता और गिरता पड़ता चारपाई पर गिर पड़ता । फिन्दा उसे समझाती और उस समय वह वायदा करता कि अब वह कभी शराब नहीं पियेगा । लेकिन नशे के उतरते ही उसका वायदा भी उतर जाता और वह फिर नशे में झूम उठता ।

लेकिन आज वह हृद मे अधिक बढ़ता जा रहा था । ऐसा मालूम होता था जैसे वह भूल गया है कि फिन्दा उसकी बहन है । इसीलिये तो आज वह वासना के नशे में उसकी ओर बढ़ रहा है । उसे अपनी बांहो मे जकड़ कर उसकी हज्जत को लूटने के लिये आगे बढ़ रहा है ।

“तुम्हें आज हो क्या गया है भइया—?” उसने काँपती आवाज मे कहा ।

“मुझे—?..मुझे कुछ नहीं..हुआ है।..मैं तो..तेरा..प्यार चा..हता हूँ..मैं..तुम्हें..प्यार करता हूँ..तु..तुम भी..तो..”

फिन्दा दौड़कर जा चिपकी दिवार से।

उसका जी चाहा कि वह पत्थर से उसका माथा फोड़ दे। किन्तु भाईके प्यार ने उसे ऐसा करने न दिया। फिर कभी वह चिल्लाने की सोचती लेकिन फिर यह सोच कर रुक जाती कि चिल्लाहट से लोग जमा होंगे और फिर उसीके खानदान की बेइज्जती होगी—बापू पर लोग उँगलियाँ उठायेगे।

गुरुद्व एक खूनी की भाँति दोनों बाहें फैलाये उसकी ओर बढ़ रहा था। जैसे वह फिन्दा को उन बाहों में जकड़ कर अपने में समा लेना चाहता हो। उसे कुछ खबर न थी कि वह कहाँ है? और क्या करने — जा रहा है?

“भ..भइया—!” उसके मुँह से एक हल्की सी चीख निकल पड़ी।

“मैं..तुम्हें..प्यार..क..करता..हूँ..।” वह बढ़ता ही गया।

“भइया—!”

किन्तु वह दानव क्योंकर सुनता—?

जा पहुँचा फिन्दा के पास।—एक ओर दोवार थी, और दूसरी ओर हवश का भूखा गुरुद्व। कहीं भाग भी न सकती थी वह।

उसकी भयानक बाहें बढ़ने लगी। और दूसरे ही क्षण.....।

वह भूखे शेर की भाँति झपट पड़ा उस पर। वह दोनों हाथों से छुड़ाने की कोशिश कर रही थी—मछली की तरह छुटपटा रही थी किन्तु बज्र जैसी बाहों से छुट न सकी।

“छोड़ो मुझे..भइया !..तुम्हें बापू की कसम है—छोड़ो भइया..” परन्तु उसकी बाहें कसती ही गईं।

विजली सी गिर पड़ी फिन्दा पर। उसकी आबरू भँवर के किनारे

पहुँच चुकी थी। और शायद कुछ ही क्षणों के बाद मनुष्य जीवन का सब से बड़ा कलंक लग जाता। यद्यपि यह भूल से ही होता किन्तु वही भूल उसे आत्महत्या करने पर मजबूर कर देती।

रहा न गया उससे और उसने पूरी शक्ति से उसकी कलाई पर दाँत काट लिया।—क्षण भर के लिये बाँहें कुछ ढीली हुई और साथ ही फिन्दा का सरसराता थप्पड़ ज' पड़ा उसकी गालों पर।

“ताड़—!”

तिलमिला उठा वह।

कदम डगमगा गये।

शरीर भूम उठा—

और जा टकराया दिवार के दूसरे कोने से।

एक बार उसने पुनः बढ़ने की कोशिश की किन्तु फिन्दा की एक ही लात ने उसे मुँह के बल भूमि पर गिरा दिया। खून की नली वह निकली माथे से।

किन्तु फिर वह चौंक गई।

“भइया—!”

और दौड़ कर उसके पास आई। लेकिन वह नशे में बेहोश पड़ा था। उसमें अब इतनी शक्ति भी न रह गई थी कि वह कराह सकता।

गुरु रातभर बेहोश पड़ा रहा और फिन्दा रातभर उसके सिरहाने बैठी अपने किये पर सिसकती रही। आखिर भाई ही तो था। अगर नशे में वह एक नीच काम करने पर उतारू हो गया था, तो इसका मतलब यह तो नहीं था कि वह उसे जान से मार डालती अथवा बेहोशी की हालत में भोंपड़ी से बाहर ढकेल देती—!

दिया जलता रहा

और साथ ही वह भी आँसू बहाती रही।



प्रेम की सरिता केवल उसी स्थान पर बह सकती है, जहाँ कवि और कविता हो—बोला और उसकी भंकार हो—जहाँ गायक और उसका संगीत हो—और जहाँ प्रेमी और उसकी प्रेमिका हो ।

सायलस और फिन्दा इस समय उसी सरिता में बहे चले जा रहे थे । वे एक सपना देख रहे थे । एक नई दुनिया का खयाल देख रहे थे ।—ऐसी जगह जाना चाहते थे जहाँ केवल वे ही दोनों हों । दुनिया से दूर बहुत दूर जहाँ ऊँची ऊँची पहाड़ी चोटियाँ हों जिनकी चट्टानों के दामन में अपनी छोटी सी दुनिया को बसा सकें ।

“सायलस बाबू !” फिन्दा ने शान्ति भंग करते हुए कहा—! “क्या दो दिल भी एक हो सकते हैं—?”

“कौन सी ऐसी बात है जो नहीं हो सकती—?”

“किन्तु इस समाज में प्रेम की सफलता होती कभी नहीं देखी—।”

“तो फिर ऐसे समाज को जला क्यों नहीं दिया जाता—?”

“यह दुनिया की रीत जो ठहरी—!”

“अगर जिन्दगी की गोद में प्रेम सफल नहीं होता फिर ? तो मौत की गोद में तो सफल हो सकता है ।

“परन्तु जिन्दगी और मौत में बहुत बड़ा अन्तर है सायलस बाबू !—मौत की गोद में हड्डियों का ढाँचा होता है, जब कि जिन्दगी की गोद में सुन्दरता और खूबसूरती का ढाँचा होता है ।—एक किनारा कहकहों और दूसरा किनारा टी. वी. के मरीज भी सूरत बनाये मुर्झाया हुआ होता है ।—एक ओर उड़ती हुई रंगीनियाँ और दूसरी ओर सड़ता हुआ माँस एक ओर सजा हुआ मनुष्य और दूसरी ओर नग्न शरीर एक ओर मुलायम चेहरा—और दूसरी ओर झुड़ियाँ दार गाल और हड्डी में भी सख्त बदन—!”

“मगर एक दानवता के भयानक पंजे में होता है और दूसरा मानवता की गोद में आराम से सोता है । जिन्दगी से कहीं अच्छी मौत है फिर ! जहाँ लोग एक दूसरे से मिल तो सकते हैं ।—जोवन में प्यार और हर्ष, प्रकाश और अंधकार, मानवता और दानवता, संतुष्टी और भूख, शरफत और कमीनगो, इकट्ठी पलती है । एक ही कोख में एक ही स्थान पर, एक ही समय, बिलकुल पास, संग जैसे एक तस्वीर के दो खूब होते हैं ।—यद्यपि जिन्दगी में मुस्कराती हुई आँखें, चमकते हुए अधर, और धड़कते हृदय होते हैं । किन्तु वे सब बनावटी होते हैं । सच्चाई तो इनके अन्दर होती है जिनके पीछे मुस्कराहटों का परदा होता है । परन्तु मौत—! मौत एक नंगा ढाँचा होते हुये भी साफ, पवित्र और निर्मल होता है । जिसमें केवल प्यार पलता है मानवता पलती है, हर्षा और दानवता नहीं । जहाँ सच्ची मोहब्बत होती है, बनावटी मुस्कराहटें नहीं ।”

“क्या आपका समाज आपको मुझसे छीन तो न लेगा—।” उसने ऐसी आँखें बनाते हुये कहा जैसे उसे डर लग रहा हो कि शहर की सभ्यता

पहाड़ों सभ्यता को कभी अपने में मिलाने के लिये राजी न होगी—!
“क्योंकि हमारे और आपके दो मजहब है।”

“मोहब्बत मजहब को नहीं देखती किन्दा ! वह तो इन्सान को देखती है। मनुष्य को पहचानती है। धर्म हम दोनों को कभी जुदा नहीं कर सकता।—आज इस मजहब ही ने तो इन्सान को इन्सान का दुश्मन बना दिया है जो कि एक दूसरे के पेट में खंजर धोप कर आत्महत्या किये जा रहा है।—आज मजहब ही के नाम पर तो गुन्डे और बदमाश अपना काम करते हैं। गरीबों को लूटते हैं उनकी भोजपड़ियों को अग्नि को भेंट करते हैं, और समाज—? समाज को मानता ही कौन है—? समाज तो अनीसों और पूँजीपतियों की एक संस्था है जो केवल अपने लाभ के हेतु समाज का भंडा उठाये हुये हैं।

आज का समाज एक ढोंगी समाज है, जो केवल लूटना और खुशोदना ही जानता है।—उस समय यह समाज कहाँ जाता है—? जब कि एक नौजवान लड़की एक बूढ़े खूमट के साथ ब्याही जाती है। जिसके दिल की धड़क किसी समय भी बन्द हो सकती है। क्या यही समाज का इन्साफ है कि एक औरत के मरते ही मर्द दूसरी शादी कर लेता है और दूसरी के बाद तीसरी शादी का सेहरा बाँधता है लेकिन जब कोई स्त्री एक मर्द के मरते ही दूसरी शादी के लिये जुवान खोलती है तो उसकी जुवान खींचली जाती है। उसके हाथों की मेंहदी अभी गीली ही होती है कि उसे जीवन भर विधवा रहने के लिये मजबूर किया जाता है।—कहाँ जाते हैं समाज के नेता—? जब कि गरीबों को जिन्दा आग में जलाया जाता है।—

आज की भुखमरी...आज की बेकारी...अत्याचार...चोरी...
डकैती—क्या यही सब समाज के उन्नति करने के लक्षण हैं—? बड़े आदमी अपनी बड़ी से बड़ी गली पर अपने नाम का परदा डालकर उसे हमेशा के लिये दफना देना चाहते हैं। किन्तु गरीबों की छोटी से

छोटी भूज को भी वे नंगा करने की कोशिश करते हैं फिन्दा ! उन्हें समाज निकाल देते हैं—उनका हुक्का पानी बन्द कर देते हैं । क्या यही समाज है, जो मनुष्य को मनुष्य से मिलने भी नहीं देता—? ऐसे समाज को तो जला कर खाक कर देना चाहिये ।

और एक समय ऐसा आयेगा फिन्दा ! जब कि यह पुराना समाज धरती में दफना दिया जायेगा । और एक नये समाज का निर्माण होगा... नई सभ्यता का प्रचलन होगा । जब गरीबों का ही राज्य होगा... इन ठेकेदारों और पूँजीपतियों का अन्त होगा । उस नये समाज में कोई किसी का रास्त न काटेगा । जहाँ प्रेम होगा, सनेह होगा । दो दिलों के बीच कोई अन्तर न होगा । और वे दो दिल मिलकर एक नई आत्मा का निर्माण करेंगे... जो कि एक सच्ची और पवित्र आत्मा होगी ।”

“काश ! ऐसा समय बहुत शीघ्र आता !” फिन्दा ने एक ठंडो साँस लेते हुये कहा । जैसे उसे सायलस की बात से बहुत आराम मिला हो ।

सायलस चुपचाप देखता रहा उसकी ओर । मानों कह रहा हो—! “ऐसा समय बहुत जल्द आयेगा फिन्दा ! जब कि यहाँ का और शहर के बीच का अन्तर कम होता जायेगा और पहाड़ शहर में मिल जायेगा । दोनों एक में समा जायेंगे—! भगवान की धरती, जिसे इस दुनिया ने अलग कर दिया है, फिर से एक हो जायेगी । पूरा संसार एक हो जायगा—गरीबी और अमीरी की जँजीर टूटकर चूर-चूर हो जायेगी । नीच-ऊँच की भावना का अन्त होगा और एक साम्यवाद का निर्माण होगा ।”

“सायलस बाबू !” फिन्दा ने उसके विचारों को तोड़ते हुये कहा ।

“हूँ ।” चौंक पड़ा वह

“आप ! मुझे छोड़कर तो न.... !”

“फिन्दा !” तड़प उठा वह—!“अब भी तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं है फिन्दा !”

“मुझे डर लग रहा है कि कहीं तूफान हम दोनों को दो किनारों से न टकरा दे !”

“यह कभी नहीं हो सकता फिन्दा ! हमारी मोहब्बत का एक ही किनारा रहेगा । उसे दुनिया की कोई भी ताकत दो किनारों में परिवर्तित नहीं कर सकती ।—इन चट्टानों के बीच हमारा पहला किनारा बना है और यही हमारा दूसरा किनारा भी बनेगा ।—यही पथ और यही मंजिल है ।—यही जीवन और यही मृत्यु है । यदि हम जीवन में एक न हो सके तो मरने के पश्चात् एक होंगे फिन्दा ! हमारा प्यार गंगा की तरह निर्मल और पवित्र है । फिर हमें कोई अलग नहीं कर सकता ।”

“.....!”

फिन्दा सुनती रही

और वह कहता रहा—!

“मनुष्य की जीवन नौका कभी अकेले नहीं चलती फिन्दा ! उसे खेने के लिये एक साथी की आवश्यकता होती है । और प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन साथी बनाना ही पड़ता है । जो उसके दुःख सुख में उसका साथ देता है । उसके कंधे से कंधा मिलाकर संसाररूपी भयानक समुद्र को पार करता है ।

बिना नर के नारी व्यर्थ है और बिना नारी के नर व्यर्थ है । सृष्टी की रचना ही इसी हेतु होती है ताकि नर और नारी का अर्थपूर्ण हो सके । मानव का इतिहास ही इसी प्रकार चलता आ रहा है । मोहब्बत तो उस समय भी जिन्दा थी जब कि मानव असभ्य माना जाता था । जब कि वह जंगलों में रहता था । जानवरों का शिकार करके दूसरों को अपना दास बनाता था । अगर उस समय मोहब्बत लुप्त न हो सकी जब

कि रात को मनुष्य सोता था लेकिन उसे यह न पता होता था कि सुबह वह उठ भी सकेगा अथवा नहीं, तो आज के समाज में इसका अन्त कैसे हो सकता है जब कि प्रत्येक व्यक्ति बहुत आगे बढ़ चुका है...? और.....

एकाएक सायलस चौंक पड़ा। उसने देखा फिन्दा का आधा शरीर उसकी गोद में पड़ा है। और वह नशीली आँखोंसे उसकी ओर देख रही है।

“फिन्दा !”

“जी !” उसने दोनों बाँहे उसके गले में डाल दी। उसका जी चाहा वह सायलस से इतनी जोर से चिपके इतनी जोर से कि वह स्वयं ही उसके चौड़े सीने में समा जाये। लेकिन ऐसा कर न सकी।

सायलस ने उसे अलग करते हुए कहा—! “फिन्दा ! रास्ता बहुत कठिन है। इतनी जल्दी नहीं डगमगाना चाहिए। मोहब्बत की मंजिल तक पहुँचने के लिए न जाने कितने ही बार कुर्बानी के तख्ते पर अपने आप को भुकाना पड़ता है।”

“मैं कुछ और ही सोच रही थी। और शायद उसी में बढ़ कर डूब भी जाती अगर आप.....!”

“घोड़े पर चढ़ने वाला ही गिरता है फिन्दा !” सायलस ने उसकी बात यादते हुये कहा—! “अगर तुम डगमगा गई तो क्या हुआ—? आजके युग में तो मोहब्बत हवश का दूसरा नाम है। लेकिन फिन्दा ! वे लोग प्यार का वास्तविक अर्थ नहीं समझते, जो प्यार को अपने दिल की जलती आग को बुझाने का केवल एक साधन ही समझते हैं। वे वासना के भूखे होते हैं प्रेम के नहीं—! प्रेम का पुजारी तो केवल पूजा करना ही जानता है, उसके फल की चाह नहीं करता।—मोहब्बत का मतलब यह नहीं कि एक दूसरे से मिलकर ही मोहब्बत पनप सकती है। बल्कि

प्यार तो दिल से किया जाता शरीर से नहीं। वे तो भँवरे अथवा चँचल तितलियाँ ही होती हैं जो फूल-फूल पर बैठती हैं।”

और फिर वही रात का धीरे-धीरे आगमन—!

“मिलने की घड़ियाँ भी कितनी तेजी से बीतने लगती हैं—!” सायलस ने आकाश की ओर देखते हुये कहा।

“रात भी मनुष्य के प्यारमें एक दीवार है।”

“लेकिन इन्हीं रातों में जाने कितने प्रेमी आस-पस में मिलते हैं। जिन्हें दुनिया का डर होता है, जो समाज का भय रखते हैं, जो प्रेम करते हैं किन्तु बलिदान देने से डरते हैं, वे सभी ऐसी ही रातों में एक दूसरे से मिलते हैं। ये चाँदनी रातें कितनों को मिलाने के साथ ही न धाने कितनों को हमेशा हमेशा के लिये एक दूसरे से जुदा भी करती है।

अन्धेरा बढ़ रहा था।

उजाला घट रहा था।

और फिर—!

काला परदा दुनिया पर छा गया। मंसार का तमाशा कुछ घण्टों के लिए समाप्त हो गया।

चाँद मुस्कुरा उठा आकाश पर

और—

सायलस और किन्दा भी अब दंग रह गये। दो दिशाओं की ओर जा रहे थे। एक शिखर पर बनी भाँपड़ी की ओर और दूसरा जंगलों के बीच बसे बेरक की ओर.....!!!

×

×

×

और उसके बाद—!

उनकी मोहब्बत बढ़ती ही गई। दोनों घंटे बैठे प्यार की बातें किया

करते । समाज और दुनिया को गालियाँ निकालते । एक दूसरे का हाथ पकड़ कर मजहब के कानून को तोड़ने की कसम खाते ।—वे सोच रहे थे कि अब न ती उन्हें मजहब ही जुटा कर सकता है और न समाज ही उनके बीच दीवार बन कर आसकता है ।

दोनों एक दूसरे के पास होते हुए भी कभी गलत धारा में नहीं गहे । उस वीगन स्थान में उन दोनों के सिवाय कोई न होता; किन्तु फिर भी वे जलते हुए सीनों को एक दूसरे में मिलाने में डरते । दो सौम्य को एक करने में द्विचक्रिचाने । मायलय अगर चाहता तो पहाड़ को शहर में मिला चुका होता । उसको जवानी से खेल सकता था—। उसकी आचरु को लूट कर उसके माथे पर न मिटने वाला दाग लगा सकता था । उसे अपने सीने से लगा कर अपने दिल की धधकती हुई आग को बुला सकता था । उसे अपनी बाहों में कस कर उसके मदहोश अधरों का रस निचोड़ सकता था और...? और अपने अरमानों को पूरा कर उसे माँ बनने पर मजबूर कर सकता था ।

किन्तु उसने इनमें से कुछ न किया । अपनी खुशी के लिए दूसरे की खुशी को बरबाद न किया । अपनी जिन्दगी के लिए दूसरे की जिन्दगी का अन्त न किया ।

क्योंकि वह प्यार का पुजारी था, वासना का नहीं ।—वह मोहब्बत का भूखा था, हवश का नहीं । उसने फिन्दा की कमजोरी से कभी नाजायज लाभ उठाने की चेष्टा न की । उसके काँसे पैरों को गिराने की कोशिश न की ।

आज का युग तो एक दौंगी युग है । आज की मोहब्बत के पीछे वासना और हवश छुपी होती है ।—प्यार के परदे में नंगी मानवता सिसकती है । प्रत्येक नवयुवक हर लड़की को केवल इसीलिए चाहता है, ताकि वह उसको जवानी से खेल सके । उसके कोमल शरीर को नाजुक फूल की

भांति मसल सके। हर युवक जब किसी युवती से मिलता है, तो उसका पहला पग उसके वस्त्रों पर होता है और दूसरा पग उसकी इज्जत पर—बस—! दिन की आग बुझो। और फिर—दोनों के दो रास्ते! युवक उसे पहचानता भी नहीं, जिसे कभी अपनी बांहों में कसा करता था। उसे घृणा और नफरत की दृष्टि से देखता है—! उससे बोलना भी पाप और गुनाह समझता है।

क्यों—?

क्योंकि अब उसमें वह मुलामियत कहाँ—? उसके होठों में वह रस कहाँ—! उसके घुँघराले केशों में अब वह महक कहाँ—! अब तो उसकी गालों में झुड़िया पड़ गई हैं—। होठ सुख चुके हैं और अब जिन पर बुढ़ापे की पपड़ियाँ जम गई हैं। उसके बाल धूप की तरह सफेद हो गये हैं।—किन्तु फिर भी अभी तक वह किसी शिशु की माँ न हो पाई। अपने पति की गोद में सिर रख कर मुस्कुरा न सकी। क्योंकि इस समाज ने उसे समय से पहले ही जवान कर दिया था और जवानी के दिनों में उस पर बुढ़ापे के बादल छा रहे थे। /

इन सब का उत्तरदाई हमारा आज का समाज है। हमारे वे नवयुवक हैं जिन पर भविष्य में हमारा समाज और देश गर्व करेगा। जिन के हाथों में भावी राज्य की बागडोर होगी।

आज के जमाने में नारी को केवल खेलने का एक मात्र साधन समझा जाता है। जिस प्रकार कोई नन्हा बालक एक खिलौने के टूटते ही दूसरे खिलौने से खेलने लगता है। उसी भांति आज के युवक भी एक नारी से खेलने के पश्चात् दूसरी की ओर हाथ बढ़ाते हैं, और दूसरी के टूटते ही तीसरी को अपने पहलू पर बैठते हैं।—वे युवतियाँ केवल सिसक कर ही रह जाती हैं क्योंकि समाज ही उन्हें बुरे रास्ते पर डालता है और फिर समाज ही उन्हें नंगा कर अपने से अलग कर देता है।

और वे—?

और वे अपनी और अपने खानदान की इज्जत के लिए आत्महत्या कर लेती हैं। किन्तु उनमें से कुछ ऐसी भी होती हैं जो उस तूफान का मुकाबला करती हैं। समाज के मुँह पर तमाचा भारती हैं। वे लोग जिन्होंने कभी उन्हें समाज से निकाला था अब उनके दरवाजे पर जा कर घंटो राह देखा करते हैं। उनके ऊपर सोना और चाँद बरसाते हैं। और उन्हें देवी की तरह मानते हैं। समाज के नेता उनके कदमों को चूमते हैं—उनके अछूते शरीर से लिपटना चाहते हैं और उस समय वे भी उन्हें उसी तरह ठोकर मार कर कोठे से नीचे उतार देती हैं, जिस तरह उन्होंने उन्हें ठोकर मार कर जाति से बाहर निकाला था।

जब वे आत्महत्या करती हैं तो उस समय हमारा समाज खिलखिला कर हँसा दे...उहाका मार कर झिझाड़ता है। और चीख चीख कर कहता है कि समाज उन्नति के पथ पर जा रहा है। किन्तु उन्हें यह नहीं पता कि यह उन्नति का नहीं बल्कि अवनति का पथ है, जिसके बाद एक भयानक खाई है। और एक समय ऐसा आयेगा जब कि उस पथ पर बढ़ता हुआ यह समाज उसी खाई में जा गिरेगा—!

और फिर—

उस समाज का अन्त होगा।

समाज के उन नेताओं का अन्त होगा।

और फिर—!

एक नये समाज का निर्माण होगा—!नया युग चलेगा—!नये विचार और नई भावनाओं का उत्थान होगा—! पवित्रताका बोलबाला होगा। लोगों में प्यार और मोहब्बत होगी। ईर्ष्या और घृणा का अन्त होगा।

फिन्दावेताबी से इधर उधर देख रही थी।

पेड़ों के पत्तों के हिलते ही वह चौंक उठी। चारों ओर देखती।

मगर उसकी मासूम निगाहें चट्टानों, पेड़ों और भाड़ियों से टकरा कर वापस लौट आती। कभी कभी वह चिल्ला कर उठ खड़ी होती।

कभी वह नीले नभमंडल की ओर देखती और कभी देखती धरती पर कन - कल करते हुए उस मोते की ओर, जिसका पानी उनकी प्यार भरी बातों को सुनकर आगे बढ़ जाता और उन्हें पूरे इलाके में फैलाने की कोशिश करता।

किसी आदम के आते ही वह मुड़ कर पुकारती

“सायलस—!”

लेकिन निराशावादी, आशावादी कैसे हो सकता है—? और उस समय उसे लगता जैसे कोई उसकी मोहब्बत की तौहीनी कर रहा है। उसके प्यार पर खिलखिला कर हँस रहा है। चीड़ की पत्तियाँ उसका गजाऊ उड़ा रही हैं। और वह किल्ला उठती—तिलमिला उठती—! उसके क्रोध के साथ ही कई आवाजें एक साथ उसके कान में गूँज उठती—! “क्या तुम अपने इस प्यार की नइया वो किनारे तक ले जा सकोगी—? क्या तुम पहाड़ी को छोड़ कर शहर की गन्दगी में जा सकोगी—? क्या तुम उसकी जीवन संगिनी बन सकोगी—? और क्या तुम इस अनजान राह को हँसते हुये पार कर सकोगी—?”

और वह चीख उठती।

“मैं सब कुछ कर सकती हूँ.....मुझे उनसे कोई भी जुदा नहीं कर सकता—!”

और उसे लगता जैसे कोई ठहाकामार हँस रहा हो—! “कलना की दुनिया बड़ी लम्बी चौड़ी होती है फिन्दा ! उस तक पहुँचना असम्भव है। केवल मौत की तनहाई ही पहुँच सकती है। अगर तुम मौत का दामन पकड़ो तो शायद.....!

चकोर चाँद तक पहुँचने के लिए जीवन भर तड़पता रहता है, परन्तु फिर भी पहुँच नहीं पाता ! परवाना शमा से लिपटना चाहता है..... उससे प्यार करना चाहता है.....अपने दिल के अन्धकार को उसकी रोशनी से दूर करना चाहता है । परन्तु होता ठीक उसके विपरीत है । वह स्वयं ही जल कर राख हो जाता है ।—उजाले को देखने से पहले ही वह इस दुनिया को छोड़कर चला जाता है.....प्यार को आग को बुझाने से पहले ही वह मौत की आग में जा गिरता है !

अब भी समय है किन्दा ! इस रास्ते को छोड़ दे वरन् तू भी प्रत्येक नारी की भाँति जीवन भर तड़पती रहेगी । रोती रहेगी । रोशनी को खोजती फिरेगी मगर अन्धकार के सिवाये और कुछ न मिलेगा— तू दम तोड़ जायेगी मगर तेरे दिल में लगी आग ठंडी न होगी । वह कभी बुझाने का नाम तक न लेगी ।”

एक-एक शब्द उसके दिमाग से टकरा रहा था और वह आँखें बन्द किये उन सबका सामना कर रही थी !

तभी किसी ने उसके कंधे पर धीरे से हाथ रखा और साथ ही वह चिल्ला पड़ी—!

“सायलस—!”

उसका जी चाहा कि वह उसके सीने से लिपट जाये और इन आवाजों को दिखा दे कि उसे उसके सायलस से कोई जुदा नहीं कर सकता । वह पानी की तरह सायलस में मिल जायेगी, ताकि दुनिया उसे देख भी न सके । और व्यगमय बोलियों से उसके जखमों का खून न निकाल सके ।

उसका दिल चाहा कि वह इन पेड़ों और झाड़ियों की शिकायत अपने सायलस से करें । और उससे पूछे कि क्या संसार में मोहब्बत की यही इज्जत है—? दुनिया में प्रेम का यही स्थान है --? कि बेजान चीजें मो रह-रह कर मोहब्बत की तौहीनी किया करें और खिलखिला कर दो प्रेमियों का उपहास उड़ाया करें—!

मगर—!

सायलस पीछे हट गया ।।

और फिन्दा को लगा जैसे हजारों पहाड़ उसके ऊपर एक साथ गिर गये हों । जैसे इन पेड़ों और झाड़ियों से निकलती आवाजें सत्य हों ।

आँखों में अँधेरा छाने लगा...!

सिर बोझ से दबता गया ।

और...

दूसरे ही क्षण वह जमीन पर जा गिरी ।

“फिन्दा !” सायलस के मुँह से हल्की मगर दर्दनाक चीख निकल पड़ी ।

फिन्दा आँखें बन्द किये बेहोश पड़ी थी । उसकी धुँधुड़ाती लटें उसकी गालों को चूम रही थीं—

सायलस ने लटों को धीरे से हटाते हुए पुकारा—

“फिन्दा—!”

मगर...

चाँद बादलों से बाहर आ गया

सायलस देख रहा था प्राकृतिक सुन्दरता को, जो निखरे बादल की भाँति निर्मल और साफ थी ।

शहर की सुन्दरता जो केवल बनावटी मात्र होती है । शहर की खूब-सूरती तो एक ऐसी इमारत है, जो जर जर हो चुकी है किन्तु फिर भी उस पर पालिश करके किसी तरह काम चलाया जा रहा है ।—उस पालिश के नीचे विरान खँडहर... और तबाही की निशानियाँ दबरी हैं । जिसके हटते ही वे सब नग्न हो जायेंगी । उसका रंग तो जमाने की एक ही हवा से बह कर विलीन हो जाता है । और फिर वही हड्डियों का नंगा ढाँचा नजर आने लगता है ।

किन्तु—!

पहाड़ की सुन्दरता, जो प्रकृति की गोद में धीमे धीमे जवान होती है ।—जो सादा होते दृश्य भी ऐसे रंगों से पूर्ण होती है कि जिसे जमाने की आँधी भी गायब नहीं कर पाती ।—पहाड़ की खूबसूरती लिपिस्टिक और पाउडर की बदौलत नहीं कायम रहती, बल्कि चंदा की चाँदनी और सूरज की धूप से चमकती रहती है ।

सायलस उसके सौन्दर्य से इतना मोहित हो गया कि खेँभाल न सका अपने आप को !

आदर्शवाद अवसरवाद के पथ पर जाने लगा ।

उसका जी चाहा कि वह अपने प्यासों होठों को उसके नम होठों से मिला कर उसका रस अपने में लेले ।

और वह बैठ गया घुटनों के बल उसके पास ।

हाथ की उँगलियाँ उसकी बुल्लकों से उलझ गईं ।

दिल धड़क उठा ।

होठ फड़क उठे ।

और...

प्यासे अधर धारे धीरे झुकने लगे नीचे की ओर ।

झुकता गया वह भी

और अन्त में एक दरार सी रह गई दो अधरो के बीच । दो दिलों के बीच । और दो प्रेमियों के बीच ।

लेकिन वह तो उस दरार को भी मिटा देना चाहता था । वह तो दोनों अधरों को एक साथ मिला देना चाहता था ।

और...

मगर...

मिला न सका ।

मन की आकांक्षा पूरी न कर सका ।

दरार को बन्द न कर सका ।

उसकी आत्मा चीख उठी—!

“मायलस ! कदम बढ़ाने से पहले रास्ता देख लो—! हाथ पकड़ने से पहले मविष्य को जान लो । और रस चूमने से पहले उसका अंजाम भी सोच लो । क्या भूल गये अपनी उन बातों को जिन्हें स्वयं तुमने ही फिन्दा से उस दिन कहा था जब कि उसके पाँव गलत धारा में बहने के लिये लड़खड़ाये थे—? क्या इसी बात पर तुम अपने आप को आदर्शवाद का पुजारी कहते हैं ? क्या इसी पर तुम्हें अपने आप पर नाज है कि एक बेसुध युवती की अवस्था का नाजायज लाभ उठा कर उसकी तमाम इज्जत को लूट लो—?”

“ ”

सायलस चुप था । और उसकी आत्मा चीख रही थी—!

“बोलो—! चुप क्यों हो—? भुका दो अपने होठों को और मिया दो उस दरार को भी—!”

“नहीं—! नहीं, वह ऐसा कभी नहीं कर सकता । किसी की कमजोरी से लाभ उठाकर अपनी आत्मा की संतुष्टी करना एक कमीनापन और धोखे-वाजी है । वह कभी ऐसा पाप नहीं कर सकता । जिस लकीर को वह हमेशा से मिटाने की कोशिश करता आ रहा है, आज खुद वही उस अधूरी लकीर को पूरा कर दे—? ऐसा करने से पहले ही वह अपने हाथ काट डालेगा—!”

उसने दृष्टि उठा कर आकाश की ओर देखा । उसे लगा जैसे वह शून्य आकाश भी उससे कह रहा हो “प्यार की मंजिल देखने में जितनी हो पास लगती है, चलने में उतनी ही दूर होती है ।”

वहाँ की एक एक पत्ती कह रही थी—!

“प्यार की दुनिया घनी भाड़ियों से बसे एक भयानक जंगल की भाँति

है सायलस ! जिसका ठीक रास्ता खोजना बहुत ही कठिन है । मनुष्य उसमें जाकर अपने आदर्श को खो बैठता है और जब उसे ठीक रास्ता नहीं मिलता तो वह या तो मज़ली की तरह उसीमें तड़प तड़प कर मर जाता है अथवा गलत रास्ते पर जाने के लिये तैयार हो जाता है ।”/

और.....!

और उसने घबड़ा कर दोनों हाथों से कानों को बन्द कर लिया । मगर आवाजें बन्द न हुईं । एक छोटी सी गलती पर हजारों आवाजें उठ रही थीं ।

मगर यही छोटी सी ही गलती उसे जीवन भर के लिए बरबाद कर देती । उसके तमाम दावों पर पानी फेर देती ।

अगर छोटी सी दरार भी मिल जाती तो.....

जाने क्या क्या सोचता रहा कि फिन्दा की काँपती आवाज ने उसे चौंका दिया

“सायलस—!”

“फिन्दा !” चिल्ला पड़ा वह—! “तुम्हें क्या हो गया था फिन्दा—?”

“कुछ नहीं ..यूहीं कुछ...!”

“इंसानको हिम्मत नहीं हरनी चाहिये फिन्दा !”

“मुझे डर लग रहा है सायलस बाबू ! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे आप दूर—बहुत दूर चले जा रहे हैं । मैं आप को पकड़ना चाहती हुई भी पकड़ नहीं पाती । आप का दामन मेरे हाथ में आकर भी छुट-छुट सा जा रहा है सायलस बाबू !” उसकी आँखें गीली हो उठी ।

“पगली ! मैं तो तुम्हारे पास ही हूँ ।”

“किंतु फिर भी पास नहीं !” फिन्दा ने भरी आँखोंसे उसकी ओर देखा और साथ ही कराह उठा सायलस दर्द से ।

“ऐसा सपने में भी न सोचना फिन्दा ! मैं वायदा करता हूँ कि जब

तक यह दुनिया रहेगी.....जब तक इस नीले आकाश पर चाँद सितारे रहेगे—तुम मेरी रहोगी, केवल मेरी ! तुम्हें मुझसे कोई नहीं छीन सकता । हमारत गिर जाती है फिन्दा ! मगर उसकी नींव फिर भी कायम रहती है । उस नींव को कोई नहीं मिटा सकता ।—हम मर सकते हैं, किंतु हमारी मोहब्बत नहीं मर सकती । वह हमेशा जीवित रहेगी ।—हमारे बाद हमारी बातों को ये पहाड़ और यह भड़ियाँ, ये चट्टानें और ये पेड़ दोहराया करेंगे—!”

“मैंने सपना देखा है सायजस बाबू ! एक भयानक सपना—! जिसने मेरे प्रत्येक अंग को छिन्न भिन्न कर दिया है ।—स्वप्न की वह भयानक रात अब भी मेरी आँखों में नाच रही है । जब कि चारों दिशाओं में घटाटोप बादल छाये हुये थे—मुसलाधार पानी बरस रहा था ।—बादल की कड़कती आवाज और बिजली की लचकती रोशनी मेरे सीने में तीर की भाँति घुसी जा रही थी !—आप बैठे थे और मैं आपकी गोद में सिर रखे सो रही थी । आपकी उँगलियाँ मेरे बालों से खेल रही थीं । आपने मुझसे प्यार किया था...आजोवन साथ निभाने के वायदे किये थे...प्यार और वासना के दो अलग अलग पहलू बनाये थे । और मैं आपकी आगोश में आराम से पड़ी थी । लेकिन.....”

क्षण भर के लिये फिन्दा चुप हो गई । और फिर कहना शुरू किया—!

“लेकिन समाज ने हम दोनों को मिलने न दिया—वासना की भूखी और समाज की ए० सुन्दरी आपके पास आई । और मुझे आपकी गोद में पड़े देख तड़प उठी वह—! इर्ष्या की भावना जग उठी उसके दिल में उसके सीने में औरत की जलन पैदा हो गई । वह आपको मुझसे छीनना चाहती थी । मेरी जगह स्वयं लेटना चाहती थी ।—उसने आपका हाथ पकड़ा और आपने उसे अपने सीने से लगा लिया ।

उसने धीरे से कहा—! “चलो ! बहुत दूर निकल चलें, जहाँ हमें कोई न ढूँढ सके !”

और आपने मेरे सिर को धीरे से उठा कर जमीन पर रख दिया । जैसे मेरी आत्मा इस दुनिया से चली गई हो और अब केवल मिट्टी का शरीर रह गया हो, जिसे आपने धरती के सुपद कर दिया हो ।—किन्तु मैं मरी नहीं थी । मेरी पलकें बन्द थीं किन्तु मेरी आत्मा जग रही थी जो इस समाज का झूठा तमासा देख रही थी ।—मेरी आँखें खुल गई और फिर.....!”

“और फिर क्या—?”

किन्दा ने एक लम्बा साँस लेते हुये कहा—! “और फिर मैंने देखा आप उसकी कमर में हाथ डाले चले जा रहे हैं । मैंने आपको आवाज दी, लेकिन आपने न सुनी और वह तड़पती आवाज चट्टानों से सिर पीट कर रह गई । मैं यह सह न सकी और दौड़ पड़ी आपकी ओर । वह युवती मुझे देखते ही आपसे लिपट गई । जैसे कहीं मैं आपको उससे छीन कर ले न जाऊँ ।—उसने मुझे घृणा की दृष्टि से देखते हुये कहा—! “बदमाश यहाँ भी आ गई—?” मैंने उसकी बोली की कोई परवाह न की और आपका दामन पकड़ लिया । लेकिन उसने मेरे मुँह पर सरसराता थप्पड़ जमा दिया । उसने दाँत पीसते हुये कहा—! “इट जाओ नागिन हमारे रास्ते से—!” लेकिन मैंने आपका दामन न छोड़ा ! मेरी रोती आवाज उससे कह रही थी—! “तुम मेरे सोहाग को नहीं ले जा सकती.....मेरी जिन्दगी को मुझ से जुदा नहीं कर सकती.....तुम पापिन हो.....डायन हो । जो मेरी आत्मा को मुझसे छीन रही हो.....मैं उनसे प्यार करती हूँ और वे.....!”

इससे पहले कि मैं आगे कुछ कहती उसने दूसरा तमाचा भी मेरे मुँह पर मारते हुये कहा—! “चुप रहो बेइया !—तुम बिल्कुल झूठ बोल रही हो—! वे तुम्हारे जैसी झूठी खूबसूरत से कभी मोहन्वत नहीं कर सकते ।

तुम उन्हें धोखा दे रही हो—! जरा शीशे में अपनी बूढ़ी सूरत को तो देखो—!” और मैंने देखा···! सचमुच मेरे बाल धूप की तरह सफेद हो चुके थे। दाँत टूट कर बाहर निकल आये थे, और अब केवल मौत के भयानक जबड़े की तरह मेरे भी जबड़े हिल रहे थे। गालें पिचक चुकी थी·····। शरीर की प्रत्येक हड्डी नंगी हो चुकी थी।—मैं पागल हो उठी। और दूसरे ही क्षण मैं भूखी शेरनी की तरह उसकी ओर लपकी। लेकिन···? आप लोग बहुत दूर जा चुके थे। आपकी केवल छाया मात्र दिखलाई पड़ रही थी। किन्तु उसके कहकहे मुझे अब भी बिल्कुल साफ सुनाई दे रहे थे।—कभी मैं आप लोगो की ओर देखती और कभी अपने सफेद बालों की ओर—! मेरी आत्मा चीख उठी—! “जा पापिन ! जिस प्रकार तूने मुझे मारा है, उसी प्रकार तुझे भगवान मारेगा।—और फिर मैंने देखा·····!”

उसने एक ठंडा साँस लेते हुये फिर कहना शुरू किया—! “मैंने देखा भयानक बिजली एक विशाल पेड़ पर गिरी। और वह पेड़ जा गिरा उसी पापिन के ऊपर ! उसका आधा शरीर पेड़ के नीचे दबा था और आधा बाहर तड़प रहा था। वह आपको सहायता के लिये बुला रही थी। लेकिन आप खड़े देखते रहे।—मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे आप मुझे पुकार रहे हैं। आवाज सुनते ही मैं दिवानों की भाँति आपकी ओर दौड़ी। आप मेरी ओर बढ़ रहे थे और वह युवती आपको पुकार रही थी। मुझे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे ज्यों ज्यों मैं आपकी ओर बढ़ती जा रही हूँ आप त्यों ही त्यों दूर चले जा रहे हैं।—जादल गरज रहे थे—बिजली चमक रही थी—मुसलाधार पानी बरस रहा था। और मैं पागलों की तरह आपकी ओर भागती जा रही थी। साँस पर साँस चल रहा था—शरीर पसीने से भीग चुका था और कदम डगमगा रहे थे किन्तु फिर भी मैं लड़खड़ाती हुई आपको पकड़ने की चेष्टा कर रही थी।

लेकिन—जब कि मैं भागती जा रही थी। एक भयानक पत्थड़ की ठोकर लगी—मेरे कदम लड़खड़ा उठे और मैं लुढ़क गई नीचे एक भयानक खाई में।—मैं आपको पा न सकी और जब मैं मौत की गोद में थी तो मैंने देखा आप मेरे पास ही पड़े बुरी तरह तड़प रहे हैं। बदन खून से भरा हुआ था। मैं चीख उठी—साथ—.....!

“और साथ ही मेरी आँख खुल गई सायलस बाबू!” बिलख उठी फिन्दा वच्चों की तरह।

“पगली! कभी सपने भी सच्चे होते हैं—?”

“कभी कभी स्वप्न ही सच बन जाता है!”

“यह तुम्हारा वहम है!”

“.....!”

फिन्दा गीली आँखें किये सोच रही थी।

“धोछ डालो, इन आँसूओं को वरन्.....!”

“आँसू निकाले नहीं जाते सायलस बाबू! खुद निकलने हैं!”

“विश्वास करो फिन्दा! तुम मेरी हो और मेरी ही रहोगी।”

फिन्दा कुछ न बोली।

सूरज की किरणें धीमे धीमे विलीन होती जा रही थी।

अधियारा पग बढ़ता चला आ रहा था।

और साथ ही दोनों उठ खड़े हुये।

एक बार दोनों की निगाहें मिलीं—और दोनों ने दो रास्तों का आँचल पकड़ा!

पर उसके हाथ में था और वह सोच रहा था कि अब उसे क्या करना चाहिये ? घर वापस चले जाना चाहिए अथवा कोई बहाना कर के यहीं पर कुछ दिनों के लिए ठहर जाना चाहिये । उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था ।

एक ओर भाई की मोहब्बत—

और दूसरी ओर फिन्दा का प्यार !

उसे सपने में भी यह आशा न थी कि जब उसे साहिल दिखलाई देने लगेगा, तो भयानक तूफान आकर उसकी किशोरी को डुबोने की कोशिश करेगा उसे क्या मालूम था कि फूल तोड़ने से पहले काँटों से बचना पड़ता है ।

आज सुबह उठते ही पोस्टमैन ने उसे एक लिफाफा दिया, जो कि बनारस से आया था । उस लिफाफों में उसके पिता ने लिखा था—!

“प्यारे साबलस—!

एलफी की तबियत कुछ दिनों से खराब है । और कल रात से उसकी

हालत बहुत ही खराब हो गई है। घर में देखभाल करने वाला कोई नहीं है। इस लिये पत्र पाते ही तुरन्त चले आओ।

अभी सायलस यह सब सोच ही रहा था कि तभी पोस्टमैन फिर आया।

सायलस का दिल धड़क उठा

“अब क्या लाये हो पोस्टमैन—?” सायलस ने बेचैन निगाहें उसके चेहरे पर जमाते हुए पूछा।

“आप की तार है बाबू जी !”

“तार—?” विजली सी गिर पड़ी उस पर। उसे लगा जैसे वह तार नहीं बल्कि तीर है जो उसके सीने को खेदती हुई पीठ से निकल गई है।

“यह लीजिये !” उसने तार का लिफाफा देते हुए कहा।

सायलस ने जल्दी से लिफाफे को खोला। केवल दो शब्द ही लिखे थे—! “Come soon !” किन्तु इन दो ही शब्दों में जिन्दगी और मौत दोनों ही छुपी हुई थी।

पोस्टमैन चला गया। लेकिन एक तूफान छोड़ गया। जिस में सायलस गोते खा रहा था। तार का लिफाफा इसके हाथ में था और दिमाग उसका चारों ओर पहाड़ियों से टकरा बनारस की विरान गलियों और रंगीली सड़कों के वातावरण तक पहुँचने की चेष्टा कर रहा था।

एलफी उसका छोटा भाई था। जिनकी उमर केवल पाँच ही वर्ष थी। किन्तु ऐसा माजूम होना था कि वह पाँच वर्ष का बालक आगे चल कर एक महान व्यक्ति होगा। उसका चौड़ा माथा.....मोटी मोटी आँखें उसके उज्ज्वल भविष्य की प्रतिपादन करती थीं।

एलफी का खयाल आते ही उनकी आँखें गीलो हो उठी। और होतीं भी क्यों न ? एक ही खून तो था। वह उसे अपनी जान से भी अधिक प्यार करता था। जब कभी वह कालेज से लौटता तो एलफी उसकी ढाँगों से लिपट जाता और वह उसे उठा कर चूम लेता। उसे

याद था कि बिना एलफी को खिलाये उसने कभी खाना तक नहीं खाया था। उसे उसके वे शब्द भी याद थे जब कि वह अपनी तुतलाती जुवान से कहता—!

“भइया ! मैं तो डाक्टर बूँगा !”

और डाक्टर का नाम सुनते ही सायलस की आँखें भर आतीं।

एलफी भोली सूरत बनाये आश्चर्य से पूछता

“आप रोते क्यों है भइया—? क्या आप मुझे डाक्टर नहीं बनाना चाहते—?”

और साथ ही सायलस तिलमिला उठता !

“एलफी ! नहीं एलफी ! तुम डाक्टर ही बनना । दिल का डाक्टर ! तुम डाक्टर ही बनोगें—!”

“लेकिन आप डाक्टर का नाम सुनते रो क्यों पड़ते हैं—?”

“.....!”

कैसे बताता कि डाक्टर का नाम सुन कर वह रो क्यों पड़ता है—?

चार वर्ष पहले उसकी माँ दिल की ही बीमारी से मरी थी। और उस समय कोई भी डाक्टर उसकी माँ को मरने से बचा न सका। जितने भी डाक्टर आये अपनी अपनी फीस ले कर चले गये।

वह चलो गई—।

और एक वर्ष के बच्चे को छोड़ गई दुनिया के रहम पर ?

उस दिन से सायलस और उसके पिता ने ही उस बालक को पालना शुरू किया। क्योंकि उसके पिता काम पर चले जाते थे इसलिये एलफी की परवरिश का भार सायलस पर ही था।

जब कभी उसे माँ की याद आ जाती तो वह सोचने लगता—!

“काश इस घर में भी कोई डाक्टर होता, तो शायद वह उस मौत को रोक देता जिसने आकर उन के हरे भरे चमन को खिजा की तरह

वीरान कर दिया था।” और उस समय वह दौड़ कर उस बच्चे को हटाती से लगाकर सिसक उठता। उसकी रोती आवाज कहती—! “ऐलफी ! तुम डाक्टर ही बनना ?—दिल का डाक्टर ताकि फिर कभी मौत उनके उस वीरान चमन को भी जला कर राख न कर दे।—उनकी कुचली हुई आशाओं को भी न रौंद दे.”

और वह नादान बालक मुस्कुरा उठता।

तब से आज तक वह यही रूढ़ था रहा है कि—“भइया ! मैं डाक्टर बनूँगा !”

दो आँसू लुढ़क पड़े उसकी पुतलियों से।

आज वही ऐलफी बीमार है। डाक्टर बनने का ख्याल देखने वाला आज मरीज बना पड़ा है। खतरनाक मरीज़ !—नइया वो किनारे तक लाने वाला मल्लाह इस समय स्वयं ही भैंवर की गोद में पड़ा है।

उसका जी चाहता कि वह इसी समय गाड़ी पर बैठ कर बनारस वापस चला जाये—!

मगर—!

विचारों ने पलटा खाया, और उसके सामने किन्दा की मामूम सूरत नाच उठी। मोहब्बत की दुनिया उसके सामने घूमती नजर आने लगी। उमे लगा जैसे वह दुनिया घूमती घूमती उलट जायेगी और उसका तिनका तिनका खँड़हर का रूप धारण कर लेगा। /हमेशा हमेशा के लिए गायब हो जायेगी। और फिर वह अकेला रह जायेगा... बिलकुल अकेला... तनहा।

और फिर दो चेहरे उसके सामने नाचने लगे—!

दो सूरते गोते खाने लगीं।

एक ऐलफी की, दूसरी किन्दा की।

एक भाई की दूसरी प्रेमिका की।

उसे यह भी पता था कि अगर वह उसे छोड़ शहर चला जयगा तो लौटकर फिर उसके पास आना बहुत कठिन है। इसीलिए वह चाहता था कि किसी बहाने से वह वहीं कुछ दिन और रुक जाये और फिन्दा को साथ लेकर ही जाये।

किन्तु उसकी आत्मा चीख उठी—!

“सायलस ! तुम मोहव्यत के लिए बहाना कर अपने सुख के लिए अपने छोटे भाई का सुख छीन रहे हो—? बड़ा भाई पिता के समान होता है। तो क्या इसी बात पर तुम बड़े भाई बनते हो ?—अगर तुम उसके लिए अपनी इतनी भी बलिदान नहीं कर सकते तो तुम्हें कोई हक नहीं कि तुम किसी को अपना छोटा भाई बनाओ।—अगर उसे कुछ हो गया तो याद रखो उन सब के जिम्मेदार तुम होगे—केवल तुम ही उत्तरदाई होगे। मौत किसी का इन्तजार नहीं करती सायलस ! और अगर मौत एक बार पुनः तुम्हारे घर में आ गई तो वह तुम्हारे घर को राख कर देगी। तुम्हारे सीने को जला डालेगी। और तुम—!...नः तुम्हारे आने को राह नहीं देख सकती सायलस ! और फिर तुम जीवन भर आँसुओं की आग में जलते रहोगे।”

उसके सामने मौत खड़ी थी।

जिसके दो रुख थे।

दो रूप थे—!

शहर की मौत और पहाड़ की मौत! — ऐतमी की मौत और फिन्दा की मौत।

दोनों के भयानक जवड़े फैले हुए थे। जिनके बीच दोनों की जिन्दगी लटक रही थी—जीवन कराह रहा था और चीख रही थी दोनों की आत्मायें।

जबड़े के बन्द होते ही जीवन मौत के पेट में चला जायेगा । और जिसे मनुष्य फिर कभी नहीं पा सकता ।

वह सोच रहा था—!

“अगर वह फिन्दा को छोड़ कर चला जाता है तो हो सकता है कि वह तड़प-तड़प कर मर जाये । अथवा उसके घर वाले उसकी शादी किसी दूसरी जगह कर दें । और वह उसे बेवफाई का देवता कह कर पुकारे !

और अगर वह बहाना करके यहीं रह जाता है तो हो सकता है कि उसका भाई उससे हमेशा हमेशा के लिए बिलुड जाये । मौत उसे बहुत दूर दूसरे दुनिया में ले जाये । जहाँ उसकी कल्पना भी नहीं पहुँच सकती ।

एक की जिन्दगी और दूसरे की मौत का सवाल था सायलस के सामने ।

एक ओर मोहब्बत रो रही थी

और दूसरी ओर फर्ज सिसक रहा था

दोनों की बाढ़ फैली हुई थी—और वह सामने खड़ा सोच रहा था, कि किसकी बाँहों में जाये ? किसकी गोद में सोये—? किसके दामन में अपने आप को छुपाये—?”

और एकाएक वह चौंक गया अरूप को अपने सामने खड़े देखा ।

एक बार उसे लगा जैसे अरूप नहीं बल्कि दो जिन्दगियों की मौत खड़ी है ।

अरूप उसकी धवड़ाहट को ताड़ गया ।

“यह कैसा कागज है—?” अरूप ने तार की ओर घूरते हुये पूछा ।

“ऐं—? कुछ...कुछ नहीं...!” वह और भी धवड़ा गया ।

“देखूँ तो सही—!” उसने माँगते हुए क्या ?

“तुम्हारे काम का नहीं है ।”

अरूप का शक बढ़ता जा रहा था। उसने भी जिद्द पकड़ ली—
“सायलस ! शायद तुम्हें अब सुझावर विश्वास नहीं रहा। इसीलिए तो तुम मुझसे अपनी बातें छुपाने लग गये हो।”

“नहीं अरूप ! यह बात नहीं। तुम तो वरुण करने लगते हो।”

“तो फिर तुम्हें दिखलाने में क्या हर्ज हा है ?”

“.....!”

सायलस बात में फँस गया और अन्त में उसे वह तार और चिन्ही दिखानी ही पड़ी।

अरूप पत्र पढ़ता जाता और शब्दों के साथ ही साथ उसके माथे पर रेखें भी बढ़ती जा रही थीं।

पढ़ चुकने के बाद उसने कहा—! “ओ। तो इसीलिये तुम नहीं दिखा रहे थे—!” अरूप का चेहरा गम्भीर था।

“.....!”

“तुम सीमा से बाहर जाना चाहते हो सायलस ! लेकिन सीमा इतनी छोटी नहीं कि तुम उसे आसानी से पार कर लोगे।—जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ मैं कभी भी तुम्हें गलत काम नहीं करने दूँगा। और तुम्हें कल ही मेरे साथ बनारस जाना होगा...”

“अरूप !” तड़प उठा वह—! “यह तुम क्या कह रहे हो अरूप ?”

“मैं ठीक कह रहा हूँ सायलस ! तुम्हें कल ही मेरे साथ चलना पड़ेगा।”

“लेकिन...!”

“मैं जानता हूँ कि तुम एक ऐसी सीढ़ी पर चढ़ चुके हो कि उतार से उतरना बहुत ही मुश्किल है—! जिस बात से मैं रोकता था, आखिर वह बात हो ही गई। तुम्हारे दिल में किन्दा की मोहब्बत ने एक घर बना लिया है और उस घर में जाने के बाद तुम सबको भूल चुके हो, किन्तु फिर भी तुम्हें उस घर को खाली करना ही होगा।

“अरूप !”

“तुम किन्दा से कितनी मोहब्बत करते हो—? यह मैं जानता हूँ । लेकिन मोहब्बत यह नहीं कहती सायलस ! कि तुम किसी का खून करो— प्यार कभी यह नहीं कहता कि अपने आराम के लिये दूसरे को मौत के मुँह में ठकेलो ।—प्रेम का यह अर्थ नहीं कि तुम फर्ज की आँखों पर बहाने की पट्टी बाँध कर मोहब्बत का खेल खेलो—? तुम्हें अपने भाई के लिये वापस जाना ही होगा ।”

“लेकिन तुमने इसका अनजाम भी सोचा है अरूप ! कि मेरे चले जाने के बाद उसका क्या हाल होगा ?”

“लेकिन तुमने भी यह सोचा है कि तुम्हारे वहाँ न जाने से उसकी क्या दशा होगी—? मैं जानता हूँ मेरे दोस्त ! कि तुम्हारे जाने के बाद वह रो-रो कर अपनी आँखें सुजा लेगी..... तड़प तड़प कर अपने आप को जला डालेगी—वह अकेली नहीं बल्कि उसके साथ ही तुम भी रोओगे और तड़पोगे । ठीक उमी की तरह छूटपड़ाओगे । किन्तु फिर भी तुम्हें अपने दिल को सभाल कर दुनिया के सामने अपने होठों पर मुस्कान लाना ही होगा ।”

“आखिर तुम दो आत्माओं को तड़पना क्यों चाहते हो मेरे अच्छे दोस्त—?”

“ताकि तुम लोगों को मालूम हो जाये कि मोहब्बत कितनी महंगी चीज है—प्यार क्या है और कैसे किया जाता है—? ताकि तुम जान जाओ कि जलना ही मोहब्बत का दूसरा नाम है ।..... तड़पना ही प्यार कहलाता है । | ताकि तुम्हें वे दिन याद आ जायें जब कि मैंने तुमसे कहा था—कि—! “मजाक ही कभी-कभी हकीकत हो जाती है सायलस—!” और तुम खिलखिला लर हँस दिये थे । उस समय तुमने रास्ते पर चलने के लिए कदम उठाया ही था, कि मैंने रोकने की कोशिश की । अपना

दामन तुम्हारे उठे हुये पैर के नीचे कैला दिया ताकि वह पैर धरती पर पड़ कर दलदल में न फँस जाये। लेकिन.....तुम न रुके। दामन को फाड़कर आगिर तुमने अपना पाँव रख ही दिया धरती पर और अब वही पैर दलदल में फँस गया है। एक भगनक दलदल में जिसमें से अगर तुम निकलने की कोशिश भी करो तो भी नहीं निकल सकने।— मैंने तुम्हें रोका लेकिन तुम बढ़ गये उस पथ पर। और अब—? और अब तुम उस पथ पर इतना आगे बढ़ चुके हो जहाँ से वापस लौट कर आना तुम्हारे बम के बाहर की बात है।”

“तुम अब क्या हो सकता है अरूप—?”

“जा होना चाहिये—?”

“अगर मैं न जाऊँ तो ?”

“मायलस !” वाक्य उठा अरूप—! “मुझे नहीं मालूम था मायलस ! कि तुम मोहब्बत के लिए किसी की जिन्दगी को धोखा दे सकते हो—!— अगर तुम मोहब्बत के लिये जिन्दगी को धोखा दे सकते हो तो क्या फर्ज के लिये मोहब्बत को धोखा नहीं दे सकते—?”

“.....!”

“ओलो—! मोहब्बत की बेदी पर कर्तव्य को बलिदान करते तुम्हें कुछ दया नहीं आती—? एक पहाड़ी लड़की के लिए तुम अपने भाई को छोड़ना चाहते हैं—? लेकिन याद रखो मायलस ! कर्तव्य और प्यार के संघर्ष में कर्तव्य की ही जीत होती है। प्यार को हार को देख कर दिल रो उठता है—मोना आग को तरह धधकने लगता है—! किन्तु फिर भी फर्ज भी तो कोई चीज है—! कर्तव्य भी तो किसी वस्तु को कहते हैं—! मानवता भी तो किसी का नाम है।—प्यार कर्तव्य को भुलाकर नहीं किया जाता मेरे दोस्त ! बल्कि मोहब्बत और फर्ज दोनों साथ-साथ चलते हैं—! अगर मोहब्बत पथ है तो फर्ज उस पर चलने वाला रही—! अगर प्यार नींव है तो कर्तव्य उस पर खड़ी इमारत—!”

इस समय सायलस दो नाव पर खड़ा था, जो कि तूफानी लहरों में हिचकोले खा रही थीं अगर एक नाव को पकड़ता है तो दूसरी चंचल लहरों में डूबती है—अगर दूसरी को पकड़ता है तो पहली गोते खाने लगती है और अगर दोनों की पकड़ता है, तो स्वयं ही लड़खड़ाने लगता है। क्या करे—? क्या न करे—? उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

आज पहली बार वह दोराहे में फँस कर रास्ता भूल रहा था।—उसका भविष्य उसे अन्धकारमय लग रहा था।

लग रहा था जैसे एक खौफनाक सीलाच आने वाला है और वह उस सीलाच में हमेशा के लिए डूब जायेगा। उसकी मोहब्बत समाप्त हो जायेगी...उसका प्यार खत्म हो जायेगा और...? और उसका भाई...?

“नहीं...नहीं वह कभी नहीं खत्म हो सकता—। एकाएक चीख उठा सायलस !—! वह कभी नहीं मर सकता...वह कभी नहीं मर सकता—! फर्ज के लिये मैं मोहब्बत को धोखा दे दूँगा...अपने भाई के लिये अपने प्यार का गला घोट दूँगा...उसके लिये मैं अपनी तमाम खुशियों को बलिदान कर दूँगा—। जिसके लिए मैंने अपना जीवन समाप्त कर दिया, अब उसीके लिए पीछे हटूँ—? अपनी मुस्कुराहट के लिए उसको मौत के हवाले करूँ—? यह कभी नहीं हो सकता।” सायलस ने पागलों की तरह अरूप के दोनों कंधों को पकड़ लिया—। “अरूप ! कल ही चले चला यहां से मेरे अच्छे दोस्त ! वरन् मेरा भाई...!” रो पड़ा सायलस कहते कहते।

“सायलस !”

“अरूप !”

“पागल न बनो सायलस ! जो फर्ज के लिए मोहब्बत को धोखा दे सकता है—वह जिन्दगी के लिए मौत को भी धोखा दे सकता है। अगर

तुम दिल से अपने भाई को चाहते हो तो / संसार की कोई भी शक्ति उसे तुम से नहीं छीन सकती !”

“तुम्हें किस तरह अपने दिल को निकाल कर दिखाऊँ मेरे दोस्त ! दुनिया में हर वस्तु का प्यार मिल सकता है किन्तु भाई का प्यार कभी नहीं मिल सकता —। अगर एक बार भाई का स्नेह छूट जाता है तो फिर यह जीवन भर नहीं प्राप्त हो सकता—उसकी मोहब्बत को तो मेरे दिल से पूछो जिसने उसके एक आँसू पर रात रात भर आँसू बहाये हैं ।—

जिसने उसके पसीने के स्थान खून की बूँदें गिराई है ।” सायलस की आँखां से टप...टप...आँसू गिर रहे थे—! “काश ! आज अगर माँ होती तो क्या तुम समझ सकते हो अरूप ! कि इस समय वह पाँच साल का नादान बच्चा तड़पता होता—? कभी नहीं—! बल्कि उसकी बीमारी को तो माँ अपने ऊपर ओढ़ लेती और उसे हँसाने के लिए अपनी हँसी को समाप्त कर देती—मगर काश ! ऐसा हो पाता कि कोई उसे माँ का दिल देता !” और सायलस अरूप से लिपट दिचकियाँ लेने लगा बच्चों की तरह ।

×

×

×

रात आधी से अधिक बीत चुकी थी । रजनी अपने प्यार को समेटे चली जा रही थी । बादल के छोटे छोटे टुकड़े आते और चाँदनी को अपनी भोली में भर कर ले जाते ।

साँय...साँय कसी हवा आती और चीड़ के पेड़ों को हिलोरे देती बढ़ जाती आगे । पहाड़ी इलाका सुनसान पड़ा था । कभी कभी चकोर के तड़पने की आवाज आ जाती—बस—! और कुछ न था शान्ति... खामोशी...सकून...!

सायलस बीरे से उठा ।

ओकरकोट पहना और चले दिया दरवाजे की ओर ।
मगर दरवाजे पर पहुँचते ही वह चौंक गया । साँस रुक गई—बदन काँप उठा—!

दरवाजे पर अरूप खड़ा था ।

“अरूप ! तुम—?”

“हाँ ।”

“इस समय यहाँ कैसे—?”

“तुम्हें रोकने के लिए !” अरूप ने उसी प्रकार गम्भीरता से कहा—!
“मुझे मालूम था कि तुम सुबह होने से पहले किसी समय भी फिन्दा से मिलने जरूर जाओगे । और इसलिए मैं रात भर इस भयानक सर्दी में यहाँ खड़ा रहा तुम्हारा रास्ता रोकने के लिये—!”

“तुम भी कितने पागल हो—!” सायलस ने फीकी हँसी हँसते हुए कहा ।

“इस समय तुम मुझे पागल कह सकते हो सायलस ! मगर याद रखो एक दिन तुम भी पागल हो जाओगे । मेरी तरह नहीं बल्कि मुझसे भी अधिक ।”

“मुझे जाने दो अरूप !” अब सायलस छुपा न सका अपने विचारों को ।

“तुम नहीं जा सकते सायलस !” उसने दोनों बाँहें फैला कर उसका रास्ता रोक दिया ।

“मेरी मोहब्बत का खून न करो मेरे दोस्त !—मेरे प्यार की इतनी बेइज्जती न करो—। दिल शीशे का होता है उसे पत्थर पर न पटको वरन् टूट कर चूर चूर हो जायेगा ।”

“यह मोतब्बत नहीं धोखा है सायलस !”

“धोखा ही सही । मगर मेरा रास्ता न रोको । अगर इस ओखे में

फँस कर मैं मर गया तो तुम मेरी लाश पर दो आँसू बहा लेना, लेकिन इस समय मेरे अरमानों का खून न करो मेरे अच्छे दोस्त !—मुझे जाने दो ताकि उससे कह दूँ कि कल मैं यहाँ से जा रहा हूँ । अगर जिन्दा रहा तो तुम्हें डोली पर ले कर बाऊंगा और अगर मर गया तो तुम्हें मौत की गोद में मिलूँगा ।—दो दिलों को जुदा करने की कोशिश न करो अरूप ! वरन् तुम खूनी बनोगे...दो प्रेमियों के खूनी—! तुम्हारे हाथ मोहब्बत के खून से रंगे जायेंगे—भगवान के लिए ऐसा न करो मेरे अरूप ।”

“मैं खूनी बनने को तैयार हूँ लेकिन आज मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा— वह एक ऐसी मंजिल है जहाँ पर इंसान कभी नहीं पहुँच सकता—! बल्कि उसकी आँखों से हमेशा आँसू टपकते रहेंगे...होटों पर सिसकियाँ उमड़ती रहेंगी...दिल में टीस रहेगी...और जिगर में तड़पन...!”

“इसीलिए मैं कह रहा हूँ, मुझे जाने दो ।”

“यह कभी नहीं होगा ।”

“अरूप !” चीख उठा सायलस ।—! “सुना है फाँसी के फन्दे में भी रूई लगा दी जाती है, ताकि खूनी की जान आराम से निकले । लेकिन तुम—? तुम एक दोस्त होकर मुझे तड़पा तड़पा कर मरना चाहते हो ।— या शायद तुम भी उससे प्या...!”

“सायलस—!” चिल्ला पड़ा अरूप पीड़ा से—! “मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद न थी सायलस ! कि तुम अपने ख्यालों को इतना जलील कर लोगे । अगर मैं उससे प्यार करता होता, तो उस दिन तुम्हें अकेला छोड़ दूसरी ओर न चला जाता । अगर मैं भी तुम्हारी तरह उसके पीछे दीवानावार घूमा करता, तो शायद इस समय वह अपनी सबसे प्यारी वस्तु भी लुटा चुकी होती । अपनी जवानी, अपनी इज्जत और अपनी आबरू को बेच चुकी होती । लेकिन मैंने उससे प्यार नहीं किया..... उसके दरवाजे पर मोहब्बत की भीख नहीं मांगने गथा । क्योंकि इन्सान जिन्दगी में एक बार ही ठोकर खाता है । केवल एक बार दलदल में फँस

कर धोखा खाता है। और अब एक बार वह धोखा खा जाता है, तो उसकी चोट उसे जीवन भर याद रहती है। और वह उस चोट को अपने सीने में ही दबाये दुनिया से चीख-चीख कर कहता है कि इस रास्ते पर मत चलो ! भगवान के लिए इस राह को छोड़ दो। वरन् तुम भी मेरी तरह तड़पोगे। तुम्हारे सीने में भी एक गहरा घाव हो जायेगा, जो अन्दर ही अन्दर सड़ कर नासूर होता जायेगा। लेकिन तुम उस घाव को किसी को दिखा भी नहीं सकोगे.....। मेरी ओर देखो—मेरे दिल में भाँक कर देखो कि वह कितनी बुरी तरह तड़प रहा है ? किन्तु फिर भी आह नहीं निकल पाती। साँस भीतर ही भीतर दबोच रही है परन्तु आँसू नहीं बह पाते—!”

“अरूप !”

लेकिन वह कहे जा रहा था—

“मुझे अफसोस है सायलस ! कि आज तक तुम अपने अरूप को पनचान न सके। उसके टूटे दिल को देख न सके। और जानते भी कैसे—? मैं तुम्हारे किसी काम तो आ नहीं सकता। मगर याद रखो सायलस ! एक दिन यही अरूप तुम्हारे सुलगते जख्मों पर मरहम रख कर तुम्हें अपने सीने से लगा लेगा ; एक दिन तुम खुद ही कहोगे—! “अरूप ! तुम ठीक ही कहते थे। काश ! उस समय मैं तुम्हारा कहना मान गया होता, तो आज यह नौबत न आती !”

“लेकिन तुम ही ने तो कहा था कि फर्ज भी कोई चीज है।”

“हाँ ! मैं अब भी कहता हूँ कि मानवता ही कर्त्तव्य का दूसरा नाम है।”

“तो फिर क्या मेरा यही फर्ज है कि मैं उसे बिना कहे ही यहाँ से चला जाऊँ—? क्या यही इन्साफ है कि उसे अकेला छोड़ कर इस पहाड़ी से दूर चला जाऊँ—?”

“.....?”

अरूप क्षण भर के लिए सोच में पड़ गया।

“अरूप ! तुम नहीं जानते कि मैंने उससे क्या-क्या वायदे किये हैं—! कौन कौन सी कसमें खाई हैं—! कितनी ही बातों का विश्वास दिलाया है। तो क्या अब उन सब कसमों को समाप्त कर दूँ—? उन सब वायदों का गला घोटकर उनका अन्त कर दूँ—? यह मुझसे कभी नहीं हो सकता अरूप ! यह मुझसे कभी नहीं हो सकता। मैं किसी को धोखा नहीं दे सकता। किसी को दिन रात तड़पने के लिए छोड़ नहीं सकता।”

“ओ ! तो अब मालूम हुआ कि तुम अन्तिम सीमा को भी पार कर चुके हो।”

“हाँ ! सीमा को पार कर अब मंजिल को दृढ़ रहा हूँ।”

“लेकिन तुमने कभी यह भी सोचा है कि क्या तुम उसे अपना भी सकोगे ? क्या तुम उसे अपना जीवन साथी बनाकर अपने दामन में लुपा सकोगे ? कभी तुमने यह भी जानने की चेष्टा की है कि पहाड़ी सम्यता कितनी आदर्श की होती है—? और उस आदर्श का खून करके उसके माँ-बाप उसका हाथ तुम्हारे हाथ में थमा देंगे—? और भूले से कभी तुमने यह भी सोचने की कोशिश की है कि तुम्हारे पिता एक पहाड़ी लड़की को अपने घर की ग्रह बनाने को राजी होंगें—? अपनी इज्जत और अपनी शान का कभी ख्याल किया है तुमने—?”

“मैं सब कुछ सोच चुका हूँ अरूप ! फिन्दा के लिए जो भी कुर्बानी देनी पड़े, मुझे मँजूर है। लेकिन मैं उसे अपना बना कर ही रहूँगा।— अगर वह पहाड़ी है तो क्या हुआ—? उसकी मोहब्बत तो पहाड़ी नहीं है। शहरी लड़कियों की तरह वह धोखेबाज और मक्कार तो नहीं है। उसके अन्दर मानवता है.....इन्सानियत है.....प्यार है...!”

“अगर तुम ऐसा करते हो तो उसका अर्थ होता है कि तुम समाज

के नियमों को तोड़ते हो। और इसकी सजा जानते हो—? समाज से अलग अकेले—!”

“मुझे मालूम है, और बहुत अच्छी तरह मालूम है कि समाज के नियम कितने मजबूत नींव पर बने होते हैं—। अगर समाज किसी को अपने में मिला नहीं सकता तो उसे क्या अधिकार है कि वह किसी को समाज से अलग करे—? और फिर इस समाज को मानता ही कौन है—अरूप ! ऐसे समाज से तो अकेले रहना ही अच्छा है।”

“फिर भी तुम्हें समझ सोच कर कदम उठाना चाहिये।”

“उठने वाला कदम तो उठ ही गया, अब तो उसे जमीन पर रखना है। फिट्टा मेरी है अरूप ! और मेरी ही रहेगी। अगर फर्ज के लिए मोहब्बत को धोखा दे सकता हूँ तो मोहब्बत के लिये दुनिया को भी धोखा दे सकता हूँ। वह भी प्रत्येक नारी की भाँति एक नारी है। उसकी भी शकल सूरत है। और.....और अगर जिन्दगी में वह मेरी नहीं होगी, अगर समाज उसे मुझसे जबरदस्ती छीनेगा, तो मौत की गोद में वह मुझे मिल जायगी। और फिर हम दोनों की आत्मा एक नये संसार में नई दुनिया ब्रह्मण के लिए चल देगी।”

अरूप समझ गया कि सायलस की बुद्धि पलट चुकी है। उस पर प्यार का नशा इतना अधिक चढ़ चुका है कि अब किसी भी हालत में वह नशा नहीं उतर सकता।

उसने धीरे से कहा—

“वहाँ जाकर इधर आने का रास्ता तो नहीं भूल जाओगे—?”

“कभी नहीं—!”

“वायदा करते हो —!”

“हाँ ! मैं वायदा करता हूँ अरूप ! कि उससे मिलने के पश्चात् मैं सीधा यहाँ आ जाऊँगा और फिर.....!” उसके दोटों पर मुस्कान खिल उठी।

अरूप ने रास्ता छोड़ दिया ।

लेकिन वह डर रहा था कि इस भयानक रात में वह वहाँ तक कैसे पहुँच सकता है—? फिर रास्ता भी खतरनाक ही है । अगर कुछ हो गया तो कोई पता भी न चल पायेगा । और फिर वहाँ जा कर वह उससे मिल भी सकेगा या नहीं—!

अरूप सोचता रहा ।

और जब उसने कुछ कहने के लिये होंठ खोले तो देखा सायलस जा चुका था । और अब वहाँ अकेला वहीं खड़ा बड़बड़ा रहा था ।

सायलस चलने को तो चल दिया । लेकिन दिल धड़क रहा था :
उसका । वह सोच रहा था—!

“फिन्दा उससे मिल भी सकोगी या नहीं । अगर उसके बापू भी वहाँ
हुय तो—?”

वह यही सब सोचता चला जा रहा था टेढ़े मेढ़े रास्ते पर ।
जैसे जैसे उसकी भोंपड़ी नजदीक आ रही थी उसके दिल की धड़कन
तेज होती जा रही थी । पैर बोझिल से प्रतीत हो रहे थे ।

अन्त में किसी तरह जा पहुँचा भोंपड़ी के पास ।
पूरा इलाका शान्त मुद्रा में सोया हुआ था ।
कभी कभी बहुत दूर से किसी जंगली जानवर के चिल्लाने की आवाज
आ जाती ।

सायलस धीरे धीरे पाँव रखता हुआ भोंपड़ी के दरवाजे तक आया ।
घबड़ाहट से उसके माथे पर पसीने की बूँदें चमक उठी थीं ।

एक बार उसने दरवाजे की दरार से झाँक कर अन्दर की दशा देखने का प्रयत्न किया। किन्तु अन्दर बिल्कुल अँधेरा था।

थोड़ी देर खड़े रहने के बाद उसने धीरे से दरवाजे को धक्का दिया। लेकिन अन्दर से कोई आवाज न आई।

एक बार उसके दिल में आया कि वह वापस चला जाये। मगर यह सोचते ही कि कल तो वह यहाँ से चला ही जायेगा।

उसके कदम रुक गये।

एक बार पुनः उसने दरवाजे को धक्का दिया।

मगर कोई जवाब न मिला। केवल उसे यह अवश्य मालूम हुआ जैसे अन्दर किसी ने करवट ली हो। साथ ही उसने फिर दरवाजे को धक्का दिया। अब की कुछ तेज आवाज थी।

“कौन है—?” अन्दर से एक अलसाई हुई आवाज आई।

“फिन्दा—!” सायलस ने दरवाजे की दरार से मुँह लगा कर कहा।

“सायलस—!”

और दूसरे ही क्षण दरवाजा खुल गया।

सामने फिन्दा खड़ी थी। बाल बिखरे हुये थे और दुपट्टा भी अँधेरे में जाने कहा पड़ा था।

“आप—?” फिन्दा का मुँह खुला ही रह गया।

“हाँ—!” एक छोटा सा उत्तर मिला।

“इस समय कैसे—?” उसे आश्चर्य हो रहा था।

“नीचे चलो, तुमसे कुछ बातें करनी है।”

फिन्दा डरी नहीं। धोरे से दरवाजा बन्द किया और उतरने लगी पहाड़ी से नीचे। पीछे पीछे सायलस भी उतरने लगा।

“सँभल कर उतरियेगा!” फिन्दा ने चलते हुए कहा—! “अँधेरा है, रास्ता देखकर चलियेगा!”

“कोशिश तो यही कर रहा हूँ कि सँभलकर ही चलूँ। आगे...!”

“आगे क्या—?” फिन्दा रुक गई ।

“आगे भगवान जाने ।” सायलम ने मुस्कुराते हुये कहा ।

दोनों फिर चलने लगे ।

श्रीर चलते चलते जा पहुँचे उस चट्टान के पास जिस पर उनके मोहब्बत की नाय बनी थी । श्रीर अब इमारत बनाने के खाद्य देख रहे थे । शायद वे इमारत बना भी पायेंगे अथवा इमारत के बनने में पहले ही खँडहर बन जायेंगी ।

“तुम सोच रही होगी फिन्दा ! कि मैं इस समय कैसे आया—?” सायलस ने ब्रेष्ठते हुये कहा ।

“सोच तो यही रही हूँ । लेकिन····।”

“लेकिन मजबूरी इन्सान को सब कुछ करा देती है । विवगता मनुष्य को भयानक ख ई मैं भी कूड़ने के लिये मजबूर कर देती है ।”

“क्या मतलब—?” फिन्दा कुछ गड़म सी गई । उस अपना वह स्वप्न याद आ गया कि कर् वैसा ही स्वप्न इस रात में हकीकत बनकर तो नहीं आने लगा ।

“फिन्दा ! मनुष्य जब दो राहों पर आखड़ा होता है तो उसे एक राह को कुछ समय के लिये त्यागना ही पड़ता है । अगर वह एक का त्याग नहीं करता तो इसका अर्थ यह होता है कि वह उसी जगह जीवन भर खड़ा रहे और उन राहों को भी पुनसान रख कर स्वयं भी कशमकश में पड़ा रहे ।”

“साफ साफ बता दीजिये क्या बात है—?”

“बात तो····छोटी सी है किन्तु अनजान बहुत बड़ा और भयानक है ।”

“क्या कहा—?” फिन्दा के दिलपर जैसे किसीने बहुत बड़ी चोट पहुँचा दी हो ।

“आज पिता जी की तार आई है । जिसमें उन्होंने तुरन्त

“सायलस !” सायलस की बात पूरी होने से पहले ही चौख उठी फिन्दा ।

“पूरी बात तो सुन लो फिन्दा !”

“बात—?” अवाज भर आई उसको—! “अभी और कुछ कहना बाकी है—? कह दीजिये ताकि आपकी बात पूरी ही हो जाये ।”

“तुम गलत सोच रही हो फिन्दा !”

“आप ठीक कह रहे है ।” दो आँखें लुढ़क गये उसकी गालों पर—! “मैं बहुत गलत सोच गई सायलस बाबू ! लेकिन आप तो अपने ठोक रास्ते पर जा रहे थे । कहाँ गये आपके वे बायदे जिन्हें आपने इन चटानों के बीच सैकड़ों और हजारों बार दोहराया था ? कहाँ गई आपकी वे सब बातें जिन्हे आपने पहाड़ी के उसपार गगन की छाया में चाँद और सितारों के सामने की थीं ?—मुझे नहीं मालूम था सायलस बाबू ! कि आप भी लहर की भाँति किनारे को टुकटाकर आगे बढ़ जायेगे—

“फिन्दा !”

मगर वह कहे जा रही थी—

“अभी तक तो केवल मुना ही था कि पहाड़ी पर जो परदेशी आते हैं वे केवल अपनी गर्मी को शान्त करने के लिये ही आते हैं । और जब उनकी गर्मी बुझ जाती है तो वे पहाड़ी को टुकटा कर अपने घर चले जाते हैं । मुझे विश्वास नहीं था कि यहाँ पर आने वाले राही केवल चँद दिनों के मेहमान बनकर ही आते हैं—लेकिन ? लेकिन आज मैंने अपनी आँखों से देख लिया । आज मुझे मालूम हो गया कि लोग यहाँ आते है, केवल जाने के लिए, ठहरने के लिये नहीं ।”

“तुमने मुझे अभी तक पहचाना नहीं फिन्दा !”

“और शायद कभी पहचान भी नहीं सकती। लेकिन जीवन के अन्तिम सांस तक मेरे दिल में एक टीस-सी उठती रहेगी। वह टीस दिल की आह होगी सायलस बाबू!—परवाने को जलाने के बाद शमा भी जलती ही रहती है आप मुझे तड़पाकर जाने के बाद कभी आराम में नहीं रह सकते।”

“और मैं आराम से रहना भी नहीं चाहता। मेरा शरीर तो वहाँ होगा मगर मेरी आत्मा तो यहाँ सिसकती होगी फिर भला कैसे आराम से रह सकूँगा—? प्यार आत्मा का होता है, शरीर का नहीं किन्दा! शरीर तो एक मिट्टी की काया है। साँस की डोर टूटते ही वह मिट्टी, मिट्टी में ही मिला जाती है।”

“लेकिन आपने तो आजीवन साथ निभाने का वायदा किया था।”

“मैं अब भी अपने वायदे पर कायम हूँ।”

“तो फिर?”

“मजबूरी ने दामन पकड़ लिया है।”

“तो आप मजबूरी के लिये मोहब्बत का खून करना चाहते हैं?—लाचारी के लिये प्यार को दफनाना चाहते हैं?”

“नहीं! बल्कि उस मोहब्बत और प्यार को छुपा कर उसकी नींव को और भी मजबूत बनाना चाहता हूँ।”

“इस प्रकार नींव खोखली हो जाती है सायलस बाबू! मजबूत नहीं होती।”

“यह मनुष्य की भूल है। अगर उसमें वहम के कीड़े न पड़ें, अगर उसके दिल में शक की दीमक न लगे, तो उसके प्यार की नींव बराबर मजबूत होती जाती है।”

“जाने वाले को कोई रोक नहीं सकता सायलस बाबू! मगर अपनी परियाद को तो सुना सकता है।—मुझे ऐसी आशा न थी कि कोई मेरे

जीवन में प्रकाश बनाकर अयेगा और अन्धेरा देकर चला जायेगा। मगर नारी की तकदीर ही में रोना लिखा होता है तो फिर कैसे तूह-होठों पर मुस्कान ला सकती है ? आप जाने को तो तैयार हो गये किन्तु आपने किसी दूसरे का भी ख्याल किया—? मैं आपको कोई दोष नहीं दे सकती, दोष तो उस दिल का है जिसने बिना रास्ते को देखे ही मोहब्बत का दामन पकड़ा। उसे नहीं मालूम था कि वह दामन जिसे वह फूल समझ कर पकड़ना चाहता है काँटों से भरा होगा। मुझे नहीं मालूम था कि प्यार का अंजाम ही आँसू बहाना होता है।”

“तुम्हें कैसे समझाऊँ—? अगर मेरी जगह तुम होती फिन्दा ! तो तुम भी वही कुछ करती जो इस समय मैं कर रहा हूँ।—मनुष्य का प्यार अकेला कभी नहीं चलता फिन्दा ! उसके साथ एक और डोर बँधी होती है जिसे कर्तव्य कहते हैं। कर्तव्य और प्यार दो पतवार हैं जो मनुष्य जीवन की जीवन नइया को इस अथाह सागर में खेते चलते हैं। एक पतवार के टूटते ही दूसरा पतवार बेकार हो जाता है और नौका चंचल लहरों में डूबने लगती है। तो क्या फिन्दा ! एक पतवार को छोड़ नइया को डुबोना अच्छा है अथवा दोनों पतवारों को पकड़ कर इस जीवन सागर को पार करना अच्छा है।”

“आपने प्यार के पतवार को तो पकड़ा था मगर उसके बाद कर्तव्य, की पतवार को पकड़ना क्यों भूल रहे हैं।”

“उसी कर्तव्य की पतवार को तो पकड़ने के लिये तुम्हारे पास आया हूँ। बोलो ! क्या तुम उस पतवार को पकड़ने दोगो—?”

“.....!”

“बोलो !”

“हाँ !”

“फिन्दा !” वह खुशी से नाच उठा—! “तुम कितनी अच्छी हो फिन्दा ! याद रखो प्यार का सौदा एक ही बार होता है बार बार नहीं । सायलस तुम्हारा है और मौत तक तुम्हारा ही रहेगा । लेकिन...!”

“लेकिन क्या—?”

“लेकिन इस समय अपने सायलस को जाने दो ।”

“कहाँ—?” एक बार फिर वह चौंक गई ।

“कर्तव्य की पतवार को पकड़ने के लिये ।—देखो वह डूबती जा रही है । उसे बचा लो वरन् नहया भी डूब जायेगी और उसमें बैठे सुसाफिर भी छुत हां जायेंगे ।”

“कर्तव्य की पतवार तो आपके सामने ही बैठी है । पकड़ लीजिये ना ।”

“नहीं ! वह पतवार बनारस के उस सुनसान चमन में है जहाँ भयानक तूफान का जमघट लगा हुआ है और उस तूफान में वह पतवार हिचकोले खा रही है फिन्दा ! उसे सँभाल लेने दो ! वरन् हमारे इस प्यार की पतवार भी टूटकर भँवर की गोद में चली जाये.....”

“सायनस !”

“मुझे जाने दो फिन्दा ! मैं वायदा करता हूँ कि वहाँ से बहुत जल्द तुम्हें लेने आऊँगा । और फिर तुम हमेशा के लिये मेरे साथ रहोगी ।”

“मैं अब तक नहीं समझ सकी कि आप वहाँ किसके लिये जा रहे हैं ।”

“वहाँ— ? वहाँ अपनी दूसरी जिन्दगी के लिये । वहाँ मेरा भाई चिमार है फिन्दा ! उसकी हालत खतरनाक है । उसकी लौ काँप रही है जो किसी समय भी बुझ सकती है । अगर मैं न पहुँच सका तो जानती हो क्या अनजाम होगा— ? दो रास्तों के बीच मैं जीवन भर लटकता

रहूँगा—दो दीवारों के बीच तड़पता रहूँगा। और फिर तुम मुझे कभी नहीं पा सकती फिन्दा ! फर्ज वह इमारत है जिस के सामने मोहब्बत को भी झुकना पड़ता है। फर्ज को एक ओर रख कर प्यार नहीं किया जा सकता । ताली बजाने के लिये दोनों हाथों की जरूरत होती है फिन्दा । और इस सागर रूपी संसार को भी पार करने के लिये दोनों पारवारों की आवश्यकता होती है । क्या तुम चाहती हो कि एक को ताड़ कर केवल दूसरी ही पतवार से नइया खेई जाये । लेकिन यह बहुत कठिन है फिन्दा बहुत कठिन है । एक पतवार से नइया चक्कर काटने लगती है और अन्त में उसे तूफान की आगोश में आसरा लेना पड़ता है ।

“.....!”

“तुम मेरे दिल को धड़कन को नहीं सुन सकती फिन्दा ! मेरी बकरारी को नहीं जान सकती कि किस हालत में मैं तुम से जुदा हो रहा हूँ । मेरा सीना फटा जा रहा है लेकिन होंठों से आह नहीं निकल पाती—दिल में सैकड़ों तीर चुभ रहे हैं किन्तु फिर भी आँसू नहीं बह रहे । इससे भी बढ़कर कोई बेताबी हो सकती है, उमड़ती हुई मोहब्बत को दबाया जा रहा है—? उमड़ते हुये प्यार के तूफान का गला धोया जा रहा है ? मगर फर्ज भी तो किसी वस्तु का नाम है । मानवता भी तो किसी चीज को कहते हैं ।”

फिन्दा चुप चाप बैठी सुन रही थी । उसकी आँखों से टप.....टप आँसू बह रहे थे ।

“इतने आँसू न बहाओ फिन्दा ! भगवान के लिये पोछ डालो इन आँसूओं को । यह एक ऐसी दौलत है जो मनुष्य के दुख में काम आती हैं । अगर इस दौलत को ऐसे ही बहा दोगी तो उस समय आँसू भी न निकल पायेंगे ।”

“अब इसके सिवाय और रह ही क्या गया है ?” फिन्दा ने रोते हुये कहा ।

“इसी लिये कह रहा हूँ कि इन्हें बचा कर रखो । वरन् पछुता-ओगी । लेकिन गई दौलत हाथ नहीं आती ।”

वह रोती ही रही

“पोंछ डालो फिन्दा ! तुम्हें मेरी कसम है.....मेरे खून की कसम है पोंछ डालो इन आँसूओं को !”

फिन्दा ने आँसू तो पोछ लिये लेकिन दिल न पोछ सकी । वह तो वैसे ही रो रहा था ।

“एक बार मुस्कुरा दो.....केवल एक बार अपनी मुस्कान से पहली मुलाकात की याद दिला दो ।”

“दिल मुस्कुराता है होंठ नहीं ।

“तुम्हें मेरी कसम है केवल एक बार हँस कर कह दो कि जाओ कर्तव्य की पतवार तुम्हारे हाथ में आयै और तुम दोनों पतवारों के मालिक बनो ।”

“.....!”

“हँस दो फिन्दा ।”

और न चाहते हुए भी फिन्दा को अपने अधरों पर एक झूठी मुस्कान लानी ही पड़ी ।

उसने फीकी मुस्कुराहट निखरते हुये कहा—? “भगवान आपका साथ दे ।”

रात धीरे-धीरे चली गई और भोर आने लगी । तमाम चीजों पर सफेदी की लहर दौड़ने लगी !

सायलंस ने उठते हुये कहा—? “घबड़ाया नहीं फिन्दा ! तुम्हारा सायलंस बहुत जल्द तुम्हें लेने आयेगा ।” उसका जी चाहा कि जाते समय वह फिन्दा को जी भर कर प्यार कर ले । किन्तु मानवताने उसका रास्ता रोक

दिया। आदर्श ने उसके मचलते अरमानों का अन्त कर दिया। और वह आह भर कर रह गया।

“आखीरी समय मुस्कुरा दो फिन्दा !”

और उसके अधरों पर अनायास ही मुस्कान नाच उठी। एक फीकी मुस्कान, निरस हँसी,...!

एक बार सायलस ने उन चट्टानों को देखा, पेड़ों को निहारा और फिर फिन्दा की ओर देखते हुए कहा—? “अच्छा फिन्दा ! जिन्दगी अथवा मौत में कहीं न कहीं मैं जरूर तुम से पहाड़ी के उस पार इन्हीं चट्टानों में मिलूँगा।”

निगाहें मिलीं

और.....

सायलस चल दिया एक रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते की ओर। एक बार उसने घूम कर देखा फिन्दा वैसे ही खड़ी थी। उसको आँखें अन्न भी गीली थी।

लेकिन कर न सका कुछ भी एक राह को तो त्यागना ही पड़ता उसे। और इस समय उमने मोहब्बत की राह को छोड़कर कर्तव्य की राह को पकड़ा था।

फिन्दा देखती रही

सायलस चलता रहा।

वह देखती ही रही—

और देखते ही देखते, सायलस उसकी आँखों से ओझल हो गया।

दूसरे दिन—

और दूसरे दिन से वह सिसकती ही रही, चट्टानें खमोश पड़ी थीं। सोते का पानी बीमार नारी की तरह चला जा रहा था। और फिन्दा उन्हीं पत्थरों पर बैठी तड़प रही थी।

उसकी सिसकियाँ पेड़ों और पहाड़ों से टकरा कर वापस आ रही थी ।
कोई उसके आँसूओं को पोछने वाला भी न था ।

जहाँ एक दिन कहकहे गूँजते थे वहाँ आज सिसकियाँ गूँज रही हैं ।
जहाँ प्यार की बातें हुआ करती थी अब वहाँ सुनसान खामोशी निखरो
पड़ी है ।

सायलस चला गया और फिन्दा को छोड़ गया घुट घुट कर पड़पने
के लिये ।



और दूसरे दिन सुबह ही वह मोटरपर बैठ कर पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। मोटर कंकड़ीली सड़क पर होती हुई लैंसडाउन आई। वहाँ थोड़ी देर के लिये मोटर खड़ी हुई।

सायलस खिड़की के पास बैठा सोच रहा था और अरूप उस पहाड़ी शहर की अन्तिम भाँकी ले रहा था। नजर धुमते-धुमते एकाएक जा पड़ी सामने वाली भोपड़ी पर और साथ ही उसके मुँह से धीरे से फूट पड़ा—
“फिन्दा !”

“फिन्दा !” चौक गया सायलस। भावनाओं का बाँध टूट गया।
“कहाँ है फिन्दा ! अरूप—?”

“वह देखो सामने अपनी भोपड़ी के पास खड़ी है।”

सायलस ने देखा बिखरे बाल। मुरझाया चेहरा जैसे महीनों बीमारी के बाद वह चारपाई से उठी हो। उसकी आँखों में अब भी रात के मोती चमक रहे थे।

आ गया मोटर से बाहर। उसका जी चाहा कि वह मोटर को छोड़ कर उसके पास चला जाये। किन्तु अरूप जो पास ही बैठा था। अरमानों को दबा कर रह गया। आँसूओं को पी कर चुप हो गया।

सायलस को देखते ही फिन्दा उसकी ओर दौड़ी। सूखे बाल हवा में उड़ उड़ कर सायलस को मानों आग्वीरी अलविदा कह रहे हों।

ज्यों ज्यों वह नजदीक आ रही थी सायलस के दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी।

लेकिन.....!

तभी मोटर ने हार्न बजाया और गाड़ी स्टार्ट हो गई।

तड़प उठा सायलस।

फिन्दा दौड़ती आ रही थी।

वह बेचैन हो रहा था

और मोटर स्टार्ट हो गई थी।

वह उस तक पहुँचना चाहती थी। एक के बाद दूसरा पॉव तेजी से रख रही थी।

मगर.....!

ज्योंही वह मोटर के पास पहुँची मोटर चल दी। फिन्दा केवल हाथ फैलाकर रह गई और सायलस कैदी की तरह फड़फड़ा उठा।

फिन्दा का पेंछी उड़ गया और वह देखती रह गई।

मोटर चालिस मील की गति से पहाड़ी ढाल पर उतरती जा रही थी। लैंसडाउन बहुत पीछे छूट गया था और फिन्दा भी दूर हो गई थी।

दां घण्टों के बाद मोटर साढ़े छे हजार फुट ऊँचे पहाड़ों से नीचे मैदान में आई। यह पहाड़ी स्टेशन ऐसा मालूम पड़ता था जैसे बड़ी चट्टान को खोद कर ही बनाया गया हो। दिन भर प्लेटफार्म पर बैठे रहने के बाद शाम को कभी-पाँच बजे गाड़ी कोटद्वारा स्टेशन पर आई। किसी तरह भारी कदमों से सामान रखा और चल दिया कर्तव्य की राह पर।

गाड़ी के पहियों के साथ ही साथ सायलस का दिमाग भी दौड़ रहा था। कभी वह बनारस की गलियों में जा पहुँचता और कभी उन्हीं ऊँची ऊँची पहाड़ियों पर जहाँ उसकी जिन्दगी का एक नया भाग शुरू

हुआ था। जहाँ उसके जीवन में एक तूफान लाने वाली घटना पड़ी तड़प रही थी। कभी उसे फिन्दा की दशा का ज्ञान होने लगता और कभी ऐलफी की बीमारी उसके शरीर को कँपा देती।

पहाड़ियाँ भागती जा रही थीं पीछे की ओर वह बढ़ता जा रहा था आगे। धीरे धीरे पहाड़ी इलाका समाप्त हो गया—और एक नया इलाका शुरू हुआ, यहाँ की भाड़ियाँ, यहाँ के पेड़, फूल और फल सभी उसे नीरस से मालूम पड़ रहे थे। जैसे उनकी एक एक पत्ती सुरभाई हुई है। यहाँ के व्यक्ति उसे बिल्कुल नये मालूम पड़ रहे थे। जिनके डरावने चेहरे पीले दिखलाई पड़ रहे थे। उसे लगा जैसे यह सभी खूनी हों। उसके मोहब्बत के कातिल हों। उसे उनके हाथ खून से रंगे हुए दिखलाई दे रहे थे।

उसका जी चाहा कि वह इस इलाके से भी बहुत दूर चला जाये। जहाँ ये भयानक मनुष्य न हों—जहाँ यह सूखे पेड़ और भाड़ियाँ न हों। किन्तु...!

गाड़ी नजीहाबाद में रुकी। बनारस जाने के लिए यहाँ से गाड़ी बदलनी पड़ती है। आखिर किसी तरह रात को ग्यारह बजे उसे बनारस जाने वाली गाड़ी मिली और वे दोनों चढ़ गये अपने पुराने शहर जाने के लिये।



एक के बाद दूसरी सीढ़ियों को लाँघता हुआ वह तेजी से चला जा रहा था अपने कमरे की ओर। क्योंकि उसे मालूम था कि ऐलफी वहीं होगा।

दरवाजे पर पहुँचते ही उसने देखा ऐलफी अकेला सोया पड़ा है। कोई उसको देखने वाला भी नहीं है। पास पड़े मेज पर दवाई की शीशियाँ पड़ी हैं।

धीरे धीरे पाँव बढ़ाता हुआ उसकी चारपाई के पास गया। पाँच वर्ष का बच्चा चुपचाप पड़ा था। बदन आग की तरह तप रहा था। एक बार उसने सोचा कि उसे न जगाये। लेकिन दिल न माना। पूरे दो महीने हों गये थे ऐलफी से जुदा हुए।

उसके बिस्तर पर बैठते हुए सायलस ने धीरे से पुकारा—! “ऐलफी—!”

“.....!”

“ऐलफी !”

“.....!”

उसने प्यार से उसके माथे पर हाथ फेरते हुए पुनः बुलाया—
“ऐलफी !”

ऐलफी चौंक गया ।

धीरे से आँख खोली और साथ ही चिल्ला पड़ा ।

“भइया !”

“ऐलफी !” सायलस की आँखें गीली हो गई ।

“भइया ! तूम कहाँ चले गये थे भइया ?” उसने उठने की कोशिश की ।

“कहीं नहीं ऐलफी कहीं नहीं ।” और सायलस ने लगा लिया उसे अपने सीने में । उसकी आँखों में रुके आँसू बढ़ चले । ऐसा लगा जैसे उसने ऐलफी को नहीं बल्कि किसी गरम लोहे के टुकड़े को सीने में लगाया हो । नून कण काँटा हो चुका था वह एक एक हड्डी नंगी हो चुकी थी ।

“अब तो नहीं चले जाओगे भइया ।” उसने रोते हुए पूछा ।

“नहीं ऐलफी !” वह भी रो रहा था—! “अब तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा ।”

“मेरे डाक्टर बन जाऊँगा न भइया ?” ऐलफी ने फिर अपने रटे हुए शब्दों को कहा ।

“हाँ ! तुम जरूर डाक्टर बनोगे !” सायलस ने उसके आँसुओं को पोछते हुए कहा ।

कैसे कहता कि अभी तो वह खुद ही मरीज है, डाक्टर कैसे बन सकता है ? डाक्टर तो दूसरों को अच्छा करते हैं । उनकी दवाइयाँ तो लोगों के लिए होती हैं अपने लिए नहीं । और जो स्वयं ही मरीज हो वह दूसरों का मरज क्या अच्छा करेगा—जो खुद ही बीमार हो वह दूसरों की बीमारी को कैसे ठीक कर सकता है ?

“भइया !” उसका आँख अब भी गीली थीं “तुम चले गये थे तो देखो मेरी क्या हालत हो गई है—!”

“.....!”

सायलस देखता रहा।

“तुमने बहुत देर कर दी भइया ! नहीं तो मुझे बुखार न आता।”
उसने बच्चों जैसी बातें करते हुए कहा।

“रोओ नहीं ऐलफी ! अब तुम्हारा भइया हमेशा तुम्हारे पास ही रहेगा !”

“आप क्यों रो रहे हैं—?”

“मैं—?नहीं तो...देखो...मैं रो कहाँ रहा हूँ !” उसने झूठी हँसी
हँसते हुये कहा—! “मैं तो हँस रहा हूँ।”

“आप झूठ बोल रहे हैं...आपकी आँखें गीली है।”

“ऐलफी !” फूट पड़ा सायलस उसे छाती से लगा कर।

“भ...इया !” उसकी जुवान काँप रही थी।

“तुम अच्छे हो जाओगे ऐलफी ! अब तुम बिल्कुल अच्छे हो जाओगे।”

“हाँ ! आप आ गये हैं, अब मैं ठीक हो जाऊँगा भइया !”

सायलस ने उसे बिस्तर पर लेटा दिया।

“पिता जी कहाँ गये हैं—?”

“दवाई लेने गये है।”

“तो तुम अकेले ही पड़े रहते हो—?”

“नहीं ! मँगरू भी रहता है।”

तभी उसके पिता डाक्टर को साथ लिये हुये कमरे में आये।

“पिता जी नमस्ते !”

“कब आये बेटे !” उनके चेहरे की लाली भी गायब हो चुकी थी।

“अभी चला ही आ रहा हूँ। ऐलफी को तो बहुत तेज बुखार है।”

“हाँ ! तुम्हारे जाने के बाद । यह तुम्हें बहुत याद करता था । पहले तो थोड़ा थोड़ा बुखार आता था मगर धीरे धीरे यह बुखार बढ़ता ही गया और अब.....!”

डाक्टर ऐलफी को देख रहा था उसके सीने, पेट और जुवान आदि को अच्छी तरह देखने के बाद दवाई का पुर्जा देते हुये कहा । “यह दवाई दो दो घंटे बाद दीजियेगा ।”

“खतरनाक बिमारी तो नहीं है डाक्टर साहब !”

सायलस ने देखा डाक्टर साहब के माथे पर बल पड़ गये थे ।

“बिमारी बहुत आगे बढ़ चुकी है । फेफड़े खोखले हो चुके हैं और.....!” एकाएक चुप हो गया डाक्टर ।

“और क्या डाक्टर साहब—?”

“और टी० बी० के कीड़े.....”

“डाक्टर !” चीख उठा सायलस—! “उन कीड़ों को जला डालिये डाक्टर साहब ! नहीं तो वे मेरे ऐलफी को गला देंगे..... जितना रुपया चाहिये मैं दूंगा डाक्टर साहब ! लेकिन मेरे भाई को बचा लीजिये । उसके फेफड़ों में लगे हुए कीड़ों को खत्म कर दीजिये !”

“अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगा । आगे !” डाक्टर बात पूरी किये बिना ही बाहर चला गया । उसके पिता भी डाक्टर के साथ जा चुके थे और सायलस खड़ा बड़बड़ा रहा था ।

“आगे.....! यह भी क्यों न कह दिया डाक्टर साहब ! कि आगे भगवान जाने । अगर इन्सान भगवान के ही भरोसे रहता है तो फिर आप जैसे डाक्टरों को वह क्यों बुलाता है, जो केवल रुपया लेना ही जानते हैं । जिन्हें अपनी फीस से ही मतलब रहता है । मरीज की बीमारी से नहीं । वह चाहे मरे या जीये ।—अगर वह अच्छा हो जाता है तो दुनियाँ कहती है फलाना डाक्टर ने अच्छा किया और जब वह मर जाता है तो

उसके साथ भी दुनिया यह क्यों नहीं कहती कि फलों डाक्टर ने मारा है—? उस समय तो सभी लोग केवल यही कहते हैं कि भगवान को यही मजूर था ।” सायलस ने एक बार उस पुर्जे की ओर देखा ! “अगर मनुष्य का भविष्य भगवान ही जानता है । अगर इन्सान की जिन्दगी और मौत भगवान के ही हाथ है तो यह पुर्जा किस मर्ज की दवा है—? इस दवाई से क्या फायदा—? जब कि यह मौत को जिन्दगी में नहीं बदल सकती ।”

उसका जी चाहा कि वह उस पुर्जे के टुकड़े टुकड़े कर दे । लेकिन जाने क्या सोच कर उसके हाथ रुक गये ।

वह ऐलफी के पास आया । फिर वापस जा बैठा कुर्सी पर

“डाक्टर साहब । आप ने तो जवाब दे दिया लेकिन मैं जवाब नहीं दे सकता । मैं अपने भाई को भगवान के भरोसे नहीं छोड़ सकता । उसे मौत कभी मुझसे नहीं छीन सकती । वह जिन्दा रहेगा—उसे ठी० बी० के कीड़े कभी अपनी आगोश में नहीं ले सकते । मैं उन कीड़ों को जलाकर राख कर दूँगा—ऐलकी जिन्दा रहेगा—उसे जिन्दा रहना पड़ेगा—अपने लिये नहीं बल्कि अपने भाई के लिये—उसे कोई मुझ से नहीं छीन सकता.....! कोई नहीं छीन सकता—कोई नहीं छीन सकता !!!

सूरज डूब चुका था ।

पर उसका प्रकाश अभी बाकी ही था । दूसरी ओर चाँद निकल चुका था । मगर उसका प्रकाश अभी धरती को छू न पाया था ।

धीमे धीमे प्रकाश अंधकार में बदलता जा रहा था । पँछी अपने घोंसलों को वापस जा रहे थे । पहाड़ी किसान अपने खेतों को चाँद के हवाले कर अपनी भोपड़ियों में आने के लिये पहाड़ों पर चढ़ रहे थे ।

बापू बहुत ऊँची चोटी पर खड़ा नीचे बहुत नीचे धरती को देखने का प्रयास कर रहा था । किन्तु वहाँ से धरती माता कैसे दिखलाई पड़ती । उसे तो पेड़ों और पहाड़ों की चट्टानों ने ढाँक रखा था ।

कंधे पर टकुआ रखे बापू चारों ओर देख रहा था । तभी कोई व्यक्ति धीरे धीरे चट्टान पर चढ़ा । एक बार उसने पीछे की ओर देखा और फिर बापू को पीछे से ढकेल दिया ।

“आह—!”

एक भयानक चीख गूँजती हुई हजारों फुट नीचे विलीन हो गई ।
बापू का शरीर पहाड़ों पर से लुढ़कता हुआ निचे चला जा रहा था ।

व्यक्ति भी जाने कहाँ गायब हो गया था

इलाके का सरदार इस दुनियाँ से चला गया था.....पंचायत का
सरपंच अपने इलाके को छोड़ चुका था ।

X

X

X

फिन्दा भोंपड़ी के बाहर बैठी थी । सिर के बाल इधर उधर लहरा
रहे थे । आँखें गीली थीं और चेहरा पीला पड़ा हुआ था ।

गुरदू दौड़ता हुआ भोंपड़ी में घुस गया । फिन्दा देखते ही डर गई ।
गुरदू का साँस बड़ी तेजी से चल रही थी । माथे से पसीने की बूँदें
चूकर कपड़ों को भिगानेकी कोशिश कर रही थीं । कहीं कहीं पर मिट्टी
भी लगी हुई थी । और घुटनों और कुहनियों का माँस छिला हुआ था ।

फिन्दा भी अन्दर आ गई ।

“क्या हुआ भइया ?” फिन्दा ने आश्चर्य हो पूछा ।

“कुछ नहीं फिन्दा । जा बाहर खेल ।” गुरदू ने पसीने को पोछते
हुये कहा ।

उसके चेहरे से मालूम हो रहा था जैसे वह किसी का खून करके
आ रहा है । उसके कपड़ा में लगी मिट्टी साफ बता रही थी कि वह किसी
मकान के पीछे से उस मकान में घुसा था जिनमें से जगह जगह से खून भी
निकल रहा था ।

फिन्दा यह सोच कर कि अगर भइया पकड़ा गया तो...!

इससे पहले कि वह कुछ और कहती गुरदू ने उसके विचारों को
तोड़ते हुये कहा—!

“एक गिलास पानी देना फिन्दा !

“अच्छा भइया !”

और फिन्दा ने एक गिलास में ठंडा पहाड़ों की चट्टानों के बीच से निकला हुआ प्राकृतिक पानी डाला और गुरदू के हाथों में देती हुई बोली ।

“आज इतने घबड़ाये हुये से क्यों हो भइया !”

“भैं···नहीं···नहीं तो···!” उसने अपनी घबड़ाहट को छुपाने का प्रयास किया !

“किसी से लड़ाई हो गई है क्या—?”

“लड़ाई—? नहीं ··सुभे कुछ नहीं हुआ है फिन्दा ।”

“फिर आप इतने परेशान से क्यों हैं !”

फिन्दा की बातें सुनकर चिल्ला उठा गुरदू । वह नहीं चाहता था कि कोई उसके सामने रहे । और रह-रह कर उसको परेशान किया करे ।

“सुभे सोने दे फिन्दा ! जा बाहर खेल ।”

“नहीं भइया तुम्हें बताना ही होगा ।”

“जायेगी या नहीं ?” गुरदू ने डाँतते हुये कहा ।

और फिन्दा चुपचाप बाहर आ गई । वह जानती थी कि अगर गुरदू को गुस्सा आ जाये तो वह अपनी जान तक भी देने को तैयार हो जाता है । दूसरों को मारना तो उसके मजाक का खेल है ।

गुरदू चारपाई पर लेटा हुआ था और फिन्दा बाहर बैठी सोच रही थी—

कितना गिर चुका है मानव—!

एक मनुष्य इन्साफ का पुजारी और दूसरा खून का पुजारी । एक नदी से दो नहरें निकलती हैं किन्तु दोनों ही दो रास्तों पर जाती हैं । एक

नहर उजाड़ जमीन को उपजाऊ भूमिका रूप देती है। वहाँ के लोग उसकी पूजा करते हैं, भूमि हरे भरे खेतों से भूम उठती है।—मगर दूसरी नहर उसे चमन को भी विगन कर देती है। वहाँ पर बसने वालों को उजड़े खँड़हों में जाने के लिये मजबूर कर देती है और वहाँ के लहलहाते खेतों को मिट्टी में मिला देती है।

कितना अन्तर है दोनों में ?

एक पिता के दो पुत्र होते हैं किन्तु दोनों की तकदीर अलग अलग होती है। एक आराम से पेट भर रोटी खाता है और दूसरा लोगों का खून कर जीवनभर जेल में बिताता है।

मानव के दो रुख-दो तस्वीरें, बिल्कुल साथ साथ चलती हैं, सँग सँग बढ़ती हैं और फिर एक साथ ही जीवन को छोड़ मौत से प्यार करने लगती हैं। मनुष्य मर जाता है मगर मानवता जीवित रहती है।—दानव समाप्त हो जाता है मगर दानवता जिन्दा रहती है।

जिमका बाप इन्साफ का पुत्राग्री और न्याय का प्रेमी था उसी का बेटा रुपये का भूँवा और खून का प्यासा है।

भगवान की दो औलादें कभी एक राह पर नहीं चल सकती। एक अगर आकाश को चूमने जाता है तो दूसरा पाताल को छूने की कोशिश करता है।—एक मानवता वा खून करना सबसे बड़ा गुनाह और पाप समझता है तो दूसरा मानवता को जीवित रखना ही सबसे बड़ा गुनाह और पाप समझता है।

किन्दा बैठी यही सब सोच ही रही थी कि उसके कानों में बहुत सी मिली जुली आवाजें आईं।

भावना टूट गई।

विचार छिन्न भिन्न हो गये।

और वह ध्यान से उन आवाजों को सुनने लगी।

आवाजें तेज होती जा रही थीं। जैते बहुत से व्यक्ति नीचे से ऊपर आ रहे हो। पहले तो उसने कोई विशेष ध्यान न दिया मगर दूसरे ही क्षण उसे लगा जैसे कोई बापू का नाम ले रहा हो।

धीरे धीरे आवाजें बिलकुल समीप आ गईं।

उसने देखा बहुत से व्यक्ति किसी आदमी को उठाये चले आ रहे हैं।

फिन्दा सहम सी गई।

खड़ी हो गई।

तभी एक आदमी ने पास आते हुये कहा ? “गजब हो गया छोटी बीबी !”

“क्या हुआ—?” फिन्दा चौंक गई !

“छोटी बीबी.....बड़े सरकार”

“बड़े सरकार...! क्या हुआ बड़े सरकार को—?” उसकी फटी फटी आँखें चारों ओर व्यक्ति को देख रही थी।

“बड़े सरकार को मरे पाया है।”

“क्या कहा ?”

आदमियों ने लाश को जमीन पर रख दिया और साथ ही फिन्दा चीखती हुई जा गिरी बापू पर।

“बापू !” बिलख उठी फिन्दा—! “हमें अकेला ही छोड़कर चले गये बापू ! तुम्हें कुछ भी दया न आई इस भोंपड़ी को खाली करते हुए।”

“भइया...भइया !”

गुरद्व गहरी नींद में सो रहा था।

“क्या है !”

“भइया...बापू !” फूट पड़ी वह।

“बापू—? क्या हो गया बापू को !” गुग्गू चौंक कर उठ बैठा ।

“बापू.....!” इसके आगे वह कुछ न कह पाई ।

गुग्गू समझ गया । तेजी से बाहर आया और लिपट गया बापू की लाश से ।

बापू का सिर चूर चूर हो चुका था । खोपड़ी के अन्दर का गूदा बाहर निकल आया था । हाथ और पाँव की प्रत्येक हड्डी टूट कर चूर चूर हो चुकी थी । आधी जुवान दाँतों से कट कर बाहर लटक रही थी । एक भयानक चेहरा बना हुआ था ।

दोनों भाई बहने फूट फूट कर रो रहे थे । इलाके के सैकड़ों लोग इकट्ठा हो गये थे । सभी उसकी दशा को देखते ही सिहर उठते ।

न्याय का पुजारी जा चुका था सब लोगों को छोड़कर ।

वहाँ का बच्चा बच्चा बापू को आदर की दृष्टि से देखता था । प्रत्येक व्यक्ति के दिल में उसके प्रति इज्जत का भाव था । मगर...अब...

बापू मर गया किन्तु उसका व्यक्तित्व अमर हो चुका था । उसका नाम पहाड़ी इलाके की सबसे ऊँची चोटी पर सुनहरे शब्दों में लिखा गया था ।

बापू पर सफेद कफन लपेटा गया ।

चिता बनी ।

गुग्गू ने आग लगाई

और धधक उठी चिता

धूँ...धूँ...करके ।

बल उठा इलाके का सरदार

और फूट पड़े दोनों बहन भाई ।

जितने लोग थे सबकी आँखों से टप...टप आँसू बह रहे थे ।

आग की लपटें आकाश तक को जा रही थीं। उनका प्रकाश पूरे इलाके में फैल रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे पूरा इलाका ही आग में जल रहा है।

+

+

+

बापू के मरने के बाद गुरद्व का पहला काम था घर में रखी तिजोरी को तोड़ना।

तालों के टूटने के साथ ही साथ वह ठहाका मारकर हँस रहा था। अब उसे रोकने वाला कोई न होगा। उससे पूछने वाला भी न होगा कि वह घर की दौलत को इस तरह मिट्टो में क्यों मिला रहा है—?

और उसके बाद—

धीरे धीरे घर की दौलत खत्म होने लगी। अब वह दिन रात घर में पड़ा रहता। कभी शराब के अड्डे पर जाता। दो चार बोतले ले आता। और दिन भर पीता रहता। इलाके के सभी लोग उसके इस काम से बहुत नाराज थे। लेकिन कहता कौन कि तुम यह काम न करो। अगर कोई उसके विरुद्ध आवाज उठाने की सोचता तो दूसरी ही रात उसका छुरा उसके पेट की तमाम बातों को बाहर निकाल फेंकता।

इसलिये किसी में भी साहस न था कि वह उसे इस रास्ते से हटाये।

बापू के होते हुये वह कभी भी शराब पीकर बापू के सामने नहीं आया था। क्योंकि वह जानता था कि बापू उसके इस काम को कभी नहीं सह सकता।

उसे याद था वह एकदिन जब कि वह भूले से नशे की हालतमें घर आ गया था। पानी बरस रहा था इसलिये बापू झोपड़ो ही में रह गये थे। गुरद्व की यह दशा देख बापू का खून उबल पड़ा। उन्होंने गुरद्व के बालों

को पकड़ कर इतना मारा इतना मागा कि वह बच्चों की तरह रोने लगा ।
 चीखों से परोस के व्यक्ति इकट्ठा हो गये थे । उन्होंने भी कहा कि—
 “छोड़ दीजिये सरकार । गलती मनुष्य से ही होती है ।”

लेकिन बापू ने उनकी एक भी न सुनी । और एक बार फिर बापू की
 बेंत बरस पड़ी गुरदू पर । पीठ में लाशों के दाग उभड़ आये थे...माथे
 और सिर से खून की नली बह रही थी...पूरा शरीर जल्मी हो चुका था—
 और उसकी आवाज कह रही थी—“सरदार का इन्साफ सबके लिये बराबर
 होता है । अगर मैं अपनी औलाद को बुरे रास्ते से नहीं हटा सकता तो दूसरे
 की औलाद को कैसे हटा सकता हूँ । मैं नहीं चाहता कि दुनिया मेरी ओर
 उँगली उठा कर यह कहे कि—! “देखो सरदार का ! अपने बेटे के
 गुनाह को अपने नाम के परदे में छुपा कर उस पर शाबाशी का हाथ फेरता
 है । और अगर यही काम कोई दूसरा करता तो उसे न जाने क्या से क्या
 सजा दे देता ।”

गुरदू बेहोश हो चुका था लेकिन सरदार के हाथ रुके नहीं वे वैसे ही
 बरसते रहे ।

फिन्दा एक कोने में खड़ी सिसक रही थी । उसका भाई बेटों से बेहोश
 हो चुका था लेकिन वह कुछ न कर पा रही थी ।

अन्त में उनमें से एक व्यक्ति अन्दर आया और सरदार के हाथ को
 पकड़ लिया ।

“सरदार ! अब बस करो !”

“हट जाओ, आज इसे पूरी सजा दे देने दो !”

“अगर अब एक भी बेंत मारी सरदार ! तो आपको मेरी कसम है ।
 इस इलाके के प्रत्येक व्यक्ति की कसम है । सीमा से अधिक सजा देना
 भी अन्याय होता है सरदार !”

बापू के हाथ रुक गये ।

और आज—

आज वही गुगट्ट दिन रात नशे में चूर रहता है। उसे किसी का भय नहीं, ... डर नहीं तो फिर क्यों न वह मनमानी करे। अपनी दबी हुई चंगारियों को क्यों न बाहर निकाले और क्यों न अपने कुचले हुये अरमानों को पूरा करे।

फिन्दा ने बहुत समझाया कि भइया आप इस काम को छोड़ दीजिये। बापू के बाद मेरी देख भाल करने वाले तो आप ही हैं अगर आप ही अपनी दशा को ठीक नहीं रखियेगा तो मेरी क्या हालत होगी—? घर में रह ही क्या गया है कि आप दिन रात घर में बैठे रहते हैं। इस तरह घर को चर-बाद करना तो अपने खानदान को निस्तोनाबूद करना है... अपने नाम का अन्त करना है और स्वयं अपने आप का भी खात्मा करना है। इस लिये भइया ! आप इस रास्ते को छोड़ दीजिये। अगर अपने लिये नहीं तो कम से कम अपनी बहन के लिये ही छोटी सी कुर्बानी दे दीजिये—?”

और उस समय वह हैवानियत का पुतला नशे में ठहाका मार कर हँस पड़ता ! “तुम भी कैसी बातें करती हो फिन्दा ! अब तुम्हारे सिवाय मेरा है ही कौन—? और रुपया—?..... रुपया तो हाथ की मैल है फिन्दा ! मैल। एक रात में लाखों रुपये इस भोंपड़ी में खनखना सकते हैं। अगर बापू मर गये हैं तो क्या हुआ—? मैं तो अभी जिन्दा हूँ। और जब तक मैं जिन्दा हूँ तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होने दूँगा फिन्दा।”

इसी तरह दोनों के दिन बीतने लगे। रात के बाद दिन आता और दिनके बाद रात फिन्दा सिसकियाँ भरा करती और गुरद्व मस्त हाथी की भाँति झूमता रहता।

“हेलो ! सायलस !”

“ओ हेलो—! लीला !”

“कब आये बाहर से ?”

“दो रोज हुये ।”

“कैसी कटी पहाड़ी इलाके की—?”

“अच्छी ही कट गई समझो । आने का ख्याल तो न था मगर ‘‘!’”

“मगर क्या—?”

“मगर आना ही पड़ा ।

“क्यों—? ऐसी कौन सी बात आन पड़ी कि तुम्हें इतनी जल्दी ही आना पड़ा । अभी तो कालेज की छुट्टियाँ भी आठ, दस रोज की बाकी हैं ।” लीला ड्रवन ने सुस्क्राते हुये कहा ।

“कालेज की छुट्टियों से क्या—? घर की छुट्टियाँ भी तो होनी

चाहिये ।—धर से तार गई कि छोटा भाई बिमार है । इसलिये तुरन्त ही वापस आना पड़ा ।” सायलस का चेहरा उदास था ।

“ज्यादा तबियत खराब है क्या—?”

“हाँ ! कुछ है ही । आगे जो हो—।” सायलस ने एक लम्बी साँस लेते हुये कहा ।

“आओ कोई पिक्चर ही देख आयें ।” लीला ड्रवन ने उसका हाथ पकड़ते हुये कहा ।

“नहीं लीला ! आज दिल नहीं करता कहीं जाने को और मूड भी ठीक नहीं है ।”

“तुम्हारा तो हमेशा मूड ही खराब रहता है । चलो उठो वहाँ दिल लग जायेगा ।”

लीला उसे खींचती हुई ले गई सिनेमाहाल की ओर और वह बेचस कैदी की तरह चलने लगा उसके साथ ही साथ ।

लीला सायलस के ही कालेज में पढ़ती थी । दोनों का क्लास भी एक ही होने के कारण दोनों में काफी दोस्ती थी—वह एक अमीर घरकी लड़की थी, उसके पास दौलत थी, पैसा था और थी हर वस्तु । किन्तु फिर भी उसे एक चीज की कमी थी और वह कमी वही थी जो एक युवक को होती है ।

जब उसकी पहली नजर सायलस पर पड़ी थी और दोनों की आँखें मिली थी तो उसी समय से लीला ड्रवन उस पर मोहित सी हो गई थी । दिन प्रति दिन वह उसके नजदीक होती जा रही थी । लेकिन सायलस उसकी कोई परवाह नहीं करता उसे मालूम तक न था कि युवक और युवती एक दूसरे की ओर क्यों खिंचे जाते हैं ।

लीला ड्रवन अमीर होते हुये भी रुपये की भूखी थी और यही कारण था कि उसने न जाने कितने ही युवकों को अपने चुंगुल में फाँस रखा था ।

जब उसकी दोस्ती किसी दूसरे युवक से हो जाती तो वह पहले को ठोकर मार कर आगे बढ़ जाती।—वह जानती थी कि सायलस एक धनवान का बेटा है जिसके कोटकी जेबें हमेशा नोटों से भरी होती हैं इसलिये वह दोस्ती पैदा करना चाहती थी।

लेकिन वही दोस्ती मोहब्बत में बदलती जा रही थी मगर सायलस जानता था कि इसकी मोहब्बत इन्सान से नहीं बल्कि इन्सान की दौलत से है। और इसलिये वह लीला ड्रवन की दोस्ती को केवल कालेज की चहार दीवारी तक ही सीमित रखना चाहता था।

उसे मालूम था कि उसने विमल के साथ कितनी बड़ी बेवफाई की थी। उसे कितना बड़ा धोखा दिया था और उस धोखे की ताब न लाकर वह पागल हो गया।

विमल भी सायलस के साथ ही पढ़ता था। उसकी मुलाकात भी लीला ड्रवन से हुई और दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। पहले तो यह मुलाकात आँखों ही आँखों में होती रही। फिर धीरे धीरे होंठों के द्वारा मोहब्बत की डोर मजबूत होने लगी और फिर—

और फिर दोनों कभी कलब में मिलते...कभी सिनेमा हाल और कभी रेस्टोरेंट में...

लीला ने हजारों बार कसमे खाई कि वह जीवन भर उसके साथ रहेगी। उनके प्यर को कोई नहीं तोड़ सकता...मौत के अन्तिम सांस तक वह उसी के गमकी माला फेरती रहेगी।

और दूसरी ओर.....

और दूसरी ओर उसका जाल गुप्ता पर फैला हुआ था। वह भी उसी कालेज में पढ़ता था।

यद्यपि विमल और गुप्ता में बहुत दोस्ती थी किन्तु उनमें से किसी एक को भी यह नहीं पता था कि आबारा लड़की दोनों को उल्लू बनाये

जा रही है। क्योंकि उसने एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी थी कि उनमें से कोई भी किसी को नहीं देख सकता था।

दोनों ही जवानी के नशे में अंधे थे और फलस्वरूप दोनों ही एक ऐसी धारा में बहे जा रहे थे कि उस धारा ने दोनों को लूटकर नंगा कर दिया था।

इसी बीच उसकी मुलाकात रविन्द्र प्रताप नाम के एक लड़के से होगी। और यही कारण था कि उसने गुप्ता से मिलना बन्द कर दिया। जब कभी उसकी मुलाकात गुप्ता से नो भी जाती तो वह बिना बात किये ही रविन्द्र के हाथ में हाथ डाले आगे बढ़ जाती और जवानी के नशे में अन्धा गुप्ता दाँत पीस कर रह जाता।

विमल को स्वप्न में भी यह ख्याल न था कि लीला डूबन उसको ऐसे समय में धोखा देगी जब कि वह उसकी मोहब्बत में बुरी तरह फँस जायेगा। उसे क्या मालूम था कि वह उसे ऊपर चढ़ाकर नीचे से सीढ़ी को ही खींच लेगी। वह तो कभी सोच भी नहीं सकता था कि वह उसे किनारे में पहुँचने से पहले ही उसकी पतवार की तूफान में फँक कर गायब हो जायेगी।

अब लीला उसमें भी दूर ही रहने लगी। जब कभी वह उससे मिलने उसके घर जाता तो वह घर में होते हुये भी कहलवा देती कि कद दो कि लीला घर में नहीं हैं।

यह थी उस आबारा लड़की की मोहब्बत जो मोहब्बत को रुपये से तौलती थी। वह उसीसे प्यार करती थी जिसके पास इतने रुपये थे कि वह उसके प्यार को तौल सके। वह प्यार करती नहीं थी बल्कि बेचती थी। अपनी इज्जत आबरू, जवानी सब कुछ रुपये के लिये बेचने को तैयार हो जाती थी।

और अब विमल के पास इतने रुपये नहीं रह गये थे कि वह उसको

रोज सिनेमा हाल क्लबों और होटलों में ले जा सके। उसमें इतनी शक्ति न थी कि वह उसकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरी कर सके। उसका घर पहले से ही गरीब था। और लीला की मोहब्बत में फँसकर उसने अपने घर की तमाम पूँजी को बर्बाद कर दिया था।

उसे उसकी बेवफाई कापता तो उस समय लगा जब कि एक दिन वह पिकचर देखने गया। पहले वह लीला के घर गया तो मालूम हुआ कि वह अभी अभी बाहर गई है। दिल न लगा सोचा कोई पिकचर ही देख आये।

और जब वह हाल में घुसा तो न्यूजरील शुरू हो चुकी थी। कोने में एक सीट खाली थी। जा बैठा वहीं पर। न्यूजरील समाप्त होने के बाद पिकचर शुरू हुई।

उसी समय उसकी दृष्टि अपनी अगली सीट पर बैठे एक युवक और एक युवती पर पड़ी।

युवती के बालों से उसे कुछ संदेह हुआ कि शायद लोला ड्रवन ही तो नहीं है। लेकिन फिर वह सोचने लगा—!

“ऐसा कभी नहीं हो सकता। वह उससे मोहब्बत करती है, एक सच्ची मोहब्बत...! वह किसी दूसरे के साथ कभी सिनेमा देखने नहीं आ सकती। अगर उसे आना होता तो वह उससे पहले ही कह देती।”

सोचते ही सोचते उसने देखा कि युवक का हाथ युवती के कंधों पर आ पड़ा और दूसरे ही क्षण युवती का आधा शरीर युवक की गोद में पड़ा था।

उसका दिल न लगा पिकचर में। आखिर किसी तरह इन्टर बेल हुआ।

बत्तियाँ जल उठीं

और साथही विमल चीख उठा—

“लीला—?”

लीला ने मुड़कर पीछे देखा और फिर मुँह दूसरी ओर पेर लिया।

“कौन है—?” बेदी ने विमल को घूरते हुये लीला से पूछा।

बेदी शहर के आवाग लड़कों में से एक था जो अन्य लोगों की तरह लीला ड्रवन को अपनी बाहों में रह रह कर जकड़ लेता था।

“होगा कोई दीवाना !” लीला ने नाक सिकोड़ते हुये कहा।

“दीवाना—!” विमल ने धीरे से दोहराया। और उठ कर आ गया हाल के बाहर।

उसे लग रहा था जैसे कोई जोर जोर से उसके सिर पर हथौड़े की चोट कर रहा हो और उस चोट की धक्क उसके सीने को चीरती हुई नीचे उतरती जा रही हो।

आँखों के आगे अंधेरा छा रहा था। उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि यह स्वप्न है कि हकीकत—! जिसे उसने जीवन समझा था वह मौत निकली। जिसे उसने अमृत जानकर पीया था वह पेट में जाते ही जहर बन गया। और जिसे उसने मल्लाह समझकर अपनी नौका की पतवार उसके हाथ में दी थी वही तूफान बनकर उसकी नाव को ले डूबा।

उसे अब मालूम हुआ कि वह उससे नहीं बल्कि उसके रुपये से प्रेम करती थी।

दिल पर बहुत गहरा धक्का लग

गम की विमारी से महीनों चारपाई पर पड़ा रहा।

इम्तहान में बैठ न सका

बी० ऐ० की डिग्री उससे छीन ली गई।

और अब.....?

और अब वह पागल हो गया है।

दिन रात दिन को यामें लीला की याद किया करता । दीवानों की भाँति इधर उधर घूमा करता । कभी कोई दोस्त उससे पूछता कि “विमल ! तुम्हें हो क्या गया है जो अपनी यह हालत बना रखी है ?”

तो वह खिलखिलाकर हँसते हुये कहता “तुम्हें नहीं पता मेरे दोस्त ! मैं दीवाना हूँ..... लीला ने मुझे दीवाना बनने को कहा है ।... तुम कितने भोले हो दोस्त ! कि आज तक इस पागल को न जान सके ।” और फिर वह हँसता हुआ आगे बढ़ जाता ।

यह था लीला ड्रवन के मोहब्बत का जाल जो अब सायलस पर फँका जा रहा था और सायलस उससे दूर भागता जा रहा था ।

पिक्चर देखने के बाद लीला सायलस को ले गई सेंट्रल होटल में ।

बैग आ खड़ा हुआ सामने ।

“क्या खाइयेगा—?” लीला ड्रवन ने सायलस के हाथ पर हाथ रखते हुये कहा ।

“मुझे तो भुख नहीं, आप को जा खाना हो मँगवा लीजिये ।”

“यह कैसे हो सकता है—? कि मैं ख.ऊँ और आ.ग.!”

“तो इसमें हर्ज ही क्या है ।”

उसने बैग को अर्डर देते हुये कहा—

“दो प्लेट आमलेट और दो कप चाय !”

थोड़ी देर के बाद प्लेटें सज गई मेज पर ।

लीला ने काँटे से आमलेट के टुकड़े को फँसाते हुये कहा—!

“सायलस ! मनुष्य दुनियाँ में आता है तो कम से कम उसे दुनिया का लुत्फ भी उठाना चाहिये ।”

“.....!”

सायलस चुपचाप देख रहा था काँटे में फँसे आमलेट के टुकड़े को । उसे लगा जैसे वह भी लीला के काँटे में ठीक उसी टुकड़े की तरह फँसा हुआ है और अब वह उसी की तरह बेबस खामोश है ।

“क्या सोच रहे हैं ?” उसने सायलस के विचारों को तोड़ते हुये कहा ।

“यही कि मनुष्य को दुनिया का नाजायज लुप्त नहीं उठाना चाहिये ।”

“क्या मतलब—?”

“समझदार के लिये इशारा काफी है ।”

“और नासमझदार के लिये—?” उसने फिर होठों से बिजली गिराते हुये पूछा ।

“कुछ नहीं ।” एक छोटा सा उत्तर दिया और फिर डूब गया चाय से उठने हुये घूमे में ।

“सायलस बाबू !” उसने फिर सायलस को भावनाओं की धारा से खींचते हुये कहा ! “आप मुझसे इतना दूर क्यों रहते हैं—? क्या मेरे लिये आप के दिल में कोई जगह नहीं—?”

“यह बात नहीं लीला ! तुम्हारे लिये मेरे दिल में जो जगह है वह स्वयं मैं ही जानता हूँ या मेरा दिल । तुम नहीं जान सकती लीला ! कि मैंने बाहर कितनी मुशकिल से दिन बिताये !” सायलस ने फीकी हंसी हँसते हुये कहा ।

और उसी हँसी से लीला डूबन फूल कर दुगनी हो गई ।

“एक बात कहूँ सायलस !”

“कहो ।”

“मैं चाहती हूँ कि...अब मोहव्यत के दूसरे पन्ने को उलट कर जिन्दगी का दूसरा रास्ता बनाया जाये.....एक नई दुनिया बसाई जाये.....जिसमें आप रहे, मैं रहूँ और...!” कहते कहते लीला डूबन शर्मा गई ।

लेकिन वह शर्म भी बनावटी थी । बिलकुल भूठी शर्म थी जिसमें कोई भी लाल डोरे नहीं थे । उस शर्मने में उसके गाल लाल न

हो पाये थे । उसकी आँखों में नशे के डोरे न नाचने लगे थे । बल्कि वे सफेद थे... बिलकुल सफेद जैसे सफेद भूठ... !

वह समझ गया था कि लीला डूबन उस के सामने शादी का प्रस्ताव रख रहा है । और वह उस प्रस्ताव को चाय के साथ पीता जा रहा था ।

“चाहता तो मैं भी यही हूँ लेकिन काश ऐसा हो पाता कि हम दोनों की एक नई दुनिया बस जाती ।”

“सायलस बाबू !” उसने सायलस का हाथ अपने सीने की ओर खींच लिया । और साथ ही सिहर उठा सायलस ।

“चलो लीला ! काफी रात हो गई है ।”

“आज आप हमारे यहाँ चलिये ।”

“नहीं लीला ! तुम जानती ही हो कि भाई की तबियत खराब है । कैसे जा सकता हूँ उसे छोड़ कर ।”

“मेरे लिये एक रात भी घर से बाहर नहीं रह सकते—?”

“फिर कभी सही ।”

लीला डूबन कुछ न बोली ।

दोनों चुपचाप चले जा रहे थे ।

एक चौराहे पर पहुँच कर सायलस ने कहा—! अच्छा लीला अब तो चला मैं ।”

“फिर कब मिलियेगा—?”

“जब कहो—।”

“कल ।”

“बहुत अच्छा”

“गुड नाइट !”

“गुड नाइट !”

दोनों दो दिशाओं की ओर चल दिये ।

सड़कों के खन्ने टिमटिमा रहे थे । शहर सुनसान सो रहा था । और सायलस तेजी से चला जा रहा था घर की ओर ।

÷

÷

÷

दूसरे दिन लीला ड्रवन सायलस से फिर मिली ।

आज वह रोज से ज्यादा खूबसूरत लग रही थी । कटे हुये बाल रूई की भाँति हवा में लहरा रहे थे । इङ्गलिश टाइप का, लम्बा ब्लाउज नीचे जुराब और सैंडल बस— । और कुछ न था उसके शरीर पर ।

“आओ चलें—!”

“कहाँ—?”

“बस वहीं पुराने अड्डे पर !” लीला ने मुस्कुराते हुये कहा । उसके होठों की लाली ऐसी जान पड़ती थी जैसे वे लिपिस्टिक से नहीं बल्कि किसी के रक्त से रंगे गये हैं । लाल रक्त जो किसी के शरीर से न जाने कितनी बेरहमी के साथ निकाला गया होगा ।

दोनों जा पहुँचे सैंट्रल होटल ।

फिर वही बैरा आया

आर्डर दिया गया

प्लेटे प्यालियाँ सज गईं

और दूसरे ही क्षण चम्मच और काँटों की भनभनाहटें गूँज उठी उस होटल के छोटे से “फैमली रूम” में ।

रात के ग्यारह बज चुके थे । किन्तु अभी तक उनकी बातें ही समाप्त न हो पाई थीं । लीला हर पहलू से उसे फँसाने की चेष्टा कर रही थी और वह था कि हर गाँठ को पड़ने से पहले ही उसे गोड़ देता था ।

ग्याह बजे वे दोनों होटल की सीढ़ियों से उतरने लगे ।

अभी वे सड़क पर चार ही कदम गये थे कि किसी ने पीछे से पुकारा—!

“सायलस !”

दोनों रुक गये ।

पुकारने वाला पास आ गया और साथ ही सायलस के मुँह से निकल पड़ा

“विमल—!”

वह पुकारने वाला पगला विमल ही था ।

“हाँ—!”

“तुम इस समय यहाँ—?”

“पागलों का और ठिकाना ही कहाँ होता है? ”

“तुमने अपनी हालत क्या बन रखी है विमल ?”

“इसीलिये तो मैं तुमसे कह रहा हूँ मेरे दोस्त ! कि कहीं तुम भी मेरी तरह पागल न हो जाओ । भगवान के लिये इस नागिन को छोड़ दो मेरे सायलस ! वरन् तुम भी मेरी तरह दर दर की ठोकरें खाओगे यह घर को जलाना जानती है, जले हुये घर को बुझाना नहीं...जिसे आज तुम दूध पिला रहे हो वह धीरे धीरे जहर बनता जा रहा है...और एक दिन उसी जहर का डंक तुम्हारे दिल में घुस जायेगा और फिर...! और फिर तुम छुटपटाओगे...तड़पोगे...चीखो और चिल्लाओगे...लेकिन वह चुभा हुआ डंक निकलेगा नहीं ..वह कभी निकल नहीं सकता मेरे दोस्त... जलने के बाद कोयला राख ही होकर रहता है ।”

विमल कहे जा रहा था लीला डूबन मुनती जा रही थी । रह रह कर उसका चेहरा क्रोध से लाल हो उठता किन्तु फिर भी गुस्से को दबाये खड़ी थी । उसका जी चाहता कि वह विमल के मुँह पर इतनी जोर का तमाचा

मारे कि वह हमेशा के लिये यहाँ से चला जाये। लेकिन सायलस जो खड़ा था सामने ही।

“लोग मुझे पागल कहते हैं सायलस ! दुनिया मुझे दीवाना कहती है...और मेरे ऊपर थूकती है...मैं रोता हूँ तो दुनिया मेरा मजाक उड़ाती है...मैं भूखे पेट के लिये रोटी माँगता हूँ तो लोग मुझे ठोकर मारते हैं—जानते हो यह सब मेरे साथ क्यों हो रहा है—? शायद तुम नहीं जानते सायलस ? कि इन सब की ज़ुम्मेदार यह नागिन है। हाँ हाँ, मैं सच कह रहा हूँ मेरे दोस्त ! इस डायन ने ही मुझे बरबाद कर दिया...मुझे भूखी मोहब्बत का सहारा देकर मेरी तमाम दौलत को लूट लिया और...और उसकी बात पूरी होने से पहले ही लीला डूबन का सरसराता थप्पड़ जा पड़ा विमल की गालों पर

“ताड़—!”

“बदमाश कहीं के भूठ बोलते तुम्हें शर्म नहीं आती—?”

“देखा दोस्त !” विमल ने फीकी हँसी हँसते हुये कहा—! “यह है मोहब्बत का अंजाम आँख खोल कर देख लो सायलस ! फिर न कहना कि पागल विमल ने मुझे कुछ न बताया...छोड़ दो इसका दामन नहीं तो यह तुम्हारे घर को भी जला कर राख कर देगी और फिर तुम्हारे साथ भी वही कुछ होगा जो आज मेरे साथ हो रहा है।...यह डायन है...पापिन है...नागिन है और...

और तभी लीला का दूसरा सरसराता थप्पड़ भी हवा में लहरा उठा

लेकिन...

इससे पहले कि उसका थप्पड़ विमलकी गालों पर पड़ता—सायलस का तमाचा जा पड़ा लीला के गालों पर

“ताड़—”

और ठहाका मार कर हँस पड़ा विमल

“हा हा हा...हा हा...हा...हा...हा...”

तिलमिला उठी लीला ड्रवन

“आज तुमने मेरी जलती हुई आग को टंडा किया है दोस्त ! इसको इससे भी बड़ी सजा दो—। हा हा हा...हा हा...”

विमल खिलखिलाता हुआ एक ओर को दौड़ पड़ा

लीला तिलमिला रही थी ।

और सामने सायलस खड़ा दाँत पीस रहा था ।

“आप...!” लीला की आवाज भर आई ।

“हाँ ! मैंने मारा है । ताकि तुम्हें मालूम हो जाये कि दूसरों को किस तरह चोट लगती है...तुम्हें शर्म न आई उस व्यक्ति पर हाथ उठाते हुये जिसकी तमाम पूँजो को तू ने मिट्टी में मिला दिया ।”

“सायलस !”

“हट जा मेरे सामने से बेहया ! तुम्हारे जैसी आवारा लड़कियो से मैं बात करना भी गुनाह समझता हूँ...तुमने किसको नहीं लूटा ? कौन है जो तुम्हारी भूठी मोहब्बत में फँसकर तबाह न हुआ हो ?—एक दिन तुम्हीं थी न जो इस विमल के गले में बाँहें डाले होटलो और सिनेमा हालों में घूमा करती थी । और आज तुम्हीं उसके मुँह पर थप्पड़ मार रही हो ? क्योंकि उस समय उसके पास दौलत थी...रुपया था और अब वह पागल है...मिखारी है...दर दर ठोकरें खाने वाला गरीब इन्सान है ।—उसे तुमने पागल बनाया...गुप्ता को तुम्हीं ने स्कूल छोड़ने पर मजबूर किया...रवीन्द्र को तुम्हीं ने एक एक पैसे का मोहताज कर दिया...और अब अपना जाल मुझ पर फैलाना चाहती हो—?”

“सायलस—!”

लेकिन सायलस दूसरी ओर चल दिया ।

वह जा लिपटी सायलस से लेकिन उसने एक ही झटका दिया और वह जा गिरी सड़क पर—माथे से खून निकलने लगा ।

सायलस तेजी से चला जा रहा था और लीला डूबन मिट्टी में लथ-पथ पड़ी दाँत पीस रही थी ।



सायलस जब घर पहुँचा तो रात के बारह बज चुके थे ।

पूर्ण दुनिया शान्त मुद्रा में पड़ी सो रही थी ।

तेजी से सीढ़ियों को लाँघता हुआ अपने कमरे में गया । देखा पिता जी अभी तक जाग रहे हैं । और ऐल्फी चारपाई पर निढाल पड़ा है ।

“कहाँ चले गये थे सायलस—?” सायलस के आते ही उसके पिता ने पूछा ।

“जी...! जी पिता जी ! एक जरूरी काम से गया था ।

“कुछ घर का भी ध्यान रखा करो सायलस ! अब तुम ही इस घर में बड़े हो । अगर तुम ही इस घर का खयाल न रखोगे तो कौन रखेगा—? देखो ऐल्फी की हालत कितनी खराब होती जा रही है ।”

“.....!”

“जाओ खाना खा लो । पड़ा-पड़ा ठंडा हो गया है ;”

“मुझे भूख नहीं है पिता जी ।”

“आजकल तुम्हें हो क्या गया है—? एक तो इतनी रात गये घर आते हो और फिर कहते हो भूख नहीं है। बाजार से खाकर आते हो क्या ?”

“जी... नहीं... यूँही कुछ तनियत ठीक नहीं है।”

“कल से इतनी देर बाहर न रहा करना।”

“कल से मैं कहीं नहीं जाऊँगा पिता...” —जाइये आप सो जाइये मैं ऐलफी को देखता रहूँगा।”

उसके पिता जी उठ कर चले गये।

कमरे में उजाला होते हुये भी अंधकार से अधिक भयानकता थी। मानो मौत ने अपने अड्डे जमा रखे हों।

ऐलफी सो रहा था।

बिजली का बल्ब जल रहा था और सायलस बैठा सोच रहा था—

“लीला ! बदतमीज ! अपने आपको प्रेम की पुजारिन बनती है— मोहब्बत की दासी बनती है। बेहया ! वेशर्म !—जाने समाज ऐसी आचारा लड़कियों को क्यों अपने साथ रखता है ? क्योंकि वे दौलतमन्द हैं—उनके पास रुपये हैं और क्योंकि वे समाज के नेता और रहनुमा हैं। यह हैं समाज के ठेकेदारों की संतानों की करतूतें जो एक वेश्या से भी बढ़कर हैं।

लोग वेश्या से नफरत करते हैं उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते ! समाज के नेता उन्हें समाज का कलंक कहते हैं...लेकिन वे अपने आपको नहीं देखते कि जो समाज की आड़ में उस कलंक के दाग का बेड़ा लिये जा रहे हैं।

वेश्या किसी को धोखा तो नहीं देती किसी की आँख में धूल फेंक कर तो प्यार और मोहब्बत का रंग नहीं खेलती वे किसी की आड़ तो नहीं लेती और ये...? यह समाज की आड़ में ऐसे-ऐसे काम करती हैं जो

कि वेश्या भी नहीं कर सकती । एक साथ कई युवकों पर जाल फैलाकर सबसे रुपया लूटती हैं और उन रुपयों के बदले उन्हें अपनी इज्जत, अपनी आबरू, अपनी जवानी और यहाँ तक कि अपना सब कुछ लुप्ताना पड़ता है ।

इतना होने के बाद भी वे अपने आपको पाक और शुद्ध समझती हैं.....चाँदनी की भान्ति निर्मल और गंगा की भान्ति पवित्र समझती हैं । दुनिया उनकी ओर आँख तक नहीं उठाती । लेकिन दुनियावालों को यह नहीं मालूम कि उस पवित्रता के पीछे कितनी बड़ी अपवित्रता भरी हुई है ।—जाने कितनी बार उन्होंने भगवान की ओलाद को जन्म लेने से पहले ही मार डाला होगा.....जाने कितने ही शिशुओं की हत्याएँ की होगी । कितना पाप क्या होगा.....और फिर भी अपने आपको निर्दोष और पवित्र समझती है । और.....

और जाने क्या-क्या वह सोचता रहता अगर उसी समय एलफी ने पानी न माँगा होता—

सायलस ने उठ कर शीशे के गिलास में पानी दिया ।

“लो एलफी—?”

उसने उठने की कोशिश की किन्तु उठ न सका । उसमें इतनी शक्ति भी न रह गई थी कि वह अपने भार को संभाल सके ।

और साथ ही सायलस की आँखों से दो बूँद आँसू गिर पड़े एलफी की यह दशा देखकर ।

“भइया ।”

“एलफी !”

उसने एलफी को उठाकर बैठाया । उसको पानी पिलाया और फिर उसे लेटाते हुये उसका ध्यान फिर लीला डूवनकी ओर दौड़ पड़ा ।

सायलस को अब दुख हो रहा था कि उसने लीला जैसी एक खानगिन लड़की के साथ रहकर अपना कितना बड़ा नुकसान किया ।—बिमार भाई

को छोड़कर वह बारह बजे रात तक उसके साथ होटलों और क्लबों की सैर करता रहा। उसका दिल चाहता कि वह उसे जिन्दा ही जमीन में दफना दे मगर.....!"

"भइया !" तभी ऐलफी ने पुकारा ।

"क्या है ऐलफी —?"

"मुझे हो क्या गया है भइया—?"

"कुछ नहीं ऐलफी ! तुम्हें कुछ नहीं हुआ ।

"फिर मुझसे उठा क्यों नहीं जाता । मालूम पड़ता है कि.....!"

"ऐलफी !" सायलस ने उसके सूखे मुँह को चूम लिया, कैसे कहता कि तुम्हें वही विमारी ने आन पकड़ा है जिसने माँ को पकड़ा था ।

और दूसरे ही क्षण वह सिहर उठा माँ को याद कर के— ! माँ को तो टी० बी० हो गई थी.....उनके फेफड़ों को तो कीड़ों ने दीमक की तरह चाट लिया था तो क्या.....क्या इसके फेफड़ों में भी टी० बी० के कीड़े लग गये हैं—? क्या यह भी माँ की ही तरह सब को रोता छोड़ जायेगा ?.....नहीं.....नहीं यह कभी नहीं हो सकता....!" चीख उठा सायलस । "ऐलफी !...मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगा ऐलफी !" वह पागलों की तरह ऐलफी से लिपट गया ।

"क्या कह रहे हो भइया —?"

"ऐलफी !" उसने ऐलफी की आँखों में, आँखें डालते हुये कहा—
"ऐलफी ! तुम्हारे फेफड़ों में टी० बी० के कीड़े लग गये हैं.....जो तुम्हें दीमक की तरह अन्दर ही अन्दर खोखला करते जा रहे हैं.....तुम्हारे इतने मुलायम फेफड़े किस तरह उनकी चोटों को सह सकेंगे.....लेकिन चाहे जो हो ऐलफी ! मैं उन कीड़ों को उभड़ने से पहले ही जलाकर राख कर दूँगा .तुम्हें मुझसे कोई नहीं छीन सकता मेरे भाई !" सायलस की आँखों से टप...टप आँसू गिर रहे थे ।

“आप रो क्यों रहे हैं भइया, ?”

“मैं इन्सान को पैदा करने वाले के नाम पर रो रहा हूँ...मैं उसके लिये रो रहा हूँ ऐलफी ! जिसने इस दुनिया को बनाया है...जिसने इस दुनिया में जिन्दगी और मौत को पैदा कर के इन्सान, और उसके अरमानों के बीच एक भयानक दीवार खड़ी कर दी है । इतनी भयानक दीवार जिसको तोड़ने के लिये मनुष्य जीवन भर उससे संघर्ष करता रहता लेकिन फिर भी सफल नहीं हो पाता यहाँ तक कि मनुष्य की आन्तिम साँस भी टूट जाती है लेकिन वह दीवार नहीं टूट पाती ।”

“उसे बनने ही क्यों देते हैं भइया !”

“तुम नहीं समझ सकते ऐलफी ! कि वह दीवार बनाई नहीं जाती बल्कि खुद ही बन जाती है । काश यह जिन्दगी और मौत का सवाल न होता तो...!” कहते कहते चुप हो गया सायलस ।

“चुप क्यों हो गये भइया ।”

“तुम सो जाओ ऐलफी ! नहीं तो तुम्हारी तबियत और भी खराब हो जायेगी ।”

ऐलफी लेट गया मगर सो न सका ।

सायलस रात भर जागता रहा । सुबह हो गई मगर वह अपनी जगह से न हिला । इसने ऐलफी की ओर देखा जो गहरी नींद में सो रहा था ।

×

×

×

आज चार रोज हो गये थे सायलस को जागते हुये ।

आँखें सूज चुकी थी आँसू बहाते बहाते । आँख की सफेदी लाली में बदल चुकी थी जैसे सीने का खून पिघल कर आँखों में ही आकर जम

गया हो चेहरा पीला पड़ा हुआ था ऐसा मालूम होता था जैसे कई महीने की बिमारी से उठा हो ।

बिमार उसका भाई था लेकिन बिमारी का असर सायलस पर आ रहा था ।

ऐलफी की हालत बहुत खतरनाक हो गई थी । साँस रुकने लगी थी ।

सब डाक्टर जवाब दे चुके थे ।

लेकिन फिर भी सायलस कहे जा रहा था

“उसके ऐलफी को कोई नहीं छीन सकता ! वह अच्छा हो जायेगा । उसे मौत भी नहीं ले जा सकती ।”

लेकिन उस नादान इन्सान को यह नहीं पता था कि मौत आती है और चली जाती है किन्तु किसी को पता तक नहीं लगता ।—वह चुपचाप आती है और जीवन का गला घोट कर चली जाती है । दुनिया को मालूम तो उस समय होता है जब उसका खून पानी के रूप में बदल जाता है । जब उसका शरीर लकड़ी की भाँति सख्त हो जाता है । और उस समय मनुष्य रोता है । मौत को गाली देने वाला अपने आप को गाली निकालने लगता है मौत का सामना करने वाला हाथ मलता ही रह जाता है ।

आज चार दिनों से सायलस भूखा और प्यासा था उसका खून जल-चुका था किन्तु फिर भी वह अपने भाई के पास ही बैठा रहा ।

डाक्टर पर डाक्टर आते ।

फीस लेते

और दवाखाने का रास्ता पकड़ते ।

लेकिन किसी ने उस आने वाली मौत के रास्ते में बाँध न लगाया ताकि वह जिन्दगी का दुश्मन उस बाँध को तोड़ कर मनुष्य को बहा न ले जाये ।

बनारस के प्रसिद्ध डाक्टर सेठ कुर्मी पर बैठे सोच रहे थे कि कौनसी दवाई दे ताकि मरीज बच जाये ।

“डाक्टर साहब ! आपका क्या ख्याल है—?” सायलस ने सूखी आँखों से देखते हुये पूछा ।

“बिमारी सीमा को पार कर चुकी है !”

“तो सीमा बढ़ाई नहीं जा सकती ?”

“यह कैसे हो सकता—?”

“डाक्टर साहब ! जब मौत जिन्दगी का इन्तजार नहीं करती... उसकी लाचारी और बेवसी को नहीं देखती—जब मौत जिन्दगी को कुछ नहीं दे सकती तो फिर जिन्दगी मौत को क्यों अपना सब कुछ दे देती है ? क्यों नहीं वह भी अपनी मरजी से चलती—?”

“.....?”

“बोलिये ! डाक्टर साहब ! क्या आपके पास इसका कोई जवाब नहीं है ?”

“मेरो कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करू—?”

सायलस गीली आँखों से ऐलफी की ओर देख रहा था । जो अब जीवन के दूसरे किनारे पर जा चुका था । जिसका पार्ट इस दुनिया के स्टेज पर समाप्त हो चुका था । साँसके साथ बलगम की आवाज भी आ रही थी । जैसे वह भी मौत के डर से तड़प रही हो ।

वह मासूम कली खिलने से पहले ही मौत के हाथों तोड़ी जा रही थी और उसका माली देख रहा था । वह चीख रही थी—वह सुन रहा था—वह तड़प रही थी—वह आँसू बहा रहा था—दोनों बेवस थे...लाचार थे...मजबूर थे और थे नाशाद—!

सायलस ने धीरे से पुकारा—!

“ऐलफी—!”

उसने बड़ी मुश्किल से आँखें खोली ।

जुवान हिली

और एक काँपती आवाज कमरे में बिखड़ गई ।

“भ...इ...या—!”

आँखें फिर बन्द कर लीं !

“आँखें खोलो ऐलफी ! देखो डाक्टर साहब तुम्हारे लिये दवाई लाये हैं.....तुम अच्छे हो जाओगे मेरे भाई ! तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगे ।”

लेकिन आँखें न खुली ।

साँस टूट रहा था

और उन टूटी साँसों में से एक टूटी हुई हलकी आवाज आ रही थी ।

“भ...इ...य!...! मैं...डा...क...ट.....”

हिचकी आई

और.....!

“डाक्टर साहब !”

एक भयानक चीख निकली सायलस के मुँह से ।

डाक्टर जल्दी से उठा ।

उसकी नब्ज देखी ।

आँखें देखी.....

पेट की धड़कन देखी ।

मगर.....

सब शून्य.....शान्त.....

डाक्टर का सिर झुक गया ।

आँखें गीली हो उठी ।

दिल रो पड़ा ।

और दो बूँद गिर पड़े जमीन पर ।

“डाक्टर !” पागलो की तरह चीख उठा सायलस ।

डाक्टर कमरे के बाहर चल दिया ।

“डाक्टर साहब !” वह दौड़ कर उसके सामने खड़ा हो गया—!
“डाक्टर साहब ! आप एक बार फिर देखिये ऐलफी जिन्दा है डाक्टर साहब ! मेरे भाई को मुझमें कोई नहीं छीन सकता । मौत उसे कभी नहीं ले जा सकती डाक्टर ! आपको धोखा हुआ है.....!”

“.....!”

डाक्टर गीली आँखों से देख रहा था ।

“आप झूठ बोल रहे हैं डाक्टर साहब ! आप झूठ बोल रहे हैं । तभी तो चले आये बाहर ! दीजिए मैं देखता हूँ ।

और सायलस ने डाक्टर का आला छीन लिया ।

दौड़कर ऐलफी के पास गया !

पागलों की तरह इधर-उधर लगाने लगा । लेकिन कहीं से कोई धड़कत न सुनाई दी । वह फिर पागलों की तरह डाक्टर के पास आया—!

“डाक्टर साहब ! ऐलफी जिन्दा है.....क्या वह अब जिन्दा नहीं हो सकता ?—कह दीजिये डाक्टर साहब ! कि ऐलफी जिन्दा है । धोखा ही सही—दे दीजिये इस पागल को धोखा—वरन् मैं पागल हो जाऊँगा डाक्टर ! मैं पागल हो जाऊँगा । अगर आप मौत को रोक नहीं सकते तो फेंक दीजिये इस डाकटरी आले को...जला डालिये अपने इस लिबास को...जिससे जिन्दगी की जगह मौत ही आती है ।”

सायलस की आँखों से टप...टप आँसू बह रही थे । एक बार उसने ऐलफी की ओर देखा और फिर जा लिपटा उसकी लाश से ।

“ऐलफी ! आँखें खोलो ऐलफी ! तुम तो डाक्टर बनोगे न—? उठो मैं तुम्हें डाक्टर बनाऊँगा ताकि तुम मौत की मौत कर दो...उठो मेरे भाई...! केवल एक बार उठकर कह दो—! भइया ! मैं डाक्टर ही बनूँगा—!” सायलस बिलख बिलख कर उससे लिपटा रो रहा था—।

“इतना नहीं सोया करते भइया ! अगर सोते रह जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ ही सो जाऊँगा ।—देखो कितनी घूप निकल आई है ••केवल एक बार अपने लिये नहीं तो अपने पागल भाई के लिये ही आँख खोल दो—क्या भूल गये ऐलफी ! अपनी उन बातों को जब कि तभी ने कहा था कि अब मुझे छोड़कर न जाना भइया ! और आज तुम ही छोड़ कर जा रहे हो—? याद करो ••ऐलफी !”

सायलस उसको छाती से लगाये बुरी तरह तड़प रहा था ।

लेकिन उसने आँखें न खोलीं ।

वह तो इस दुनिया को हमेशा हमेशा के लिये छोड़ चुका था ।

डाक्टर बनने वाला मरीज बन कर भी न रह सका ।

नाव को खेने वाचा मुसाफिर भी न रह सका और नाव को किनारे तक लाने का स्वप्न देखता ही रहा ।

आज सायलस की सबसे प्यारी चीज उससे जुदा हो गई थी । वह खो गई थी और सायलस उसे अंधों की तरह खोज रहा था । तलाश कर रहा था किन्तु हाथ से निकला पंछी फिर कभी हाथ नहीं आता ।

ऐलफी जा चुका था !

उसकी केवल मिट्टी इस समाज में रह गई थी । किन्तु फिर भी सायलस को विश्वास न आता था कि वह स्वप्न देख रहा है अथवा इकीकत उसके सामने बहुरूपिये की भांति नाच रही हैं ।

वह अब भी ऐलफी से लिपटा बिलख रहा था ।—

सूरज वैसे ही चमक रहा था !

और समाज वैसे ही अपने काम पर लगा हुआ था !



“भइया !”

“.....!”

“होश में आओ भइया !”

“.....!”

“भइया !” वह चीख उठी ।

गुरट्ट लाल लाल आँखें निकाले इसकी ओर बढ़ रहा था ।

रात के करीब बारह बजे होंगे कि भोपड़ी का किसी ने दरवाजा खटखटाया—!

“खट · खट—!”

“कौन है—?” एक अलसाई आवाज आई ।

“मैं हूँ !”

“भइया—?”

“हाँ !”

फिन्दा ने उठ कर दरवाजा खोला ।

गुरट्ट लड़खड़ाते कदमों से अन्दर आ गया । उसकी आँखों से आंगारे निकल रहे थे । कमीज पसीने से भीग चुकी थी ।

दरवाजा बन्द करने के बाद फिन्दा ज्योंही घूमी देखा उसके सामने गुरट्ट खड़ा था । उसकी भयानक आँखों से वही वासना की ज्वाला टपक रही थी ।

उसने बाँहें फैला कर फिन्दा को पकड़ना चाहा मगर वह पीछे हट गई। आज भी गुरद्व दानवता पर उतारू हो गया था। मानवता का नंगा नाच करवाना चाहता था। उससे पाँव फिन्दा की ओर बढ़ रहे थे। और वह भय से पीछे हटती जा रही थी।

“भइया—!”

“.....!”

“होश में आओ भइया।”

“.....!”

“भइया!” चीख उठी वह।

मगर वह बढ़ता ही गया।

“मुझे बिल्कुल हांश है! शायद तुम सोचती होगी कि आज भी मैं नशे में हूँ। लेकिन आज मैंने जान बूझ कर शराब नहीं पी। क्योंकि आज मैं अपने दिल की दबी हुई चिनगारी को चमकाना चाहता था... अपने टफनाये हुये अरमानों को पूरा करना चाहता था—शायद तुम सोचो कि मैं गुरद्व नहीं कोई दूसरा हूँ। तो यह भी तुम्हारी भूल है। मैं वही गुरद्व हूँ जो तुम्हारा भाई है। लेकिन उस भाई के नाम के पीछे तुम्हारा दुश्मन है।”

“भइया!”

“बहुत दिनों के बाद आज वह दिन आया है जब कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा हूँ। आज मैं तुम्हें अपनी बाँहों में जकड़ कर अपने दिल की सुलगती हुई आग को बुझाऊँगा... तुम्हारे इन होठों का रस चूम कर अपनी प्यास बुझाऊँगा... तुम्हारी इज्जत को लूट कर अपने इलाके का बदला लूँगा और तुम्हारी ज़वानी को मसल कर आपने वा...!”

“भइया! यह तुम क्या कह रहे हो भइया!”

“मैं तुम्हारा भाई नहीं हूँ... बल्कि बन गया हूँ...”

वह बढ़ता जा रहा था। और वह पीछे हटती जा रही थी।

उसका डुपट्टा उतर चुका था । पूरी जवानी सामने घबड़ा रही थी और उस जवानी का मालिक शर्म से तड़प रहा था ।

“तुम भाई नहीं हो—?” उसकी आँखें खुली रह गई ।

“हाँ ! मैं ठीक कह रहा हूँ फिन्दा ! मैं तुम्हारा भाई नहीं दुश्मन हूँ दुश्मन ! जिसने अपने बाप का बदला लेने के लिये अपनी जान को हथेली पर रखा हुआ था !

आज से बीस वर्ष पहले—!

तुम्हारे बापू ने मेरे बाप को मारा था । वे भेड़ीखाल के सरदार थे । जिस प्रकार तुम्हारे बापू इस इलाके के सरदार और सरपंच माने जाते थे उसी तरह मेरे बाप भी उस इलाके के सरदार और सरपंच माने जाते थे ।

वहाँ का एक एक बच्चा उनको अपनी जान से भी अधिक मानता था । दोनों सरदारों में बहुत पहले से दुश्मनी चली आ रही थी । इस दुश्मनी के बीज पड़ने से आज तक न जाने कितनी ही बार दोनों इलाकों के सरदारों में संघर्ष हुआ न जाने कितनी ही स्त्रियों का सुहाग उजड़ा—

मगर उनकी दुश्मनी कम न हुई । वह बढ़ती ही गई ।

और एक दिन ऐसा आया—जब कि दोनों सरदारों में पुनः लड़ाई हुई । लड़ाई एक छोटी सी बात पर ही हुई थी किन्तु चिनगारी ही सुलगते सुलगते आग बन जाती है और फिर आग के बाद उसे राख खाक भी होना पड़ता है ।

वहाँ की जनता गरीब थी । पैसे पैसे के लिये मोहताज थी—उनके नन्हें नन्हें बच्चे भूख से बिलख बिलख कर रोते थे लेकिन उनकी आवाजों को कोई सुनने वाला न था । उनके आँसूओं की धारा बनकर बहती थी किन्तु उन्हें रोकने वाला कोई न था ।

यहाँ के सरदार ने उस कमजोरी से नाजायज फायदा उठाया । उनके आँसूओं को मोती बनाकर बेचा और उन्हें रुपये दिये पैसे दिये ।

वहाँ के सरदार के साथियों को इतनी दौलत दी कि वे अपने सरदार के निमक को थूक दिया। पैसे की वेदी पर अपने इलाके को बलिदान कर दिया। ‘‘अपने जन्मस्थान की इज्जत को लुटा दिया’’ उसकी आबरू को बेच दिया—केवल चमकते सिक्कों की बदौलत बापू ने मेरे पिता की जान ली। उनके साथियों ने उनका साथ छोड़ दिया और यहाँ के सरदार के आदमी अपने काम में सफल हुये।

वहाँ का सरदार मारा गया लेकिन मरने के बाद वहाँ की जनता को मालूम हुआ कि उन्होंने लालच में आकर एक ऐसा काम कर दिया है जिसका दाग उनके माथे से तब तक नहीं उतर सकता जब तक इसका बदला न ले लिया जाये।

उस समय यहाँ के सरदार का एक लड़का था जिसकी उमर केवल पाँच वर्ष की थी। भेड़ीखाल के लोगों ने उस लड़के को अगवा कर दिया और उसे न जाने कहाँ दफना दिया।

और फिर—

अठारह वर्ष बाद जब मैं जवान हुआ तो मुझसे कहा गया कि अगर इसका बदला न लिया जायेगा तो यह लगा हुआ दाग कभी नहीं मिट सकता।

मेरे दिलमें बदले की भावना बढ़ती रही और बढ़ते बढ़ते यहाँ तक रूप धारण कर लिया कि मैंने इस इलाके को आग की भेंट करना चाहा। मगर...! इन्सान सोचता कुछ है और होता कुछ है। मेरे पास इतनी शक्ति न थी कि मैं इसको आग की लपटों में सुला सकता। लेकिन बदले की भावना को भी न दबा सका। अन्त में लोगों ने यह राय दी कि मैं उसका लड़का बनकर जाऊँ। ताकि वह समझे कि उसका ही लड़का जिसे तेरह वर्ष पहले गायब किया गया था अब अठारह वर्ष की जवानी को लेकर वापस आया है। वहाँ का सरदार बहुत खुश होगा और अपने खून को अपना घेरा कहने से कभी इन्कार नहीं करेगा।

मैंने भी सोच लिया था कि जिस तरह उसने मेरे बाप की जान ली है उसी तरह मैं भी उसकी जान लूँगा। और जिस प्रकार उसने हमारे इलाके की इज्जत को लूट कर उसके अरमानों का खून किया है मैं भी उसी प्रकार उसकी लड़की की इज्जत लूट कर उसका खून करूँगा.....

मैं यहाँ आया और अपनी चाल में सफल हो गया। तुम्हारे बापू ने मुझे ही अपना असली लड़का समझा और अपने दिलका एक टुकड़ा मान कर रक्खा मगर मेरे अन्तर में लगी आग बुझ न सकी। वह बराबर बढ़ती ही गई और एक दिन.....!

मैंने अपने बाप का बदला ले ही लिया। तुम्हारे बापू को पहाड़ी से नीचे ढकेल दिया और उसकी एक एक हड्डी चीख उठी।...!”

क्षण भर के लिये गुरट्ट चुप हो गया।

उसके कदम फिर बढ़ने लगे फिन्दा की ओर। और उसकी जुवान कह उठी।

“और अब फिन्दा! भेड़ीखाल की इज्जत का बदला तुम्हारी इज्जत को लूट कर लूँगा...वहाँ की जनता का अपमान तुम्हारे अपमान से हटाऊँगा।”

उसके कदम धीरे धीरे बढ़ते जा रहे थे और फिन्दा डरके मारे पीछे हटती जा रही थी। फिन्दा का डुपट्टा गुरट्ट के हाथ में था।

“अब तुम जवान हो...यौवन के भूले में भूल रही हो। अब तुम मेरी आग को भी बुझा सकती हो...मेरे दबे हुये अरमानों को भी उभाड़ सकती हो।

“भइया—!”

“आज मैं तुम्हें अपने में समा कर रहूँगा अपनी इन भुजाओं में जकड़कर रहूँगा”—सीने से सीना मिलाकर अपने दिलकी सुलगती आग को बुझाऊँगा और।...!”

और वह झपट पड़ा फिन्दा पर ।

छुटपटा कर वह रह गई ।

“तुम तो भाई थे न भइया ! क्या यही भाई का फर्ज है कि वह अपने ही घरकी इज्जत को लूटे—? अपने ही हाथों से अपने चिरागों को बुझाये—?”

“अब भी तुम नहीं समझी फिन्दा !

“मैं सब कुछ समझ गई हूँ ! तुम भाई थे नहीं, लेकिन भाई हो गये हो” और होने के नाते तुम्हें ऐसा नहीं होना चाहिये । अगर तुम मेरी इज्जत को लूटना चाहते हो तो लूट सकते हो” अगर इस घर में आग लगाना चाहते हो तो बड़ी खुशी से लगा सकते हो—तुम्हें कोई नहीं रोकेगा—तुम अपने बाप का बदला मेरे खून से भी ले सकते हो । लेकिन फिर भी मैं यही समझूँगी कि यह सब मेरे भाई ने ही किया । मेरे ही खून ने मुझे गढ़े में ढकेला । क्योंकि मैंने तुम्हें भाई माना था और अब तक तुम्हें बड़े भाई की तरह ही पूजती रहूँगी—!”

“मैं अच्छी तरह तुम लोगों को जानता हूँ फिन्दा ! तुम लोगों की हँसी से भी जहर ही टपकता है ।”

“यह सब कुछ तुम कह सकते हो भइया ! दुनिया भी यही समझती है । लेकिन वह उसके अन्दर में पहुँच कर नहीं देख सकती । अगर तुम मेरे असली भाई नहीं तो क्या धर्म का भाई नहीं होता ? दिल में एक बार जो तस्वीर जम जाती है भइया ! वह जीवन के अन्तिम साँस तक भी नहीं निकल सकती ।”

गुरद के पाँव एक के बाद एक बढ़ते रहे । मगर फिन्दा चुप चाप दिवार के सहारे खड़ी रही । वह भागी नहीं” डरी नहीं बल्कि चुप चाप खड़ी रही ।

जा रुका उसके पास

आँखों से वासना के अंगारे निकल रहे थे—हवश की भूख तड़प रही थी ।

हाथ बढ़ा—

और बढ़ा

और दूसरे ही क्षण...

चरचरा कर किन्दा का जम्फर दो भागों में विभाजित हो गया—

अर्थ नग्न हो उठी वह

“भइया !”

उसके मुँह से यही निकल पाया और वह फूट पड़ी वच्चों की तरह ।

उसके शरीर का काफी भाग बाहर भाँक रहा था कपड़े फट चुके थे । लेकिन फिर भी वह खड़ी थी । आँखें बन्द किये सिसक रही थी मगर उसने चीख न मारी ।

एक दिन वह था जब कि उसे मालूम था कि यही उसका असली भाई है और रात को नशे की हालत में जब वह उसकी ओर लपका तो उसने सरसराता थप्पड़ जमा दिया—

और आज जब उसे यह भी मालूम हो गया कि वह उसका भाई नहीं है केवल उसकी इज्जत को लूटने के लिये ही भाई बना है तो वह चुप थी—खामोश देख रही थी उसकी नीचता को किन्तु फिर भी उसने रोका नहीं । वह नीच व्यक्ति को बुद्धि के द्वारा रास्ते पर लाना चाहती थी मार से नहीं ।

लेकिन वह दानव हवश का भूखा क्यों समझने लगा । लाल लाल आँखों से घूरता हुआ वह उसके ऊपर झपटा—

मगर.....

शरीर का स्पर्श होते ही उसके शरीर में बिजली सी दौड़ गई ।

हाथ ढीले हो गये ।

कदम पीछे हट गये

और वह चीख उठा।

“फिन्दा ! ढाँक लो अपने इस शरीर को फिन्दा ! आज तुमने मुझे मनुष्य बना दिया !”

“भइया ” उसने गीली आँखों से उसकी ओर देखा

“मैं भाई था नहीं किन्तु अब हो गया फिन्दा ! आज तुमने मेरी आँखें खोल दी वरन् आज इस घर की ‘‘ इस इलाके की इज्जत मिट्टी में मिल गई होती”

“भइया !”

“फिन्दा !”

फिन्दा जा लिपटी गुरट्ट से।

दोनों फूट पड़े बच्चों की तरह।

आज से मैं वायदा करता हूँ फिन्दा ! कि तुम्हें मैं अपनी छोटी बहन की ही तरह रखूँगा—जिसने दानव को मानव बना दिया—हैवान को इन्सान बना दिया।”

गुरट्ट के पाँव बाहर की ओर बढ़ चले।

“कहाँ जा रहे हो भइया—?” वह चौंक पड़ी

“अपने किये की सजा भोगने बहन !”

“तुम्हें मेरी कसम है भइया ‘‘ अपने बहन की कसम है। मत जाओ।”

उसके कदम रुक गये।

वापस आये और भोंपड़ी के पास रुक गये।

“अन्दर आ जाओ भइया। देखो कितनी सदी पड़ रही है”

“इन सदी से अपने में लगी आग को टंडा करके उसें हमेशा के लिये निस्तोनाबूद कर दूँगा फिन्दा। ताकि फिर वह आग सुलगकर किसी के घरको राख में न मिलाये। अपने अरमानोंके लिये किसीकी आबरू ‘‘ किसी

की इज्जत को न लूटूँ।—दुनिया ने मुझे नीचता को अपनाने के लिये उभाड़ा मगर तुमने उस नीचता को पवित्रता का रूप दे दिया—समाज ने मुझे आग लगाना सिखाया, लेकिन तुमने लगी हुई आग को बुझाना सिखाया—तुम्हारा अहसान मेरे सिर से आजीवन नहीं उतर सकता फिन्दा !—अब मैं इस दुनिया और इस समाज को दिखा दूँगा कि जो भाई न होते हुये भी उसे भाई बनना पड़ता है और उसके बाद वह ऐसा काम करता है जो उसका असली भाई भी नहीं कर सकता ।”

फिन्दा भोंपड़ी में बैठी सिसकती रही और गुरदू बाहर बैठा जाने तक बड़बड़ाता रहा ।

रात ढलती जा रही थी

तारों की रोशनी मधिम होती जा रही थी

और दोनों बहन भाई सो रहे थे दिवार के सहारे सिर लगाये ।

—: ० :—

और उसके बाद—

दानव से मानव हो गया ।

खँडहर इमारत का रूप लेने लगा । एक शानदार इमारत ।

नीच खोखली होते हुए भी एक नयी इमारत खड़ी थी उस पर ।

बापू का सारा काम गुरदू ने अपने हाथ में ले लिया । वह गुरदू जो एक दिन शराब पर ही जीवन रहता था अब उसे छूना भी पाप समझने लगा । लाल लाल शराब उसे रक्तकी भाँति दीख पड़ती थी ।—चोरी को वह सब से बड़ा गुनाह और पाप समझने लगा था । अब उसे मालूम हो गया था कि अपने हाथ से ही कमा कर खाना मानवता कहलाती है । दूसरे के खून से अपना पेट भरना दानवता का नंगा चित्रण करना है ।

और इसीलिये अब वह सुबह से ही खेतों पर चला जाता और शाम की अन्तिम किरणों के साथ घर आता ।

दोनों खुश थे। आवाद थे। अपने अधूरे जीवन को पूरा करने के स्वप्न देखते थे।

कभी कभी वह मजाक में कह भी देता

“फिन्दा ! तेरी मैं शादी इतनी धूम धाम से करूँगा कि इलाके वाले चकित हो जायेंगे कि जिस भोपड़ी में एक दाना खाने तक को न था उसमें से सोने और चाँदी से भरे थाल निकल रहे हैं।—और जानती हो तुम्हारी शादी किसके साथ होगी—? एक नवयुवक के साथ जिसको देखते ही यहाँ का प्रत्येक युवक भोंप जाये। जिसकी खुबसूरती के सामने सूरज भी झुक जाये। और.....!”

और फिन्दा शर्माते हुए कहती।

“छोड़ो इन सब बातों को भइया ! कोई नई बात सुनाओ”

“नई बात क्या सुनाऊँ ! सोचता हूँ तुम्हारे जाने के बाद मैं किस तरह इस भोंपड़ी में रह सकूँगा—यहाँ की प्रत्येक वस्तु निरस हो जायेगी—यहाँ के व्यक्ति मुझे काटने को दौड़ेगें—क्या फिन्दा ! शादी के बाद मुझे भूल जाओगी—?”

“भइया ! ऐसा न कहो भइया ! अब आप के सिवाये और मेरा कौन है ही—?”

“उस समय तो तुम अपने नये घर में जाओगी। फिर भला इस टूटी भोंपड़ी को क्यों याद करने लगी ?”

“नहीं भइया। मरने के बाद भी जन्म स्थान याद रहता है। और फिर मनुष्य के जीवन में बहुत सी घटनायें ऐसी आ जाती हैं कि भूलना चाहते हुये भी नहीं भूलाया जा सकता।”

इसी प्रकार दोनों के दिन बीते जा रहे थे।

मगर इलाके में यह बात धीरे धीरे फैल चुकी थी कि गुरद्व फिन्दा का भाई है नहीं बल्कि घोखे से भाई बना हुआ है। और साथ ही यह भी बात-

प्रत्येक मनुष्य को मालूम हो गई थी कि गुरदू कई बार फिन्दा की इज्जत को लूटने के लिये अड़ भी गया था ।

बापू के मरने के बाद इलाके का सरदार एक दूसरा व्यक्ति बना दिया गया था और वही सरपंच भी था ।

इलाके वाले यह कभी नहीं सह सकते थे कि कोई अजनबी व्यक्ति धोखा देकर उनके इलाके की इज्जत को लूट कर ले जाये । और जब उन्हें यह मालूम हुआ तो वे गुरदू को वहाँ से निकालने के लिये तैयार हो गये ।

सब यह तो जानते थे कि गुरदू फिन्दा का असली भाई नहीं है किन्तु किसी को यह नहीं पता था कि वह है कौन ? कहाँ से आया है—? और क्यों आया है ?

किम्पी ने यह भी सोचने की कोशिश नहीं की कि आज का गुरदू वह गुरदू न रहा जो एक दिन हजारों रुपये लूटा करता था...जो जूयेके अड्डेमें बैठ कर बोतलो पर बोतलें खाली किया करता था...जिसका खंजर किसी रात सूखा नहीं होता था । बल्कि आज का गुरदू इन्सान था...मानव था...प्यार का पुजारी और मानवता का प्रेमी था ।

लोग तो उसे अब भी वही चोर और डाकू ही समझते थे । वे तो यही समझते थे कि जब वह फिन्दा का कोई नहीं । तो हो सकता है कि किसी समय भी वह उसकी जवानी से खेल कर उसके माथे पर कलंक का टीका लगा दे ।

किन्तु फिर भी किसी को उसके सामने आने का साहस न होता था ! कौन जाता अपनी जान गंवाने के लिये ।

अन्त में इलाके वालों ने यह तै किया कि फिन्दा की शादी करवा दी जाये ।

और एक दिन—

इलाके का सरदार फिन्दा के घर आया। गुरद्व बैठा खाना खा रहा था और पास ही बैठी थी फिन्दा।

सरदार को देखते ही गुरद्व उठ खड़ा हुआ।

“आइये सरदार ! आज कैसे राह भूल गये ?”

“यूँही ! सोचा यहाँ का हाल भी देखता आऊँ ! कैसे बीत रही है ?” सरदार ने चारपाई पर बैठते हुये कहा।

“बस ! आप लोगों की दया से किसी तरह गाड़ी चलती ही जा रही है।”

वह गुरद्व जो किसी को कुछ नहीं समझता था आज सरदार को देखते ही खाना छोड़ कर उठ खड़ा हुआ था। कितना बदल चुका था वह।

मानव भी बहुत बदल जाता है उसकी मनोवृत्ति... उसकी भावना, पल पल में बदलती रहती है। आज अगर वह भयानक खूनी है तो कल महान् महोत्सा भी हो सकता है।

सरदार को कुछ आश्चर्य तो हुआ लेकिन वह आश्चर्य और भी शक के रूप में बदल गया।

“फिन्दा का क्या हाल है—?” सरदार ने बात को जागी रखते हुये कहा।

“ठीक ही है सरदार ! लेकिन संचिता हूँ कि...!”

“कि क्या—?”

“कि इसका भी कहीं ठिकाना कर देता। बापू के बाद मैं ही हूँ अगर कल को मैं भी मर गया तो बेचारी...!”

“क्यों नहीं—? और मैं भी यही कहने आया था कि जहाँ तक हो सके इसकी शादी जल्दी ही कर दो। ताकि तुम्हारे ऊपर से भी बोझ हल्का हो जाये और...!”

“सरदार !” तिलमिला उठा गुरद्व बोझ का नाम सुनकर। उसे ऐसा

लगा जैसे फिन्दा के जाने के बाद उसके सिर का बोझ हल्का नहीं बल्कि और भी भारी हो जायेगा। उसे लगा जैसे सरदार उसके सिर पर पहले से भी अधिक बोझ लाद रहे हैं।

“अगर कहो तो कोई लड़का देखूँ!” सरदार ने गुरटू के चेहरे की ओर देखते हुये कहा—! “क्योंकि इलाके के सरदार का यह कर्तव्य होता है कि वह अपनी जनता का पूरा ध्यान रखे। उसके सुख दुख में हाथ बटाये।

“आप ही का तो आसरा है सरदार! बापू की जगह तो आप ने ली है तो बापू का कर्तव्य भी तो आप को ही करने पड़ेगा!” गुरटू ने मुस्कुराते हुये कहा।

“अच्छा मैं चलता हूँ और कल लड़के को लेकर आऊँगा—!”

सरदार चला गया।

गुरटू फिन्दा की ओर देख कर मुस्कुरा पड़ा और फिन्दा शर्म से झुक गई।

×

×

×

और दूसरे दिन सरदार के साथ एक व्यक्ति आया। दो चार व्यक्ति के साथ।

गुरटू ने जहाँ तक हो सका उनकी खातिरदारी की। इसके पश्चात सरदार ने बात को छोड़ते हुये कहा।

“फिन्दा कहाँ गई है गुरटू!”

“अपनी एक सहेली के घर गई है, शायद आती ही होगी!”

“यही है! जिनके बारे में कह रहा था।” सरदार ने बगल में बैठे एक व्यक्ति की ओर इशारा करते हुये कहा।

और साथ ही जैसे गुरटू पर पहाड़ गिर पड़ा हो।

अधेड़ उमर का व्यक्ति जिसकी आँखों की रोशनी भी अपनी

साँस तोड़ती जा रही थी। सिरके बाल खिचड़ी हो चुके थे और गालों पर झुर्रियों के निशान उभड़ने लगे थे।

“.....!”

वह एक टक देखता रहा।

“क्या सोच रहे हो गुरदू—?”

“सोच रहा हूँ सरदार ! कि सरपंच न्याय का देवता होता है अथवा अन्याय का ?

“क्या मतलब !”

“मतलब यह कि आप इलाके के सरदार हैं। आपका कर्तव्य अपनी जनता को खुश रखना है या उसे दुख की खाड़ी में गिराना है ! मैंने तो समझा था कि आपने अगर बापू का स्थान लिया है तो उनका कर्तव्य भी निभायेंगे, लेकिन विचार गलत निकला।

क्या यही न्याय है सरदार, कि आप उस लड़की की शादी एक ऐसे व्यक्ति से करा दीजिये जो उमर में उसका बाप लगता है।—फिन्दा मेरे सिर पर बोझ नहीं है सरदार ! अगर वह जीवन भर मेरे पास रहे तो भी मैं उसे खिला सकता हूँ—! अगर बापू नहीं हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं उसे कूये में फेंक दूँ...! उसकी शादी उस व्यक्ति से कर दूँ जिसकी जीवन ज्योति किसी क्षण भी बुझ सकती है।” मैं यह न्याय कभी नहीं होने दूँगा सरदार ! आप मेरी गरदन काट सकते हैं लेकिन मेरी भावनाओं को नहीं काट सकते।—आप नहीं समझ सकते कि मैं फिन्दा को किस तरह से रखता हूँ—और अब उसे ऐसे गढ़े में ढकेल दूँ जिसमें वह जीवन भर तड़पती ही रहे।—यह जीवन भर का सवाल होता है सरदार ? मैं नहीं चाहता कि मेरी बहन ऐसे पेड़ की छाया में बैठे जो फल दिये बिना ही मुरझा जाये।”

सरदार ने उठकर गुरदू को बाहर बुलाया।

“अगर तुम्हे यह नहीं पसंद तो कल दूसरा लड़का दिखा दूँगा। क्यों इतना घबड़ाये जा रहे हो। मैं भी जानता हूँ कि इसमें उसकी खिन्दगी का सवाल है।

“.....!”

“क्या सोच रहे हो—?”

“आप खुद समझ सकते हैं।” गुरटू ने ऐसे देखा जैसे उसकी दो आँखें कह रही हों कि उसे न्याय चाहिये अन्याय नहीं—वह फिन्दा को जमीन से उठाकर आकाश में पहुँचाना चाहता है, जमीन से ढकेल कर खाई में नहीं गिराना चाहता।

और जैसे सरदार उन दो आँखों का सवाल समझ गया हो।

सब लोग चले गये। और गुरटू अन्दर आकर चारपाई पर लेट गया। उसकी दृष्टि छत पर गयी थीं जैसे वह अपना भविष्य देख रहा हो... फिन्दा का भविष्य देख रहा हो और न जाने क्या देखते ही देखते उसे नींद आ गई।

इधर ज्यों ही सरदार उसकी भोंपड़ी से थोड़ी दूर गया कि उसकी निगाह आती हुई फिन्दा पर पड़ी। उसने बगल वाले व्यक्ति के कान में धीरे से कुछ कहा और वह ध्यान से ललचाई हुई नजरों से उसकी ओर देखता ही रहा।

फिन्दा फुदकती हुई आई और उनके पास से आगे निकल गई। सब हाथ मलकर रह गये।

घर आकर सरदार ने उससे पूछा—!

“कहो क्या विचार है—? लड़की तुमने देख ही ली है।”

“सरदार। मैं आपका जीवन भर अहसान नहीं भूल सकता अगर आप.....!”

“मैं तो तैय्यार हूँ लेकिन गुरटू जो नहीं मानता । आपने तो सुनही ली उसकी बातें ।”

“चाहे जिस प्रकार हो सरदार ! आपको यह काम करना ही होगा । आप यहाँ के परवरदिगार है आप जो चाहेंगे वह होके ही रहेगा ।”

“मेरी तो कुछ सम्झ मैं नहीं आ रहा है कि क्या तरकीब निकालू—!”

“जितना रुपया लगेगा मैं लगादूँगा सरदार ! लेकिन फिन्दा का दामन मेरे दामन में बंध जाना चाहिये ।”

“मगर सवाल जो नवयुवक का है ।”

“अगर आप चाहें तो यह भी हो सकता है ।”

सरदार थोड़ी देर सोचता रहा । और फिर एकाएक उछल पड़ा—!”
वो मारा ! एक तरकीब निकाल ली । और अब फिन्दा तुम्हारे घर की बहू बनेगी ।”

“क्या तरकीब सरकार—?”

“इसके लिये कुछ खर्चा करना पड़ेगा ।” सरदार ने धीरे से कहा ।

“जितना भी लगेगा मैं दूँगा !”

“ज्यादा तो नहीं, केवल पाँच हजार सिकों की कुर्बानी करनी होगी ।

“मुझे मंजूर है सरदार !”

“तो फिन्दा तुम्हारी ही सम्झों !”

“वह तरकीब कौनसी है—?”

“सुनों ! कोई अच्छा सा नौजवान साथ ले जाऊँगा । गुरटू को वह पसंद आही जायेगा—और फिर बारात में तो तुम ही दूल्हा बनकर चलोगे । फूलों के अन्दर क्या मालूम कौन बैठा है ।”

“वाह सरदार ! मानना पड़ेगा कि आप भी सरदारों में एक सरदार हैं ।—और यह लीजिये अपनी तरकीब निकलवाई फीस !”

व्यक्ति ने पाँच हजार उसके सामने रख दिये और उसने उस भारी पाप की गठरी को उठा लिया अपने सिर पर ।

और दूसरे ही दिन सरदार एक खूबसूरत यूवक को साथ लेकर गुरटू के पास गया । आँखों ही आँखों में बातें हो गईं और शादी की बात पक्की हो गई ।

गुरटू को क्या मालूम था कि इस शादी के रास्ते को रूपयो से ढाँका जा रहा है जिसके नीचे भयानक खाई है । वह तो समझ रहा था कि फिन्दा अब सुखी से अपने नये घर में रहेगी ।

और जब उसने फिन्दा को यह खबर सुनाई कि—” फिन्दा ! आज तुम्हें बहुत खुश होना चाहिये ।

“क्यों—?” उसने आश्चर्य से पूछा ।

“अब तुम जल्दी ही इस पुराने घरको छोड़ कर एक नये घर में चली जाओगी जहाँ एक छोटी सी दुनियाँ की नींव पड़ेगी ।”

“यह क्या कह रहे हैं आप—?”

“मैं ठीक कह रहा हूँ फिन्दा ! आज सरदार ने तुम्हारे लिये एक लड़का खोजा है । मैंने भी उसे देखा है । बहुत खूबसूरत जैसा कि मैं चाहता था—और मैंने शादी की बातचीत पक्की कर ली है ।...!”

“भइया—!” चीख उठी फिन्दा पीड़ा से !

“तुम्हें तो खुश होना चाहिये—!”

“यह आपने क्या किया भइया !”

“मैंने तुम्हारी भलाई के लिये ही तो किया है ।”

“नहीं भइया ! भगवान के लिये यह शादी रोक दीजिये भइया ! इसमें किसी की जिन्दगी और मौत का सवाल है भइया ! इस सवाल को इन

दोनों के बीच न लटकाइये वरन् दोनों ही तबाह व बरबाद हो जायेंगे !”

“जुवान हार चुका हूँ फिन्दा ! अब तो यह जुवान ही रहेगी या यह जान ही ।

“भइया !” सिसक उठी फिन्दा ।

वह जानती थी कि पहाड़ी जिसको एक बार जुवान कह देते हैं उसे अपनी जान की बाजी लगा कर पूरा करते हैं । और इस बाजी में चाहे वे स्वयं भी बरबाद क्यों न हो जायें ।

गुरदू बाहर चला गया ।

और फिन्दा सिसकती रही अपनी तकदीर पर

“यह क्यों नहीं हो सकता । फिन्दा मेरी है और मेरी ही रहेगी—इस की शादी कभी किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं हो सकती ।”

वह पागलों की तरह दौड़ता हुआ अरूप के घर गया ।

अरूप दरवाजा बन्द किये सो रहा था ।

सायलस ने पहुँचते ही दरवाजा पीटना शुरू किया । हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ अरूप ।

“कौन है ?”

“खोलो अरूप !”

“कौन ? सायलस—?” उसने दरवाजा खोलते हुये कहा—! इस दोपहर में तुम कैसे—?”

“गजब हो गया अरूप !”

“क्या बात हुई ?”

“जो न होना चाहिये—! यह देखो !” उसने लिफाफा देते हुये कहा—!” अब क्या होगा अरूप !”

अरूप ने लिफाफा खोला ।

लिखा था—!

राही—!

तुम तो चले गये लेकिन मेरी जिन्दगी को भी लेते गये । जल्दी आने का वायदा किया था किन्तु देरी मे भी नहीं आये । तुमको राही नहीं तो और क्या कह सकती हूँ, जो राह को छोड़ता हुआ आगे बढ़ता जाता है और मंजिल पर पहुँचने के बाद जो पीछे मूड़ कर भी नहीं देखता कि वह किस किस राह को पीछे छोड़ आया है ।—तुम वहाँ सुखी होगे... मगर मैं जिन्दगी और मौत के बीच वे जान सी होकर लटक रही हूँ—मैं तुम्हे क्यों बेवफा भी नहीं कह सकती क्योंकि तुमने मेरे साथ कोई बेवफाई नहीं की । उस समय तुम मजबूर थे और अब—? अब मैं मजबूर हूँ... लाचार हूँ — एक पंखी की भाँति इस समाज के हाथों कैद हूँ—जिसके हाथों मे थोड़े ही दिनों बाद हथकड़ियाँ पहना कर आजीवन कैदकी सजा देदी जायेगी । अगर तुम आ सको तो आ जाओ क्योंकि समय चला जाता है तो वापस नहीं आता । अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे रास्ते मे काँटे न बोंये जायें तो तुम्हारा यह कर्तव्य है कि उस राह की निगरानी करो । उसकी देख भाल करो ।—भइया ने मेरी शादी ठीक कर दी है । मेरे तड़पने से भी कोई लाभ नहीं हो सकता । अगर मैं जबरदस्ती किसी के पल्ले से बाँध भी दी गई तो विश्वास धरो मेरे राही ! कि उसको गोद में जाने से पहले मौत की गोद में चली जाऊँगी—औरत प्यार केवल एक से करती है और उसी को मरते दम तक अपने सीने में छुपाये रखती है ।

आप की ही...!

“फिन्दा ।”

अरूप ने लिफाफा सायलस के हाथ में दे दिया—

“अब क्या होगा अरूप ?”

“जो होना चाहिये—!”

“यह कभी नहीं हो सकता अरूप ! यह कभी नहीं हो सकता । फिन्दा मेरी है और मेरी ही रहेगी । उसे दुनियाँ की कोई भी शक्ति मुझसे नहीं छीन सकती ।”

“सायलस !”

“मैं इसी समय जा रहा हूँ अरूप ! अगर जिन्दगी के राह पर फिर आया तो फिन्दा को लेकर आऊँगा और अगर मौत के पास गया तो फिन्दा को भी साथ ही लेकर जाऊँगा ।

“मत जाओ सायलस !”

“यह तुम कह रहे हो अरूप ! कि मत जाओ जिनसे कभी बेवफाई का नाम तक नहीं लिया ।—तुम ही बताओ दोस्त ! कि घर जल रहा हो और मैं चुपचाप खड़ा रहूँ, यह कैसे हो सकता है—मेरी मोहब्बत का खून मेरी आँखों के सामने हो और मैं खामोश रहूँ—? यह कभी नहीं हो सकता—मैं घर को जलाने से पहले ही उस कागज को जलाने वाले को ही जला डालूँगा—मोहब्बत का खून होने से पहले ही उसका गला घोट दूँगा—अगर मैं जिन्दगी के किये मोहताज को टुकरा सकता हूँ अरूप ! तो क्या मैं मोहब्बत के लिये जिन्दगी को नहीं टुकरा सकता—आज मैं इस समाज को दिखा दूँगा कि चाहे वह क्यों न हमारे ग्रीच दीवार बन कर आये लेकिन फिर भी हम उसे चूर चूर कर देंगे—आज दुनियाँ को मालूम हो जायेगा कि अगर औरत जीवन में एक से प्यार करती है तो वह उस प्यार को पाने के लिये अपने आप को भी समान कर देती है ।”

“पागल न बनो सायलस !”

“मैं पागल नहीं बनूँगा मेरे दोस्त ! मुझे मंजिल तक पहुँचना है और राह बहुत लम्बी है । मुझे जाने दो ।

“सायलस !”

लेकिन सायलस तेजी से बाहर निकल चुका था ।

अरूप देखता ही रहा ।

उससे पूछ भी न सका कि इस दोपहर में वह कहाँ जायेगा—! किसके यहाँ जायेगा ।

अभी वह समझाना ही चाहता था कि मुँह खुलने से पहले ही वह चला गया !

पिंजड़े को खोलने से पहले ही पंछी छुटपटा कर ठंडा हो गया ।

“अभी तक आये नहीं वह !”

“अरे अब क्यों वह आने लगा !”

“नहीं आये ! ऐसा न कहें । वह जरूर आयेंगे । उन्होंने वायदा किया था कि तुम्हारा पत्र आते ही मैं आ जाऊँगा ।”

“तू भी कितनी भोली है फिन्दा ! कभी शहरी लोग भी अपने वायदे के पक्के निकलते हैं—?”

“लेकिन वे उन शहरियों में से नहीं है आयी !—वे केवल प्यार करना जानते थे... प्यार का नाजायज लाभ उठाना नहीं । यहाँ तक कि आज तक उन्होंने मेरे शरीर को छुआ तक नहीं । तो फिर बताओ यही प्यार की पूजा नहीं तो और क्या है—?”

“अगर उन्हें आना होता तो वे आ गये होते !”

“चिन्ती तो पहुँच ही गई होगी ।”

“कैसे मालूम—?”

“जो पता उन्होंने बताया था उसके तो अनुसार ही लिखा था ।”

फिन्दा रह कर पहाड़ी के उस पार दूर बहुत दूर तक देखती किन्तु कहीं

भी उसे उस दीये की किरण दिखाई न पड़ती जिसकी उसे आशा थी कि दूसरे दीये के बुझने के पहले ही वह दोया जगमगा उठेगा ।

“अगर वह न आया..”

“आयी !” तड़प उठी फिन्दा—! “स्वप्न में भी न सोचना आयी ! उन्होंने खुद ही कहा था कि अगर वे उसे जिन्दगी की गोद में न पा सके तो मौत की गोद में जरूर पा लेंगे—और अब जिन्दगी की गोद जल चुकी है । जिन्दगी की चिता बन चुकी है और मौत का जन्म हो रहा है । उसकी गोद बन रही है—

और—

अब मौत की गोद में ही बैठने की राह देख रही हूँ ।

×

×

×

और दो दिन बाद ही—!

बज उठी शहनाइयाँ फिन्दा के दरवाजे पर ।

गूँज उठी बाजों की धम..धम

पहाड़ी इलाके की पत्थरीली जमीन भी काँप उठी ।

वहाँ के विशाल चीड़ के पेड़ तक सिहर उठे ।

फिन्दा दुलहन बनाई गई ।

इलाके की लड़कियाँ इकट्ठी होती..उसको सताती और फिर हँसती हुई चली जाती ।

केवल दो युवतियाँ ऐसी थीं जिनकी आँखों में खुशी न थी बल्कि आँसू थे..जिनके होठों पर तराने न थे बल्कि आहें, सिसकियाँ भर रही थीं ।

एक थी फिन्दा !

और दूसरी थी आयी ।

एक और फिन्दा सिसक रही थी

और दूसरी ओर सायलस तड़प रहा था ।

फिन्दा के लिये एक एक घंटा मिनटों की तरह बीता जा रहा था और सायलस के लिये एक एक मिनट घंटों की तरह मालूम पड़ रहे थे ।

यह भोंपड़ी में घैठी जल रही थी और वह गाड़ी के डिब्बे में बैठा सुलग रहा था । उसे आज गाड़ी भी बिमार औरत की तरह चलती मालूम पड़ रही थी ।

गोकि गाड़ी अपनी पुरानी ही गति से भागी चली जा रही थी लेकिन उसे फिर भी चैन नहीं पड़ रहा था । उसका दिल चाहा कि वह भाग कर वहाँ पहुँच जाये जहाँ उसकी मोहब्बत की नींव बनी थी और जिस पर हमारत बनाने से पहले ही उसे खंडहर में बदला जा रहा था ।

गाड़ी शहरी इलाके को छोड़ कर पहाड़ी इलाके में चली जा रही थी । वह बैठा बेचैनी से बहुत दूर उस इलाके को देखने का प्रयास कर रहा था जिसकी उसे जरूरत थी ।

गाड़ी चलती जा रही थी ।

इधर बाजे बज रहे थे ।

शहनाइयाँ बज रही थीं

पूरा इलाका खुशी मना रहा था कि वहाँ के पुराने सरदार की लड़की की शादी हो रही है ।

गुरद्व खुशी से भ्रूम रहा था कि उसने भाई का कर्तव्य पूरा किया ।

फिन्दा के हाथों में मेहदी लगी ।

गहनों से सजाई गई ।

मगर उसकी आँखों के आँसूओं को न सुखाया जा सका

और फिर—

बारात आई ।

दुलहा उतरा

दुलहा और दुलहन आग के सामने बैठे ।
चारों ओर तरह तरह की महकें उठ रही थी । चन्दन की लकड़
जलाई जा रही थी ।

सरदार आया—

लड़की का हाथ लड़के के हाथ पर रखा—

और फिर—

शादी हो गई ।

दोनों के पल्लू बान्धे गये ।

आग के सामने कसमे खाई गई । मण्डप के फेरे हुये और फिर फिन्दा
के हाथों में हथकड़ियाँ पहना दी गई !

दुलहा दुलहन को ले जाने लगा ।

दरवाजे पर डोली खड़ी थी ।

फिन्दा को बैठा दिया गया उसी में

बैठने से पहले एक बार उसने गुरदू की ओर देखा और जा लिपटी
उस से ।

“भइया !”

“फिन्दा ।”

दोनों सिसक उठे ।

रो उठे इलाके के लोग ।

फिन्दा बैठ गई डोली में ।

गुरदू दुलहे की ओर बढ़ा । गहें उठी और दोनों गले मिले—

लेकिन दूसरे ही क्षण—

चौक पड़ा गुरदू ।

जैसे उसके पेट में किसी ने भयानक खंजर भोक दिया हो—

वह दुलहा, नहीं था । बल्कि दुलहे की शक्ल में वही बूढ़ा था

जिसको उस दिन गुरद्व ने गालियाँ देकर घर से बाहर निकाला था ।

वह दुलहा पति के समान नहीं था बल्कि पिता के समान था ।

गुरद्व के मुँह से केवल यही निकल पाया—! “सरदार !”

उसका अंग अंग जलउठा क्रोध की ज्वाला में । एक बार पुनः वह इन्सान से हैवान बनने लगा—मानव से दानव का रूप धारण करने लगा ।

उसने फिन्दा को कुछ न बताया और वह बताना भी नहीं चाहता था क्योंकि अब उसकी शादी हो चुकी थी ! आग के समान दोनों एक दूसरे के जीवन साथी बन चुके थे ।

गुरद्व ने डोली को विदा किया और स्वयं भोपड़ी में आया ।

संजूक में से वही खूनी खंजर निकाला और पागलों की तरह दौड़ पड़ा सरदार के मकान की ओर ।

उसके मुँह से यही निकल रहा था !

“तुमने मेरी जिन्दगी तबाह की है, मैं तुम्हारी जिन्दगी को निस्तोनाबूद कर दूँगा ।”

भोपड़ी से निकला हुआ गुरद्व फिर कभी भोपड़ी में नहीं आया ।

थोड़ी देर बाद ही इलाके में यह शोर मच गया कि—

“गुरद्व ने सरदार का खून कर दिया—गुरद्व ने आत्म हत्या कर ली ।

बहन का बदला भाई ने लिया और बहन की खुशी के लिये अपने आप को समाप्त कर दिया ।

गाड़ी से उतरते ही वह बस की ओर दौड़ा । लेकिन उसे पता चला

कि बस अभी दो घंटे बाद जायेगी ।

“दो घंटे में तो न जाने किसी की ज़िन्दगी मौत में भी बदल जाये तो फिर पहुँचने से क्या फायदा—?”

और सायलस पैदल ही दौड़ पड़ा पहाड़ी की ओर ।

आठ मील तक वह दौड़ता ही रहा । आज उसके पाँव में इतनी शक्ति आ गई थी कि वह आठ सौ मील भी दौड़ सकता था ।

और अन्त में वह पागल जा पहुँचा उस पहाड़ी के नीचे जिसपर फिन्दा की टूटी भोंपड़ी थी जो अब विरान हो चुकी थी ।

बाजों की गरज उसके मस्तिष्क में हथौड़ों की तरह पड़ रहे थे । उसे लग रहा था जैसे बहुत से पहाड़ एक के बाद एक उसके सिर पर गिर रहे हैं और थोड़ी ही देर में सिर चूर चूर हो कर धड़ से अलग हो जायेगा ।

वह बेतहाशा भागा चला जा रहा था पहाड़ी की ओर ।

तभी रास्ते में उसे एक व्यक्ति मिला जो ऊपर गूजते बाजों की आवाज को सुन रहा था ।

सायलस ने जाते ही उससे पूछा ।

“क्यों जी ! यह बाजे कैसे बज रहे हैं—?”

“आप को नहीं मालूम—?” उसने आश्चर्य से सायलस की ओर देखते हुये कहा ।

“नहीं !”

“इस इलाके के सरदार की लड़की की शादी है ना—! इसी लिये बाजे बज रहे हैं—“उसने हसते हुए कहा—!” वह ऊपर देखिये उसकी डोली उठ रही है ।”

और सायलस को लगा जैसे वह उस पर खिलखिला कर हँस रहा हो—उसके घर का मजाक उड़ा रहा हो और चीख चीख कर कह रहा हो—! कि “देखो ! तुम्हारे फिन्दा को कोई दूसरा लिये जा रहा है और तुम यहाँ खड़े देख रहे हो ।”

और दूसरे हा समय वह तेजी से चढ़ने लगा पहाड़ी पर ।

डाली उठी और बाजों के साथ चल दी टेढ़े मेढ़े पहाड़ी रास्ते पर ।

“फिन्दा !”

चीख उठा सायलस !

लेकिन बाजों के सामने उसकी आवाज को कौन सुनता है ?

वह पागलों की तरह ठोकरें खाता हुआ ऊपर चढ़ता जा रहा था । पाँव से खून की बूँदे चू रही थी । लेकिन उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी । अभी वह पहाड़ी के ऊपर चढ़ ही रहा था कि एकाएक उसका पाँव लुढ़क गया !

“आह !”

एक भयानक चीख टकरा उठी पहाड़ के पथरों पर ।

सायलस लुढ़कता हुआ आ गिरा नीचे ।

माथा फूट चुका था । पूरा शरीर खून से लथपथ हो चुका था ।

एक बार पुनः उठा और फिर वह डोली की ओर भागा । पूरे शरीर से टप-टप खून गिर रहा था लेकिन वह ऊपर चढ़ता जा रहा था ।

आखिर में वह किसी तरह डोली के पास पहुँचा ।

लेकिन—

पहुँचने में पहले ही उसके कदम लड़खड़ाये और वह फिसल पड़ा चट्टानों पर ।

“फिन्दा !”

एक और भयानक चीख निकली उसके मुँह से ।

और साथ ही डोली का परदा उठा ।

फिन्दा ने देखा सायलस लुढ़कता हुआ नीचे चला जा रहा है । मौत की गोद में उसका जीवन साथी आ गया है ।

और—

दूसरे ही क्षण—

वह कूट पड़ी डोली पर से नीचे ।

अरातियों में हलचल मच गई ।

लोग दौड़े उसे पकड़ने के लिये ।

लेकिन—

वह तो लुढ़कती हुई नीचे चली जा रही थी अपने सायलस के पास—

दोनों खून से लथपथ एक दूसरे के साथ लुढ़कते जा रहे थे—

“फिन्दा !”

“सायलस !”

सायलस जा गिरा पहाड़ी के नीचे और साथ ही उसके ऊपर फिन्दा का शरीर आ रहा ।

सायलस में इतनी शक्ति न रह गई कि वह उसे अपने ऊपर से हटा सके और न फिन्दा में ही इतनी ताकत थी कि वह अपने को उससे अलग कर सके। वह अलग होना भी नहीं चाहती थी।

दोनों मौत के किनारे तक पहुँच रहे थे।

दोनों के सिर फूटकर चूर-चूर हो चुके थे। शरीर की लाल और सफेद चर्बी बाहर निकल आई थी।

दोनों जिंदगी की गोद से भागकर मौत की गोद में आ पड़े थे।

“फि · न · दा !” उसकी जुवान लड़खड़ा रही थी।

“सा · य · ल · स · !” वह भी उसके साथ ही चल रही थी।

“ह · म जि · न · द · गी · की · गो · द · में · तो · न · मि · ल · स · के · प · र · मौ · त · की · गो · द · में · !”

सायलस के पंख पखेरू उड़ गये

और साथ ही फिन्दा चली गई।

फिन्दा का सिर सायलस की छाती पर पड़ा था और दोनों के हाथ एक दूसरे को पकड़े हुए थे।

जिन्हें जिन्दगी ने अपनी गोद में न मिलने दिया उन्हें मौत ने अपनी गोद में मिला दिया—

“जिन्दगी से अच्छी तो मौत ही है”

बस

नोट:—प्रारम्भ की कविता की पंक्तियाँ नरेश कुमार “शाद” की ललकार पुस्तक की है।

ओम प्रकाश की अत्र पढ़िये
“फरियादी”

